इजरायल ने ईरान में सरकारी भवनों पर मिसाइलें दागीं, सऊदी अरब की शेबाह रिफाइनरी पर हमले की कोशिश कर रहा ईरान

ताबड़तोड़ मिसाइल-ड्रोन हमलों से दहला तेहरान और मध्य पूर्व

संग्राम

तेहरान, तेल अवीव, दुबई, वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच जारी जंग में मिसाइल और ड्रोन हमले से लोग दहल गए। शनिवार को ईरान ने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), कुवैत, कतर, बहरीन और सऊदी अरब में अमेरिकी और अन्य ठिकानों पर ड्रोन और मिसाइलों जमकर हमला किया। इजरायल ने जवाब में ईरान के कई सरकारी भवनों और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया।

ईरान की नौसेना ने बयान जारी कर कहा कि ईरानी नौसेना ने इजरायल को निशाना बना कई ड्रोन हमले किए। यूएई में अल मिनहाल एयरबेस और कुवैत में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमला किया। ईरान की सैन्य कार्रवाई को लेकर खाड़ी देशों ने कहा कि ईरान लगातार होटलों, बंदरगाहों और रिफाइनरी को निशाना बना रहा। सऊदी अरब ने बताया कि ईरान ने अमेरिका के प्रिंस सुल्तान एयरबेस और शेबाह ऑयल फिल्ड को निशाना बनाकर हमला किया जिसे नाकाम कर दिया गया। हमले को देख दुबई एयरपोर्ट पर वायु रक्षा प्रणाली को सक्रिय कर दिया गया। एयरपोर्ट पर अफरा-तफरी की स्थिति बन गई।

तेहरान के मेहराबाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर शनिवार को इजरायल ने हवाई हमले किए। हमले के बाद हवाई अड्डे से उठता धुआं और आग की लपटें। इजरायल ने तेहरान में बड़े पैमाने पर हमले की बात कही है। ● एएफपी

41 लेबनानी मरे : पूर्वी लेबनान के पहाड़ों पर इजरायल और हिज्जबुला के बीच चल रही जंग घातक हो चली है। इजरायल के मिसाइल हमले में 41 लेबनानी मारे गए, जबकि 40 घायल हैं। लेबनानी स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि हिज्बुल्ला पर इजरायली हमले का शिकार सीमा पर रह रहे स्थानीय लोग हो रहे हैं। अबतक कुल 200 लोग मारे गए हैं जबकि 800 से अधिक घायल हैं।

हमारे खिलाफ जो आएगा कुचला जाएगा : ईरान के रिवॉल्यूशनरी गार्ड ने शनिवार तड़के इराक के कुर्दिस्तान क्षेत्र में सुबह साढ़े चार बजे हमला किया। ईरान ने कहा कि अगर कोई अलगाववादी हमारे खिलाफ अपने क्षेत्र से कोई कार्रवाई करता है तो ईरान उसे कुचल देगा। ईरान ने इराक में भी पैनी नजर रखनी शुरू कर दी है। सूत्रों का कहना है कि ईरान इराक में अपने खुफिया तंत्र के जरिए विरोधियों पर कड़ी कार्रवाई कर सकता है।

अमेरिका ने कहा, आक्रामक हमला बाकी

अमेरिका ने कहा है कि ईरान पर अभी आक्रामक हमला बाकी है। जंग के बीच ट्रंप प्रशासन ने इजरायल को 15.1 करोड़ डॉलर का हथियार बेचने को मंजूरी दी। अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने एक साक्षात्कार में ये बात कही है। उन्होंने कहा कि ईरान पर अभी भीषण बमबारी बाकी है। उन्होंने कहा कि ईरान को निशाना बनाकर लगातार हमले किए जा रहे। अभी कई बड़े हमले बाकी है।

अर्थव्यवस्था बेपटरी होगी

कतर के ऊर्जा मंत्री साद अल काबी ने चेतावनी देते हुए कहा है कि युद्ध के चलते दुनिया की अर्थव्यवस्था बेपटरी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि हालात इसी तरह रहे तो कच्चे तेल की कीमत 150 डॉलर प्रति बैरल हो सकती है। उन्होंने कहा कि दो साल में पहली बार कच्चे तेल की कीमत शुक्रवार को 90 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि तेल की बढ़ती कीमतों का प्रभाव पूरी दुनिया पर दिखेगा।

खामेनेई का उत्तराधिकारी जल्द घोषित किया जाएगा

ईरान के धर्मगुरु अयोतोल्ला नासीर मकारेम शिराजी ने कहा है कि खामेनेई का उत्तराधिकारी जल्द तय होगा। उन्होंने उत्तराधिकारी चुनने वाली एसेंबली ऑफ एक्सपर्ट से अपील की है कि प्रक्रिया में तेजी लाएं, जिससे राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति सामान्य हो सके। इस मसले पर जल्दी फैसला लेना जरूरी है।

15.1 करोड़ डॉलर के हथियार इजरायल को देगा अमेरिका

41 लेबनानी नागरिक इजरायली सेना के हमले में मारे गए

बमबारी का दौर जारी

1. अमेरिकी सेना के सेंट्रल कमांड ने कहा कि उसने ईरान पर अबतक कुल तीन हजार ठिकानों पर हमला किया है। इस कार्रवाई के दौरान छह अमेरिकी सैनिक शहीद हुए हैं।
2. बहरीन की सेना ने ईरान के दो मिसाइल और ड्रोन हमलों को नाकाम किया। अबतक कुल 86 मिसाइल और 148 ड्रोन हमले नाकाम किए।
3. ईरान ने येरूशलम में शनिवार तड़के मिसाइल से हमला किया। अचानक हमले देख लोग बंकरों में शरण लेने के लिए भागने को मजबूर हो गए।
4. हिज्बुल्ला ने उत्तरी इजरायल के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को पूरा इलाका खाली करने की चेतावनी दे दी है। कभी भी कार्रवाई शुरू हो सकती है।
5. सऊदी की रक्षा प्रणाली ने ईरान द्वारा शेबाह रिफाइनरी पर किए गए 16 ड्रोन हमलों को नाकाम किया है।
6. अमेरिकी रक्षा विभाग के दो अधिकारियों का दावा है कि रूस अमेरिकी सेना पर हमले के लिए तेहरान की मदद कर रहा। जंग में अबतक 1332 ईरानी मारे गए हैं।

संघर्ष 30 S

राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में शनिवार को शिया समुदाय की ओर से ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई को श्रद्धांजलि देने के लिए शोकसभा आयोजित की गई। इस दौरान लोगों ने नारेबाजी भी की। ● एपी

कश्मीर में स्थिति सामान्य, प्रतिबंध हटे

श्रीनगर। ईरान पर हमले के विरोध में कश्मीर में प्रदर्शनों के मद्देनजर लगे प्रतिबंध शनिवार को हटा दिए गए। सुरक्षा बलों ने शहर के केंद्र लाल चौक सहित कई स्थानों पर लगाए गए अवरोधक हटा दिए गए हैं। दुकानें खुल गईं, जबकि सार्वजनिक एवं निजी परिवहन सामान्य रूप से चल रहे हैं। मोबाइल इंटरनेट और प्रीपेड सिम कार्ड सेवाएं सुचारु हैं। हालांकि, शैक्षणिक संस्थान नौ मार्च से खुलेंगे।

ईरानी पोत की तस्वीर लेने पर रिपोर्टर गिरफ्तार

कोच्चि। कोच्चि पोर्ट हार्बर के हाई-सिक्योरिटी जोन में घुसकर ईरानी युद्धपोत की फोटो और वीडियो लेने के आरोप में पुलिस ने एक टीवी रिपोर्टर, उसके कैमरामैन और स्पीड बोट चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार तीनों ने उस ईरानी युद्धपोत की तस्वीरें और वीडियो बनाए थे, जिसे भारत सरकार के कूटनीतिक फैसले के तहत लंगर डालने की अनुमति दी गई थी।

जॉर्डन ने ईरानी हमलों को निष्क्रिय किया

अम्मान (जॉर्डन)। जॉर्डन ने शनिवार को आरोप लगाते हुए कहा कि ईरान उसके महत्वपूर्ण ठिकानों को निशाना बना रहा। जॉर्डन की सेना के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल मुस्तफा हयारी ने बताया कि अब तक 108 हमलों को निष्क्रिय किया गया है। ईरान ने मिसाइल और ड्रोन से अहम स्थानों को निशाना बनाकर हमला किया गया लेकिन समय रहते उसे खत्म कर दिया गया।

मध्य पूर्व से 28 हजार अमेरिकी लौटे

वॉशिंगटन। जंग के बीच मध्यपूर्व देशों में फंसे 28 हजार अमेरिकी सुरक्षित लौट गए हैं। अन्य लोगों की सुरक्षित वापसी के लिए अमेरिकी सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। अमेरिका लौटे अधिकतर लोग खुद से लौटे हैं इसमें अमेरिकी सरकार का कोई योगदान नहीं है। अलग-अलग देशों में स्थित अमेरिकी दूतावास अपने नागरिकों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने में जुटा है।

इजरायल ने अपने सैनिक की तलाश तेज की

तेल अवीव। इजरायल ने पूर्वी लेबनान में हमलों के बीच 40 साल पहले लापता हुए अपने एक सैनिक की तलाश तेज कर दी है। इजरायली सेना ने बताया कि 1986 में इजरायल में एक लड़ाकू विमान लेबनान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इसमें सवार सैनिक रॉन अर्द पैराशूट की मदद से निकल गए जिसे लेबनान में एक बंदूकधारी ने पकड़ लिया था लेकिन आज तक उसका पता नहीं चला है

अमेरिकी सेना के निशाने पर ईरानी अधिकारी: ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसी। ईरान से जंग के बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि ईरान के और अधिकारी अमेरिकी सेना के निशाने पर हैं। उन्होंने कहा कि ईरान पर कड़ा प्रहार होगा। शनिवार को सोशल मीडिया साइट ट्रूथ पर पोस्ट में उन्होंने ये बात कही। उन्होंने कहा कि ईरान के खराब व्यवहार के कारण अब कुछ ऐसे क्षेत्र और लोगों के समूह भी नष्ट होने की कगार पर हैं जिन्हें अभी तक निशाना बनाने के बारे में नहीं सोचा गया था। हालांकि ट्रंप ने इस बारे में कोई विस्तृत जानकारी नहीं दी।

हथियारों का उत्पादन चार गुना करेंगे: ट्रंप ने लिखा कि अमेरिकी की बड़ी रक्षा उत्पादन कंपनियों के साथ सार्थक बैठक में हथियारों का उत्पादन बढ़ाने पर फैसला हुआ है। हथियार कंपनी लॉकहीड इसके लिए सहमता है। ट्रंप ने कहा कि हमारे पास मीडियम और अपर-मीडियम ग्रेड म्यूनिशन्स की लगभग अनलिमिटेड सप्लाई है, जिसका इस्तेमाल हम उदाहरण के लिए ईरान में कर रहे हैं, और हाल ही में वेनेजुएला में किया है।

क्यूबा अपने अंतिम पलों में: ट्रंप ने लैटिन अमेरिकी देशों से कहा कि क्यूबा अपने अंतिम दौर में है और इस कम्युनिस्ट शासन वाले देश में बड़ा बदलाव आने वाला है। उन्होंने कहा कि मैं क्यूबा का ध्यान रखूंगा। उन्होंने कहा कि उनके पास पैसा नहीं है, उनके पास तेल नहीं है। उनकी विचारधारा खराब है और उनका शासन भी खराब है, जो लंबे समय से खराब रहा है।

ड्रग कार्टेल के खिलाफ खड़ें हो लैटिन देश

ट्रंप ने लैटिन अमेरिकी देशों से ड्रग कार्टेल के खिलाफ सैन्य शक्ति का इस्तेमाल करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि अमेरिका मिसाइल हमलों के जरिए उनकी मदद को तैयार है। ट्रंप ने शनिवार को फ्लोरिडा में दक्षिणपंथी लैटिन अमेरिकी नेताओं के शिखर सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के दौरान ये बात कही।

पर्याप्त हथियार मौजूद

अमेरिकी सेना ने कहा है कि ईरान के साथ चल रहे युद्ध को लड़ने के लिए सभी जरूरी हथियार पर्याप्त मात्रा में है। अमेरिका थाड वायु रक्षा प्रणाली का प्रयोग ईरान के हमलों को रोकने का काम कर रहा। अमेरिकी रक्षा रणनीति पर काम करने वाले रॉयन ब्रॉब्स्ट ने कहा कि संघर्ष के दौरान हथियार पूरी तरह खत्म होने की खास चिंता नहीं है। असली सवाल यह है कि इस युद्ध के बाद चीन और रूस को कैसे रोका जाएगा।

लेजर गाइडेड बमों का कर रहे इस्तेमाल

अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने बताया कि सेना 500, 1000 और 2000 पाउंड के जीपीएस और लेजर-गाइडेड बम प्रयोग कर रही है।

मध्य पूर्व देशों से सात हजार लोग भारत पहुंचे

घर वापसी

नई दिल्ली, एजेंसी। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच भारत सरकार हालात पर लगातार नजर बनाए हुए है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने बताया कि 5 मार्च को पश्चिम एशिया से भारतीय एयरलाइनों की 40 उड़ानें भारत पहुंचीं, जिनमें 7,205 लोग सवार थे।

मंत्रालय के अनुसार इन उड़ानों के साथ क्षेत्र से भारत आने वाले यात्रियों की कुल संख्या 14,992 हो गई है। आधिकारिक बयान में कहा गया कि नागरिक उड्डयन मंत्रालय एयरलाइनों के साथ लगातार संपर्क में है और किराए पर भी नजर रखी जा रही है, ताकि इस दौरान टिकट कीमतों में अनावश्यक बढ़ोतरी न हो। इससे पहले मंत्रालय ने बताया था कि पश्चिम एशिया की स्थिति के कारण भारतीय एयरलाइनों की 281 उड़ानें रद्द करनी पड़ी थीं।

पैसेंजर असिस्टेंस कंट्रोल रूम सक्रिय: यात्रियों की सहायता के लिए नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने पैसेंजर असिस्टेंस कंट्रोल रूम को 24 घंटे सक्रिय रखा है। इस दौरान एयरसेवा पोर्टल, सोशल मीडिया और हेल्पलाइन के जरिए 1,461 शिकायतों का समाधान किया गया है।

कतर में 'हय्या ए1 वीजा' वालों को आ रही दिक्कत

दोहा। कतर स्थित भारतीय दूतावास ने एक्स पर एक लिंक शेयर करते हुए लिखा है कि जो भारतीय नागरिक अभी कतर से 28 फरवरी से 7 मार्च 2026 के बीच फ्लाइट्स रद्द होने की वजह से टूरिस्ट/शॉर्ट टर्म विजिटर (हय्या ए1 वीजा वाले) के तौर पर कतर में फंसे हुए हैं, वे यहां दिए गए लिंक पर अपनी डिटेल्स भरें। पहले भी एक लिंक साझा की गई थी, लेकिन कई यूजर ने बताया कि लिंक खुल नहीं रहा है। कई ने लिखा था कि न यह फॉर्म खुल रहा है और न डाउनलोड हो रहा है। इन्हीं शिकायतों के मद्देनजर ये नई लिंक सुझाई गई है।

अतिरिक्त हेल्पलाइन शुरू

दोहा। भारतीय दूतावास ने कतर में रह रहे भारतीय नागरिकों की मदद के लिए अतिरिक्त हेल्पलाइन नंबर सक्रिय किए हैं। दूतावास ने एक्स पर पोस्ट कर हेल्पलाइन नंबर +974 55647502, +974 55362508, +974 55384683 साझा किए।

जंग रुकवाने को पाक-सऊदी में चर्चा

इस्लामाबाद, एजेंसी। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच जारी जंग को रोकने के लिए पाकिस्तान और सऊदी अरब ने मंथन शुरू कर दिया है। पाक सेना के प्रमुख असीम मुनीर ने सऊदी अरब के रक्षा मंत्री प्रिंस खालिद बिन सलमान से मुलाकात कर सुरक्षा स्थिति पर चर्चा की।

मालूम हो कि दोनों देशों ने पिछले साल पारस्परिक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किया था। इस समझौते के तहत यदि किसी तीसरे देश द्वारा हमला होता है, तो दोनों देश एक-दूसरे की रक्षा के लिए बाध्य हैं। ऐसे में अब इस समझौते की परीक्षा का दौर शुरू हो गया है। सवाल भी उठने लगे हैं कि यदि ईरान के साथ औपचारिक युद्ध शुरू होता है, तो क्या सऊदी अरब की रक्षा के लिए पाकिस्तान खड़ा होगा।

दुबई में मिसाइल अलर्ट के बावजूद हालात सामान्य

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच दुबई से भारत लौटे यात्रियों ने बताया कि मिसाइल अलर्ट के बावजूद संयुक्त अरब अमीरात में स्थिति नियंत्रण में है। सामान्य जीवन काफी हद तक जारी है। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे एक यात्री ने कहा कि दुबई में समय-समय पर सायरन बजते हैं और लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी जाती है, लेकिन कुल मिलाकर हालात सामान्य हैं। लोगों को सिर्फ आपात स्थिति में ही बाहर निकलने की सलाह दी गई है। एक अन्य यात्री ने बताया कि कई मिसाइलों को रास्ते में ही इंटरसेप्ट कर लिया जाता है और निवासियों को आपातकालीन अलर्ट मिलते रहते हैं।

प्रिंस सलमान ने शनिवार तड़के सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी की गई एक पोस्ट में बताया कि बैठक के दौरान उन हमलों को रोकने के उपायों पर चर्चा करना था, जो उनके अनुसार क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता के हित में नहीं हैं। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि ईरान समझदारी और विवेक को प्राथमिकता देगा और गलत आकलन से बचेगा। पाक सेना ने भी बयान जारी कर कहा कि सेना प्रमुख मुनीर ने प्रिंस सलमान के साथ ईरानी ड्रोन और मिसाइल हमलों से उत्पन्न गंभीर सुरक्षा स्थिति पर चर्चा की। बयान में कहा कि दोनों पक्षों ने रणनीतिक पारस्परिक रक्षा समझौते के ढांचे के तहत हमलों को रोकने के लिए आवश्यक संयुक्त कदमों पर भी विचार किया।

जंग का नतीजा: मलबे के ढेर में तब्दील हो रहे शहर

लेबनान में बेरूत के दक्षिणी उपनगरों में शनिवार को इजरायल ने हवाई हमले किए। इन हमलों से शहर का एक बड़ा हिस्सा मलबे के ढेर में तब्दील हो गया है। वहीं, लेबनान ने कहा है कि इजरायली सेना को लेबनान-सीरिया सीमा पर उतरने की कोशिश करने से रोका गया है।

'बिजली आपूर्ति पर कोई असर नहीं'

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीपद यसो नाइक का कहना है कि मध्य पूर्व में जारी संकट का भारत की नियमित बिजली आपूर्ति पर कोई असर नहीं होगा। उन्होंने इस बार गर्मी में उच्चतम बिजली मांग 270 गीगावाट रहने का अनुमान भी जताया है।

शनिवार को केंद्रीय राज्य मंत्री नाइक राष्ट्रीय राजधानी में 'लाइनमैन दिवस' पर कार्यक्रम के दौरान मीडिया से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विद्युत मंत्रालय ने पिछले साल गर्मियों (अप्रैल 2025 से आरंभ) में 277 गीगावाट उच्चतम बिजली मांग रहने का अनुमान लगाया था। जून 2025 में सर्वोच्च मांग 242.77 गीगावाट रही। इससे पहले 2024 में मई माह में सर्वोच्च मांग 250 गीगावाट तक पहुंची थी, जो अब तक का सर्वोच्च मांग स्तर है।

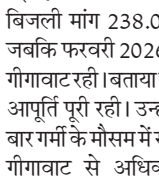

270 गीगावाट उच्चतम बिजली मांग इस बार गर्मी के दौरान रहने का अनुमान है

■ केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीपद नाइक बोले, मध्य पूर्व संकट के बीच सरकार की तैयारी पूरी

मंत्री ने बताया कि फरवरी में पिछले साल के मुकाबले मांग में बढ़ोतरी देखी गई है। फरवरी 2025 में सर्वोच्च बिजली मांग 238.06 गीगावाट थी, जबकि फरवरी 2026 में यह 243.15 गीगावाट रही। बताया कि मांग के सापेक्ष आपूर्ति पूरी रही। उन्होंने कहा कि इस बार गर्मी के मौसम में सर्वोच्च मांग 270 गीगावाट से अधिक नहीं जाएगी। मंत्रालय ने जिस तरह के प्रयास किए हैं, उससे यह मांग पूरी करने में कोई परेशानी नहीं होगी।

'सेफ्टी पॉकेट बुक' लॉन्च: कार्यक्रम के दौरान मंत्री नाइक ने देशभर के लाइनमैनों के लिए 'सेफ्टी पॉकेट बुक' और खास गाना 'लाइनमैन गीत' भी लॉन्च किया गया। कार्यक्रम का आयोजन केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण और टाटा पावर (दिल्ली वितरण) की ओर से किया गया था।

युद्ध के बीच केंद्र सरकार ने निर्यातकों को दी बड़ी राहत

नई दिल्ली, एजेंसी। युद्ध के कारण माल की आवाजाही में दिक्कतों को देखते हुए सरकार ने निर्यातकों के लिए निर्यात दायित्व अवधि 31 अगस्त तक बढ़ा दी है। इससे निर्यातकों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है।

विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने एक सार्वजनिक नोटिस में कहा कि मौजूदा भू-राजनीतिक परिस्थितियों का असर अंतरराष्ट्रीय शिपिंग मार्गों और वैश्विक सप्लाई चेन पर पड़ रहा है। निर्यातकों को सुविधा देने के उद्देश्य से एक मार्च से 31 मई 2026 के बीच समाप्त होने वाले निर्दिष्ट एडवांस ऑथराइजेशन और ऑथराइजेशन के लिए निर्यात दायित्व की अवधि को बढ़ाकर 31 अगस्त 2026 कर दिया गया है।

अधिसूचना के अनुसार, इसके लिए किसी प्रकार का कोई कम्पोजिशन शुल्क नहीं लिया जाएगा। नोटिस में कहा गया कि यह राहत विदेशी व्यापार नीति के तहत पहले से उपलब्ध सुविधा के अतिरिक्त है, जिसमें कम्पोज़िशन शुल्क देकर समय बढ़ाने की अनुमति होती है। निर्यातक लंबे समय से निर्यात दायित्वों को पूरा करने के लिए समय-सीमा बढ़ाने की मांग कर रहे थे।

'बंदरगाह प्रबंधन शुल्कों में छूट देंगे'

एसओपी

मुंबई, एजेंसी। केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय ने बंदरगाह प्रबंधनों से विभिन्न शुल्कों में कमी या छूट देने पर विचार करने को कहा है। मंत्रालय ने मध्य पूर्व संकट से जुड़े मुद्दों को लेकर मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) भी जारी की है।

जानकारी के अनुसार, केंद्रीय मंत्रालय ने शुक्रवार को सभी हितधारकों के साथ मध्य पूर्व में युद्ध के कारण बन रहे हालातों और संकट से जुड़े अहम मसलों पर लंबी चर्चा की। मंत्रालय की ओर से जारी किए गए एक बयान में बताया गया कि बैठक के दौरान मंत्रालय ने प्रस्ताव दिया कि बंदरगाह प्रबंधन पोत शुल्क में बदलाव, छूट या माफी देने को लेकर आने वाले अनुरोधों पर विचार कर सकते हैं।

हर बंदरगाह पर एक नोडल अधिकारी की तैनाती की जाएगी: मंत्रालय की ओर से बताया गया कि मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के तहत हर बंदरगाह पर एक नोडल अधिकारी तैनात किया जाएगा। ये अधिकारी बंदरगाहों से जुड़े अहम मुद्दों को सक्षम अधिकरण के समक्ष रखेगा और सुनिश्चित करेगा कि तीन दिन के भीतर कार्रवाई पूरी हो जाए।

मालवाहकों को जरूरत पर भंडारण सुविधा दें

केंद्रीय मंत्रालय की ओर से बंदरगाह प्रबंधन अध्यक्षों को स्थिति पर करीबी नजर रखने, समस्याओं का पता लगाने और समाधान के लिए हितधारकों संग नियमित बैठक करने के निर्देश दिए गए। कहा गया कि मध्य पूर्व जाने वाले मालवाहकों को जरूरत पड़ने पर भंडार सुविधा देने पर बंदरगाह प्रबंधन विचार कर सकता है। आवश्यकता पर अतिरिक्त भंडार क्षेत्र उपलब्ध कराने को भी कहा गया। मध्य पूर्व से लौटने वाले पोतों और खराब होने वाले सामान को बचाने के लिए प्राथमिकता देने को भी कहा गया। मंत्रालय ने बंदरगाह प्रबंधनों को कस्टम, विदेश व्यापार महानिदेशालय और अन्य संबंधित एजेंसियों से समन्वय बनाने के निर्देश दिए हैं।

गुमशुदा/अपहृत की तलाश

संचिन

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि एक व्यक्ति जिसका **नामः सचिन पुत्रः** नरेन्द्र झा **पताः** मकान नं. 84 गली नंबर 51 ई-ब्लॉक 2nd 60 फुटा रोड बदरपुर, **नई दिल्ली** जो दिनांकः 27.02.2026 को रात लगभग 10:30 बजे से अपने घर से लापता/अपहृत है। इस बाबत **DD No: 111A, Dt. 05.03.2026, थानाः बदरपुर, नई दिल्ली** में दर्ज है। इसका शारीरिक ब्यौरा इस प्रकार से हैः

उम्रः 29 वर्ष, **कदः** 5'0" **शरीरः** मध्यम, **रंगः** सांवला, **पहनावाः** सफेद रंग की टी-शर्ट, चॉकलेटी रंग का लोअर और पैरो में जूते पहने हुए है। स्थानीय पुलिस द्वारा हर संभव कोशिश के बाद भी इस लापता व्यक्ति के बारे में कुछ मालूम नहीं हो पाया है। अगर किसी को भी इस लापता व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी मिले तो कृपया निम्नलिखित पर सूचित करें।

फोनः 011-24368638, 24368641
वेबसाईटः http://cbi.nic.in
ई-मेलः cic@cbi.gov.in
फैक्सः 011-24368639
DP/2956/SE/2026

थानाध्यक्ष
थानाः बदरपुर, नई दिल्ली
फोनः 7678495401, 8750870933

पहचान की अपील

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक मृत व्यक्ति जिसका नाम अज्ञात, **पुत्र** अज्ञात **पता** अज्ञात, जिसकी **उम्र** करीब 45-50 वर्ष, **कदः** 5'5", **चेहराः** लंबा, **रंगः** गेहुँआ, **शरीरः** पतला, जिसने गुलाबी रंग की टी-शर्ट और भूरे रंग की पैंट पहनी है। जो कि 01.03.2026 को सुबह 9:48 बजे पीएफ नं. 16, पोल नं. 3, पूर्व की तरफ, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, दिल्ली में बेहोश अवस्था में मिला। इस संदर्भ में **DD No. 20A, दिनांकः 01.03.2026** थाना सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन, दिल्ली में दर्ज है।

इस मृतक व्यक्ति के बारे में किसी भी व्यक्ति को कोई भी जानकारी/सुराग मिले तो अधोहस्ताक्षरित एवं निम्नलिखित नम्बरों पर सूचित करने की कृपा करें।

थानाध्यक्ष
थानाः पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन, दिल्ली
फोन नं. 011-23961522
मो.: 8750871302

DP/2800/RLY/2026

राहत | मध्य पूर्व में युद्ध को लेकर जारी अनिश्चितताओं के बीच भारत ने नए विकल्पों की तलाश तेज की

ऑस्ट्रेलिया और कनाडा गैस देने के लिए तैयार

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत अपनी ऊर्जा आपूर्ति को सुरक्षित बनाने के लिए नए स्रोतों की तलाश में है। इस बीच ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और कुछ अन्य देशों ने भारत को गैस आपूर्ति करने का प्रस्ताव भी दिया है।

शनिवार को आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि युद्ध के कारण होर्मुज स्ट्रेट बंद हो गया है। लेकिन रूस, पश्चिमी अफ्रीका, अमेरिका, मध्य एशिया और गैर खाड़ी मध्य पूर्व रूट से आपूर्ति जारी रहने से यह तय हो गया है कि किसी एक कॉरिडोर में रुकावट होने पर भी प्रबंधन किया जा सकता है। अधिकारी ने कहा कि भारत का करीब 40 प्रतिशत कच्चा तेल आयात होर्मुज स्ट्रेट से आता है, जबकि 60 परसेंट आपूर्ति दूसरे रूट से होती है, जिस पर युद्ध का कोई असर नहीं है। यही वजह है कि वैश्विक उथल-पुथल के बावजूद देश में परेशानी नहीं है।

इस बीच ऑस्ट्रेलिया और कनाडा समेत कई देशों ने भारत को अतिरिक्त गैस आपूर्ति का प्रस्ताव दिया है। इसके अलावा भी भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिए अन्य विकल्पों की भी तलाश कर रहा है।

जहां से आपूर्ति संभव, तेल खरीदेंगे

अधिकारी ने बताया कि ल में अमेरिका और यूएई के साथ लंबे समय तक स्थाई आपूर्ति की व्यवस्था की गई है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि जहां से भी प्रतिस्पर्धी कीमत पर आपूर्ति संभव होगी, वहां से हम कच्चे तेल की खरीद जारी रखेंगे।

40 प्रतिशत तेल आयात होर्मुज स्ट्रेट के रास्ते से होता है

60% तेल आयात वाले रूटों पर नहीं है युद्ध का असर

कतर से भी मिलेगा तेल: कतर ने भी भरोसा दिया है कि जैसे ही रास्ता खुलेगा वह भारत को कच्चा तेल और एलएनजी की सप्लाई शुरू कर देगा। वर्तमान में कतर से ऊर्जा आपूर्ति का प्रमुख मार्ग हॉर्मुज जलडमरू मध्य है, जो अभी बंद है।

फारसी भाषा तथा साहित्य में एमए। हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, पश्तो और फारसी भाषा पर गहरी पकड़। ईरानी समाज और राजनीति के अतिरिक्त साहित्य, कला व संस्कृति की विशेषज्ञ। 'पारिजात', 'कागज की नाव', 'कुइयांजान', 'दहलीज', 'बुतखाना' और 'दूसरा ताजमहल' आदि चर्चित कृतियां। सृजनात्मक लेखन और स्वतंत्र पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय। दूरदर्शन के लिए युद्धबंदियों पर बनी बहुचर्चित जर्मन, फ्रेंच फिल्म में महत्वपूर्ण योगदान। साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध कथाकार नासिरा शर्मा के यात्रा संस्मरण 'यादों के गलियारे' से संपादित अंश...

मिजोरम ऐसा लगा मानो स्वर्ग

अद्भुत यात्रा संस्मरण-46

नासिरा शर्मा

जन्म : 22 अगस्त, 1948

मिजोरम दक्षिणी पटकाई पर्वत की मोड़दार पहाड़ियों पर बसा भारत का एक छोटा-सा इलाका है। मिजोरम में रहने वाला लुशाइ कबीला, जिसने सौ वर्ष पूर्व ईसाई धर्म स्वीकार किया था। यह कबीला अपनी पहचान में 'गवय्या कबीला' या फिर 'मीठी आवाजों वाला' कहलाता है। कुछ लोग इस हिस्से को 'रंग-बिरंगी दुनिया वाला' भी कहते हैं।

आज की सुबह कल से अलग थी। खिड़की से दिखने वाली पहाड़ी सफेद बादलों से झांकती दिख रही थी। बादलों का महीन पर्दा चारों तरफ छाया था। नर्म ठंडी हवा बह रही थी। बाल्कनी में निकल सामने का दृश्य देखती रही। चाय पीने के बाद जब दरवाजे से बरामदे में आई, तो दंग रह गई। महीन बादल जिनसे सब कुछ आर-पार दिख रहा था, वह पूरे लंबे कॉरिडोर में भरे थे। हवा अपने साथ ताजगी भी दिमाग तक पहुंचा रही थी। बादलों का नर्म स्पर्श चेहरे को सहलाता, बदन से टकराता, मुझे छूता नहलाता आगे बढ़ रहा था।

कॉरिडोर के कोने में खड़ी मैं पटकाई पहाड़ियों का दूर तक फैला सिलसिला देख रही थी। मुझे लगा कि मैं स्वर्ग में हूं। हरे रंग पर से झीना-झीना बादलों का पर्दा सरसरा रहा था। बांस के झुंड की नाजुक टहनियां हवा से डोल रही थीं। वहीं पड़ी कुर्सी पर मैं बैठ गई। कुछ पल बाद पूरी घाटी दूधिया सुरमई मोटी चादर से ढक गई, लगा कुदरत ने पर्दा गिरा दिया है। कुछ पल मैं आंख फाड़े उस सफेद चादर को ताकती रही, जिसने सब-कुछ ढक लिया था। चेहरे पर बारिश की बूंदों के पड़ने से चौंकी और फिर कुछ सेकेंड बाद तेज बारिश की आवाज कानों में आने लगी। बादल पिघल गए थे। पानी में बदलकर उन्होंने एक-एक करके पहाड़ियों को धोना शुरू कर दिया था। सारी घाटी अब साफ होकर चमक रही थी।

इस हरियाली के बीच एयरपोर्ट की कत्थई वनस्पतिहीन पट्टी साफ नजर आ रही थी। जो चीज मैं देखने को व्याकुल थी, वे थीं चिड़ियां। मगर दूर-दूर तक आसमान खाली और टहनियां केवल पत्तियों से भरी सामने थीं। राम ने बताया कि यहां के लोगों ने चिड़ियों का शिकार कर उन्हें खा डाला है। कुछ छोड़ा ही नहीं है। सुनकर अजीब-सा लगा।

किसी ने ठीक ही कहा था कि आइजोल एक ऐसा स्थान है, जहां कुदरत ने अपना एसी ऑन कर रखा है। सुना था कि प्रकृति मरहम का भी पीलाहट लिए सफेद रंग आसमान पर फैल जाते।

बादलों के घेरे में छिपे सूरज की फूटती किरणें और फैली पहाड़ियों का आधा हिस्सा धूप से चमकता, आधा छाया में और बीच की पट्टी काले रंग की, यकीन नहीं आता आंखों पर कि जो सामने दिख रहा है, वह क्या है? पेंटिंग या... तभी दृश्य बदल जाता है। सफेद बिल्कुल दूधिया सफेद बादल साबुन के फेन की तरह पहाड़ियों के बीच में यहां-वहां फंसे नजर आते हैं और आसमान पर काले बादलों की बड़ी-सी पट्टी और उसके बीच से फूटता नारंगी रंग का आलोक जो सूचना दे रहा है कि सूरज विदा होने वाला है। बाकी आसमान फीका नीला, जिस पर कोई परिंदा अपने डैने नहीं फैला रहा है।

रात को न जुगनू नजर आते हैं, न तारे। बस चारों तरफ घुप अंधेरा पहाड़ों को ढक लेता है।

किसी ने ठीक ही कहा था कि आइजोल एक ऐसा स्थान है, जहां कुदरत ने अपना एसी ऑन कर रखा है। सुना था कि प्रकृति मरहम का भी काम करती है, उस वाक्य का अर्थ मुझे अब समझ में आया, जब मेरे अंदर का अवसाद छूटने लगा था। शाम को छह बजे के बाद आसमान कितने रूप बदलता है, उसको देखकर तय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि कौन-सा दृश्य लुभावना और सबसे बढ़िया था?

काम करती है, उस वाक्य का अर्थ मुझे अब समझ में आया, जब मेरे अंदर का अवसाद छूटने लगा था। शाम को छह बजे के बाद आसमान कितने रूप बदलता है, उसको देखकर तय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि कौन-सा दृश्य लुभावना और सबसे बढ़िया था? एक समय में सफेद, सुरमई, गहरा सुरमई, समुद्री नीला, हल्का नारंगी, गुलाबी, हल्की मिजो गाने की मधुर आवाज नीचे से आ रही है। काम करते हुए गाना और कुछ पूछने पर हंसना मिजो की खास पहचान है। तनी छोटी-छोटी अधखुली सीप की तरह की आंखों में गंभीर जिज्ञासा और बेहद नर्म स्वर में दिया गया जवाब।

पूरे लॉज में नौकरों की कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ती है। जो मांगा गया, कहा गया, वह पूरा कर दिया हल्की-सी मुस्कान के साथ। पूरा माहौल लगता है, मौसम के कारण आराम भरी कैफियत में रहता है। शराब पीना मना है, मगर मौसम का सुरूर जरूर सब पर तारी रहता है। हर दस मिनट बाद हल्की बौछार, ठंडी हवा, बादलों की भीनी सरसराहट, आसमान के बदलते रंग इंसान को उग्र नहीं बनाएंगे, बल्कि उनके संताप को भी हल्की थपकियों दे सुला देंगे।

रात को पहाड़ियां अंधेरे में डूब जाती हैं और चिराग जल उठते हैं। सारी रात मिजो घर की बत्ती जलाए रहते हैं। सामने लगता है, जलते चिराग की दीवार खड़ी है। उस पर से गिरती पानी की झालर! जैसे मोमबत्तियां पिघल रही हों।

ऐसे रूमानी माहौल में अगर एडविन रोलैंड्स (1867-1939) एक मिशनरी ने धर्म के प्रचार के साथ अपना दिल मिजो लड़की को दे दिया, तो क्या गुनाह कर दिया था, मगर उनके साथियों को भय था कि उनका मित्र कबीले द्वारा प्रताड़ित किया जाएगा और मिशनरी का काम अधूरा रह जाएगा। उसे वापस भेज दिया गया।

हरी वादी में खिला सुगंधित फूल अपनी गंध न बिखेर सका। उन पर लिखी एल. ख्यानटे की पक्तियां याद आती हैं- 'अपनी पुरानी मान्यताओं की कसौटी पर, उसके जिज्ञासु निश्छल प्रेम को कभी परखना मत। उसे एक सच्चे प्रेमी की तरह मशहूर होने दो, तभी उस पर लगाए सारे आरोप सदा के लिए मिट जाएंगे।'

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

नर्म हवा की मुलायम थपकियां और अंदर दाखिल होती हरियाली के गलियारे। हर दो-तीन घंटे बाद नींद-सी आने लगती है। कुछ देर सोने के बाद आंख खुल जाती है। इस सुहावने मौसम में कहीं जाने का मन नहीं करता है। लगता है बरसों की थकान रात-दिन सोकर उतार लूं।

इधर लेखन में कुछ ज्यादा ही व्यस्त रही। ऊपर से रात-दिन बी.बी.सी. और सी.एन.एन. देखकर थकी आंखें जब बंद होती हैं, तो बुश-ब्लेयर के साथ इराक-अफगानिस्तान पर बम का काला धुआं और लाखों की संख्या में गुजरते अनजान, आम चेहरे सामने आ जाते हैं।

एक व्याकुलता-सी पूरे वजूद में सुलग रही है। पुस्तक 'मरजीना का देश : इराक' समाप्त हो चुकी है, तो भी लगता है कि बहुत कुछ लिखना छूट गया है। राम का कहना है कि जब से आई हूं, बारिश होना बंद हो गई है। देहली से बेटी का फोन आता है कि जब से आप गई हैं, बारिश रुक ही नहीं रही है। इस सबके बावजूद यह ठंडक मेरे लिए काफी है। साथ में कोई फोन नंबर नहीं लाई हूं। चाहती हूं, कुछ दिनों के लिए सब-कुछ भूलकर दिमाग में जलती हुई आग शांत कर लूं।

उन सारे सवालों को थोड़ी देर के लिए भूल जाऊं, जो मुझे हरदम झिंझोड़ते और परेशान करते हैं। हमेशा की तरह मैं कागज और पेड लेकर नहीं चली हूं। मेरा अपने से वायदा है कि अब अरसे तक पन्ने नहीं रंगूंगी, इसीलिए जब विश्वविद्यालय में मिजो भाषा विभाग के प्रोफेसर ख्यानटे का खत मिलता है कि आप हमारे रिफरेशर कोर्स में हिंदी साहित्य पर कुछ बोलें, तो मैं साफ इंकार कर देती हूं, मुझे किसी किस्म का दबाव या तनाव नहीं चाहिए।

मुझे बताया जाता है कि हिंदी पहली बार इस तरह इंट्रोड्यूस होगी, मगर बोलना अंग्रेजी में है। मन कुछ भी नहीं करने को चाहता, बस एक लंबे सफर के बाद अब इस नगरी में आकर मैं सुस्ताना चाहती हूं। अर्से से मेरी तमन्ना थी कि मैं ऐसी जगह जाऊं, जहां मुझे कोई जाने-पहचाने नहीं। मैं अपना नाम भूलकर, अपनी पहचान नकारकर एक मासूम बच्चे की तरह ताजादम हो सकूं।

(साभार : 'यादों के गलियारे से,' साहित्य भारती, दिल्ली से संपादित अंश)

पुस्तकें आई हैं

अस्तित्व
(उपन्यास)
लेखिका : आस्था नवल
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹495

व्यक्ति को अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। बात जब महिलाओं के अस्तित्व की हो, तो उसे बचाने के लिए उनका संघर्ष कई गुना बढ़ जाता है। महिलाओं के अपने अस्तित्व को बचाने की संघर्षमय कहानी है उपन्यास 'अस्तित्व।' इसमें लेखिका ने औसत मध्यवर्गीय परिवार और समाज के स्त्री-संघर्ष की उन परतों को खोला है, जिसे अनदेखा कर दिया जाता है। जहां स्त्री का जीवन-संघर्ष केवल निजी नहीं, सामूहिक भी है।

मोरीसाकी बुकशॉप के खुशनुमा दिन
(उपन्यास)
लेखक : सातोशी यागीसावा
अनुवाद : मदन सोनी
प्रकाशक : मंजुल पब्लिशिंग हाउस, भोपाल
मूल्य : ₹299

ताकाको नाम की एक युवती प्रेम में धोखा खाती है और गहरे दुख के कारण अपनी नौकरी छोड़ देती है। ऐसे बुरे वक्त में वह अपने अंकल सातोरू के कहने पर टोक्यो के प्रसिद्ध इलाके 'जिम्बोचो' में उनकी पुरानी किताबों की दुकान के ऊपर एक छोटे से कमरे में रहने आ जाती है। उपन्यास 'मोरीसाकी बुकशॉप के खुशनुमा दिन' की कहानी प्रेम, पारिवारिक रिश्ते और कैसे कठिन समय में किताबें सहारा बनती हैं, जैसे विषय पर केंद्रित है।

मेरे लिखने की मेज
(एक सौ पच्चीस लेखक : एक सौ पच्चीस दास्तानें)
संपादक : सूरज प्रकाश
प्रकाशक : अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली
मूल्य : ₹449

125 लेखक और तीन पीढ़ियों की लेखन-प्रक्रिया को जानने-समझने का प्रयास है पुस्तक 'मेरे लिखने की मेज।' किसी भी लेखक के लिखना शुरू करने से पहले उसकी मानसिक स्थिति, उसकी बेचैनी की एक अलग ही कहानी होती है। इसमें इसका रोचक अध्ययन है। पुस्तक में विष्णु नागर, उर्मिला शिरीष, हरीश नवल, प्रेम जनमेजय, प्रियदर्शन, हरीश पाठक और नीना अंदोत्रा आदि लेखक शामिल हैं।

अग्नि गाथा के नायक : शहीद रामनारायण आजाद
(इतिहास)
लेखक : भूपेन्द्र प्रताप सिंह
प्रकाशक : प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, गाजियाबाद
मूल्य : ₹300

उम्र में चंद्रशेखर आजाद से नौ वर्ष बड़े पंडित रामनारायण आजाद का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने न सिर्फ फर्रुखाबाद, बल्कि संपूर्ण देश के क्रांतिकारियों एवं गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानियों के निरंतर संपर्क में रहकर अपने कार्यों को अंजाम दिया। पुस्तक 'अग्निगाथा के नायक : शहीद रामनारायण आजाद' में इनके जीवन के कई अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

सहज स्वीकार्य अटल की अमिट छवियां

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व और कृतित्व के अनोखे पहलुओं की साक्षी है पुस्तक- 'अटल बिहारी वाजपेयी : द इटरनल स्टेट्समैन।' इसके लेखक पूर्व सांसद विजय गोयल हैं, जो 2001 में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में राज्य मंत्री के रूप में कार्य कर चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने पूर्व प्रधानमंत्री के पांच दशकों के राजनीतिक जीवन को समग्रता के साथ देखने की कोशिश की है।

पुस्तक-समीक्षा

भारतीय राजनीति में अटल बिहारी वाजपेयी का कद दलगत राजनीति से बहुत ऊपर था। अपनी पार्टी के साथ-साथ विरोधी दलों में भी उनके प्रशंसकों की कमी नहीं थी। उनकी उदार नेता की छवि उन्हें न केवल अपने समकालीन नेताओं में बड़ा बनाती थी, बल्कि आज की राजनीति में भी उन्हें एक उदाहरण के रूप में पेश किया जाता है।

वाजपेयी हाजिरजवाब और विनोदप्रिय स्वभाव के नेता थे। परिस्थितियां चाहे जैसी भी हों, उनका अंदाज नहीं बदलता था। हंसी-मजाक में गंभीर बात कह देना और गंभीर माहौल को अपने मस्तमौला स्वभाव से सहज बना देने की उनके पास अद्भुत कला थी।

राजनीति में उनकी छवि अजातशत्रु की थी। उनकी पार्टी से भले ही अन्य दलों के नेताओं का विरोध हो, लेकिन वे सभी दलों और नेताओं में सहज स्वीकार्य थे।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व और कृतित्व के इन्हीं अनोखे पहलुओं को संजोने का सफल प्रयास है पुस्तक- 'अटल बिहारी वाजपेयी : द इटरनल स्टेट्समैन।' इसके लेखक हैं पूर्व सांसद विजय गोयल, जो अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में राज्य मंत्री के रूप में कार्य कर चुके हैं। पुस्तक में लेखक ने वाजपेयी के साथ अपने पांच दशकों के जुड़ाव के साथ उस दौर की राजनीतिक सोच को भी साझा किया है। पुस्तक की शुरुआत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संदेश में वाजपेयी के परिवर्तनकारी योगदानों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि उनकी नीतियों ने भारत के युवाओं के लिए नए अवसर खोले।

वाजपेयी के साथ अपने संबंधों को याद करते हुए लेखक लिखते हैं, 'जहां तक मुझे याद है, हमारी पहली मुलाकात हमारे घर पर हुई थी। अटलजी मेरे पिता चरती लाल गोयल के बहुत घनिष्ठ थे। जो दिल्ली में भारतीय जनसंघ के वरिष्ठ नेता थे और बाद में दिल्ली विधानसभा के पहले स्पीकर बने।'

इस वृहद कॉफी टेबल बुक में वाजपेयी के जीवन से जुड़ी कई दुर्लभ तस्वीरें, ऐतिहासिक घटनाएं और लेखक के दशकों के व्यक्तिगत अनुभव शामिल हैं। साथ ही इसमें उनके कार्यकाल से जुड़ी कई महत्वपूर्ण घटनाओं का भी वर्णन है। लेखक के व्यक्तिगत अनुभव होने के कारण पुस्तक रोचक और विश्वसनीय बन गई है। यह भारतीय राजनीति के इतिहास को समझने के साथ ही आज की पीढ़ी को वाजपेयी के व्यक्तित्व और विचारों से परिचित करवाती है।

पुस्तक में वाजपेयी के 1924 में ग्वालियर में जन्म से लेकर एक विलक्षण वाकपटु सांसद के रूप में उनके उदय और तीन बार प्रधानमंत्री बनने तक के सफर का वर्णन है। पुस्तक में संसद में दिए गए उनके प्रभावशाली भाषण और उनके कार्यकाल में किए गए महत्वपूर्ण कार्यों का भी विस्तार से उल्लेख है।

पुस्तक में वाजपेयी के न केवल राजनेता, बल्कि कवि, पत्रकार, विचारक और उदार नेता के रूप की भी चर्चा है। यही नहीं उन्होंने कई युवा नेताओं को आगे बढ़ाया। इसे लेखक ने कुछ यों याद किया है, 'मेरे लिए अटलजी एक राष्ट्रीय नेता से कहीं ज्यादा थे। वे सही मायने में मेरे मार्गदर्शक थे। उन्होंने मुझे हिम्मत दी, मेरा मार्गदर्शन किया और मेरी राजनीतिक समझ को बनाया।'

पुस्तक में लेखक के वाजपेयी के साथ उनके संबंधों की बानगी तो है ही, साथ ही उनके बहाने भारतीय राजनीति को जानने-समझने की कोशिश भी है। आज के दौर में जब नेता अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर सोचने से कतराते हैं, तब वाजपेयी और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री पर शोध-अध्ययन करने वालों के लिए यह पुस्तक अनिवार्य है। इसमें हम समय के साथ बदलती राजनीति और इसकी छवियों को भी बखूबी देख पाते हैं। दरअसल, यह पुस्तक वाजपेयी के प्रति लेखक की श्रद्धांजलि भी है।

अरुण कुमार जैमिनि

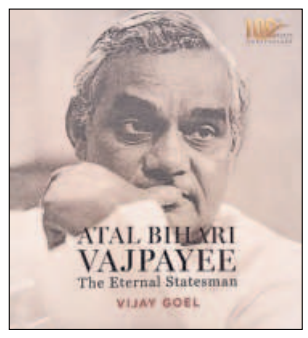

अटल बिहारी वाजपेयी द इटरनल स्टेट्समैन
(सचित्र जीवनी)
लेखक : विजय गोयल
प्रकाशक : हेरिटेज इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹4000

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल
(08 मार्च से 14 मार्च 2026)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। बातचीत में संतुलित रहें। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें। मित्रों से सद्भाव बनाकर रखें। सेहत के प्रति सचेत रहें। माता की सेहत में सुधार होगा। कारोबार के लिए यात्रा बढ़ सकती है।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। परिवार का साथ मिलेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन (21 मई-21 जून)
मन प्रसन्न रहेगा। दांपत्य सुख में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति रहेगी। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। कार्यक्षेत्र में बदलाव भी हो सकता है। कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। आत्मसंयत रहें। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। परिश्रम अधिक रहेगा।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
वाणी में मधुरता रहेगी, परंतु मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। मन में नकारात्मक विचारों से बचें। आय में वृद्धि होगी। परिवार का साथ मिलेगा।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
मन प्रसन्न रहेगा। फिर भी धैर्यशीलता बनाए रखें। माता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। खर्चों की अधिकता रहेगी। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ सकती है। यात्रा बढ़ सकती है।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकता है। कारोबार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। भागदौड़ अधिक रहेगी। पिता का साथ मिल सकता है।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन प्रसन्न भी रहेगा। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। कार्यक्षेत्र में बदलाव भी हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परंतु आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। बातचीत में संतुलित रहें। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। परिवार एवं किसी मित्र का सहयोग मिल सकता है।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार का साथ मिलेगा। किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है। माता से धन की प्राप्ति हो सकती है। आय में वृद्धि हो सकती है।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। पिता का साथ मिलेगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। खर्चों की अधिकता रहेगी।

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

वर्ग पहेली : 8261

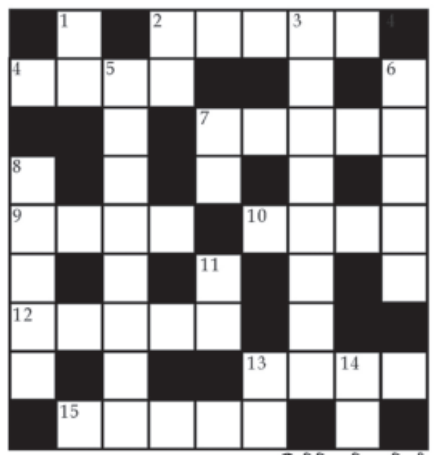

बाएं से दाएं

2. जिसने कुछ करने का वचन दिया हो; वचन से बंधा; प्रतिश्रुत (5)
4. आलसी; कमकस; काम से जी चुराने वाला (4)
7. जिनका विचार विपरीत हो; जो सहमत न हो; प्रतिरोधी (5)
9. कृपा; दया (4)
10. जायकेदार; शोरबेदार; रसवाला (4)
12. खुशामद; चापलूसी; झूठी प्रशंसा का कार्य; लल्लो-चप्पो (5)
13. अन्न-जल; खाना-पीना (2,2)
15. आशीर्वाद देना; रक्षा करना; सहायता करना; सहारा देना (2,3)

ऊपर से नीचे

1. अंतरिक्ष; आकाश; आसमान; बादल; मेघ (2)
2. दूल्हा; देवता से मिली सिद्धि (2)
3. अचेत हो जाना; श्रांत हो जाना; होशो हवास खो बैठना (5,1,2)
5. अटूट संबंध; अत्यधिक घनिष्टता; कभी न छूटने वाला साथ (2,3,1,2)
6. उपवास रखना; प्रतिज्ञा करना; संकल्प करना (2,3)
7. अदृश्य; डूबा हुआ; तिरोहित; लोप (2)
8. दूरी तक किया जाने वाला संवाद प्रेषण; विद्युत संकेतों को किसी दूरस्थ क्षेत्र तक संचारित या प्रेषित किया जाना (5)
11. मद; लेखा; हिसाब (2)
13. अन्न कण; चबेना; कन; गोल वस्तु; मनका (2)
14. खेल में मध्य रेखा के दोनों ओर का स्थान; ठंड; हिम (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 8260 का उत्तर

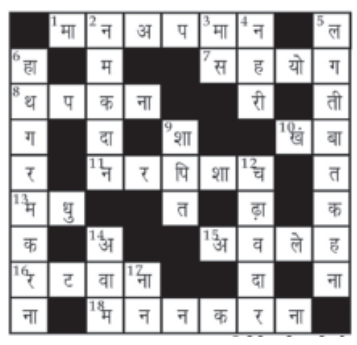

सुडोकू : 8243

*आसान

	1					8		
	7		6				4	5
3				2	9			
		9	4		1		3	
		1		8		2		
	3		2		5	1		
			9	6				2
7	2				3		8	
		5					1	

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं. 8242

5	3	1	7	6	8	4	9	2
7	2	9	5	1	4	6	8	3
6	8	4	9	3	2	1	7	5
8	9	5	3	7	6	2	4	1
4	1	2	8	9	5	3	6	7
3	7	6	2	4	1	9	5	8
9	6	8	1	2	7	5	3	4
1	5	3	4	8	9	7	2	6
2	4	7	6	5	3	8	1	9

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषिकांत गोस्वामी

08 मार्च, रविवार, **शक संवत्** : 17 फाल्गुन (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग** : 25 फाल्गुन मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम** : 18 रमजान, 1447, **विक्रमी संवत्** : चैत्र कृष्ण पंचमी तिथि रात्रि 09.12 मिनट तक पश्चात षष्ठी तिथि, स्वाती नक्षत्र दोपहर 01.32 मिनट तक पश्चात विशाखा नक्षत्र, ध्रुव योग प्रातः 07.04 मिनट तक पश्चात व्याघात योग, कौलव करण। चंद्रमा तुला राशि में (दिन-रात)।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य दक्षिण गोल। शिशिर ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम। श्री रंग पंचमी।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि वास्तु के अनुसार ऐसा क्या करें, जिससे दुकान पर आया हुआ ग्राहक खाली हाथ वापस न जाए।
-महिपाल सिंह, धनबाद

- सबसे पहली बात जब भी ग्राहक से बात करें, तो मुस्कुरा कर ही करें। खासकर जो सुबह का सबसे पहला ग्राहक हो। भले ही आपका मुनाफा कम हो।
- अपने गल्ले में एक हल्दी की गांठ पीले कपड़े में बांधकर रखें। इससे धन टिकने लगता है।
- जब दुकान खोलें, तो अपने गल्ले को हाथ लगाकर तीन बार श्रीं श्रीं श्रीं बोलें और महालक्ष्मी को प्रणाम करें। मुख्य द्वार पर हल्दी मिले हुए जल के छींटे दें। इससे धन का आगमन बढ़ता है।
- शनिवार को सरसों के तेल का दीपक जलाना शुभ होता है।

बंदरगाहों पर बिगड़ रहे हैं हालात

जनसत्ता सरोकार

पांच मार्च 2026 को वह खबर आई, जिसका डर था। दुनिया की सबसे बड़ी नौ-परिवहन कंपनी मैर्स्क ने भारत और मध्य-पूर्व के बीच नया लेन-देन तत्काल प्रभाव से बंद कर दिया। एमएससी, हापेग-लायड और वन ने भी यही किया। एक ही झटके में भारत के निर्यातकों के सामने वह दरवाजा बंद हो गया, जिससे हर साल 180 अरब डालर का माल गुजरता है। मुंद्रा, जेएनपीटी और चेन्नई बंदरगाहों पर खाड़ी देशों के लिए तैयार कंटेनर के ढेर लगने लगे। जानकारों ने चेतावनी दी कि अगर जहाज रवाना नहीं हुए तो बंदरगाहों पर स्थिति बेकाबू हो जाएगी।

संकट में मोरबी का कारोबार

गुजरात के मोरबी से हर साल तीन अरब डालर से अधिक का 'सिरेमिक उत्पाद' निर्यात होता है। इसका सबसे बड़ा बाजार संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और कतर हैं। युद्ध के बाद से जेबेल अली बंदरगाह (दुबई) पर कई खेप फंसी हुई हैं। नई मांग आनी बंद हो गई हैं। खरीदारी रोक दी गई है और माल ढुलाई कंपनियों ने 2,000 डालर से 4,000 डालर प्रति कंटेनर का आपातकालीन संघर्ष उपकर लगा दिया है। यह पहले से ही कम मुनाफे पर चलने वाले इस उद्योग के लिए बड़ा झटका है।

चाय का निर्यात : भुगतान फंसा, माल समुद्र में अटका

भारत के कुल चाय निर्यात का 41 फीसद खाड़ी देशों को जाता है। चाय बोर्ड के अनुसार यूएई, ईरान और इराक को मिलाकर साल 2025 में 114.55 मिलियन किलो चाय निर्यात हुई थी। अब नौ-परिवहन कंपनियों ने नई लेन-देन रोक दी है। ईरान में भुगतान फंसा है और माल समुद्र में अटका हुआ है। पूरा पश्चिमी गोलार्द्ध प्रभावित हो गया है। माल भाड़ा दर जो स्थिर थी, अब बढ़ सकती है। अमेरिका और यूरोप को माल की खेप भेजने का समय बढ़ेगा। ईरान में भेजे गए माल का भुगतान फंसा है और सामान भेजने के लिए तैयार पड़ा है।

बासमती चावल की कीमत दस फीसद तक गिरी

पिछले 72 घंटों में बासमती के दाम सात से दस फीसद तक गिर चुके हैं। कंटेनर की भारी कमी है, खाड़ी के लिए जाने वाले जहाजों से होने वाली आपूर्ति रद्द हो रही है और माल भाड़ा 15-20 फीसद बढ़ चुके हैं। बंकर ईंधन 520 से बढ़कर 580 डालर प्रति टन हो गया है।

कोयंबटूर: माल परिवहन में ज्यादा समय, नई खेप अटकी

तमिलनाडु के कोयंबटूर से वस्त्र और 'वेट ग्राइंडर' के निर्यात पर सीधा असर पड़ा है। केप आफ गुड होप के रास्ते से माल परिवहन में 20-25 दिन अतिरिक्त लग रहे हैं। जेबेल अली में कई खेप अटकी पड़ी हैं। नई खेप पूरी तरह रुक गई हैं।

हस्तशिल्प: छुट्टी पर भेजे गए कारीगर

उत्तर प्रदेश के संभल और मुरादाबाद के हस्तशिल्प व्यापारियों की हालत सबसे खराब है। हस्तशिल्प ठेकेदारों के शब्दों में, 'न आर्डर आ रहे हैं, न भुगतान'। सारे कारखाने बंद हैं। कारीगरों को छुट्टी पर भेजना पड़ गया है। फरवरी में दिल्ली में हस्तशिल्प प्रदर्शनी हुई थी, खरीदार आए थे, उम्मीद थी। लेकिन युद्ध शुरू होते ही सब खत्म हो गया।

संघर्ष जारी रहने तक कोई वास्तविक विकल्प नहीं

वाणिज्य मंत्रालय ने दो मार्च को आपातकालीन समीक्षा बैठक बुलाई। एफआईईओ ने मांग की है कि भारतीय मिशन खाड़ी में फंसे भुगतान की वसूली में सक्रिय मदद करें। विशेषज्ञों ने एमएसएमई मंत्रालय से ब्याज सबसिडी और निर्यात ऋण गारंटी बढ़ाने की मांग की है। विशेषज्ञों ने सटीक चेतावनी दी है कि समुद्री माल ढुलाई का कोई वास्तविक विकल्प नहीं है। जब तक संघर्ष जारी रहेगा, मध्य-पूर्व के लिए कंटेनर दाम ऊंचे रहेंगे। इतने विकट संकट में भारत के लिए कई तरह के सबक हैं। 437 अरब डालर के सालाना निर्यात में से बड़ा हिस्सा उन्हीं माल भेजे जाने वाले स्थानों पर निर्भर है जो आज युद्ध की चपेट में हैं। इस स्थिति की गहन समीक्षा होनी चाहिए।

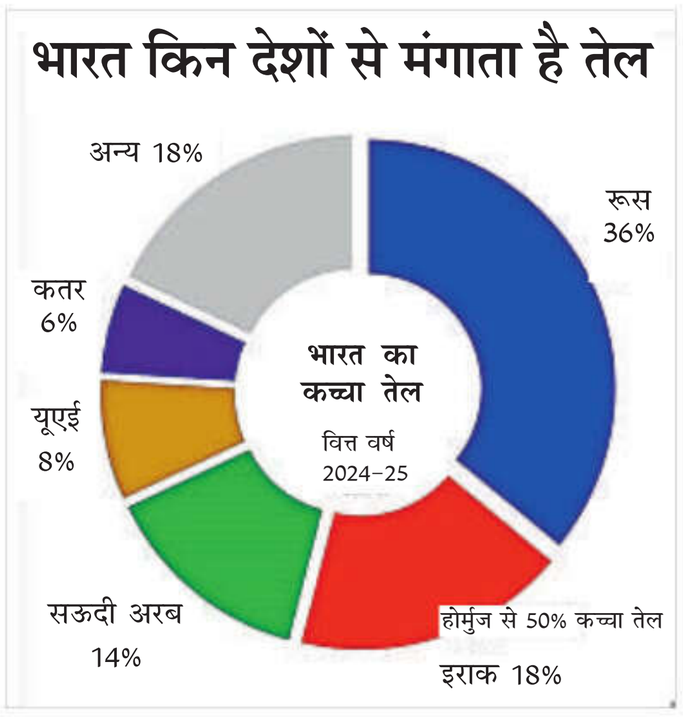

पश्चिम एशिया में युद्ध से भारत के हित हुए अवरुद्ध
अलग-अलग खेमों में बंटे हैं कारोबारी साझेदार

पश्चिम एशिया एक बार फिर धधक रहा है। ईरान, इजराइल और अमेरिका के बीच बढ़ा हुआ तनाव और एक-दूसरे पर हफ्ते भर से जारी हमले, हूती विद्रोहियों द्वारा लाल सागर में जहाजों पर हमले, और होर्मुज जलडमरूमध्य पर छाया खतरा-यह सब मिलकर एक ऐसा भू-राजनीतिक तूफान ला चुके हैं, जिसकी आंच भारत तक सीधे पहुंच रही है। इसका असर भी दिखाई दे रहा है। देश में खाना पकाने की गैस के दाम बढ़ा दिए गए हैं। इसी बीच अमेरिका ने पांच मार्च 2026 को एक नाटकीय फैसला लिया और भारत को रूसी तेल खरीदने की 30 दिन की अस्थायी छूट दी। लेकिन यह छूट जितनी राहत देती नजर आती है, उतनी है नहीं। अमेरिका ने साफ कर दिया है कि यह केवल उस रूसी तेल के लिए है जो जहाजों पर पहले से लदा और समुद्र में फंसा हुआ है। नई खरीद की अनुमति नहीं है। इसके बदले में भारत को भविष्य में अमेरिकी तेल अधिक खरीदना होगा- यानी यह राहत नहीं, एक रणनीतिक दबाव का हथियार है। साथ ही, भारत में उद्योग-धंधों पर असर पड़ रहा है। माल गोदामों में सामान फंसा पड़ा है और गुजरात में औद्योगिक इकाइयां ठप पड़ने लगी हैं। मसले पर सरोकार की पड़ताल।

संकट है विकट

जनसत्ता सरोकार

होर्मुज जलडमरूमध्य मात्र 33 किलोमीटर चौड़ा है, लेकिन इसी संकरे रास्ते से दुनिया के कुल तेल व्यापार का 20 फीसद और भारत के कच्चे तेल आयात का लगभग आधा हिस्सा गुजरता है। साल 2025 में प्रतिदिन 1.5 करोड़ बैरल कच्चा और 50 लाख बैरल तेल उत्पाद इसी रास्ते से गुजरा। मार्च 2026 तक ब्रेंट क्रूड 85 डालर प्रति बैरल के पार जा चुका था। यह तीन साल का सर्वोच्च स्तर है। पिछले हफ्ते से तुलना करें तो यह 15 फीसद से अधिक की उछाल थी। भारत प्रतिदिन लगभग 55 लाख बैरल तेल की खपत करता है, जिसमें से 15-20 लाख बैरल होर्मुज से गुजरता है।

भारत के पास कितना भंडार?

रयस्टेड एनर्जी के एपीएसी तेल-गैस अनुसंधान के अनुसार भारत के पास इस समय लगभग दस करोड़ बैरल का कच्चा तेल भंडार है। यानी केवल 45 दिनों की मांग के बराबर। वे कहते हैं कि अगले तीन-चार हफ्ते भारतीय रिफाइनरियां सामान्य रूप से चलती रहेंगी, लेकिन यदि मध्य-पूर्व में व्यवधान इससे अधिक लंबा खिंचा तो गंभीर चिंता होगी।

अमेरिका की 30 दिन की छूट...राहत या जाल?

पांच मार्च 2026 को अमेरिकी वित्त मंत्री स्काट बेसेंट ने घोषणा की कि भारतीय रिफाइनरियों को रूसी तेल खरीदने की 30 दिन की अस्थायी छूट दी जा रही है। यह छूट पांच मार्च से चार अप्रैल 2026 तक मान्य है। इसे ओएफएसी का जनरल लाइसेंस 133 कहा गया है। बेसेंट ने 'एक्स' पर लिखा- वैश्विक बाजार में तेल का प्रवाह बनाए रखने के लिए वित्त विभाग भारतीय रिफाइनरियों को रूसी तेल खरीदने की अस्थायी 30 दिन की छूट दे रहा है। यह छूट जानबूझकर अल्पकालिक रखी गई है। इससे रूसी सरकार को कोई उल्लेखनीय आर्थिक लाभ नहीं होगा क्योंकि यह केवल उस तेल पर लागू है जो समुद्र में पहले से फंसा है।

छूट की शर्तें-क्या मिला, क्या नहीं?

पांच मार्च 2026 — चार अप्रैल 2026 (30 दिन)

किसे मिली?

भारतीय कानून के तहत पंजीकृत रिफाइनरियां (आइओसीएल, एचपीसीएल, बीपीसीएल, रिलायंस)

कौन सा तेल?

केवल वह रूसी कच्चा तेल जो पांच मार्च से पहले जहाजों पर लादा जा चुका था।

नया तेल?

नहीं-नई खरीद की अनुमति नहीं, यह पुराने फंसे माल के लिए है।

ईरान से जुड़ा?

बिल्कुल नहीं -ईरानी मूल का कोई भी तेल इस छूट में शामिल नहीं

अमेरिका की शर्त

भविष्य में भारत को अमेरिकी तेल अधिक खरीदना होगा।

भारत को वास्तविक फायदा कितना?

केपलर के एक शोध विश्लेषक के अनुसार, समुद्र में फंसे लगभग 14.5 करोड़ बैरल रूसी कच्चे तेल को भारत की ओर मोड़ा जा सकता है- यदि व्यावसायिक सौदे जल्दी पूरे हों।

कीमत का उलटफेर

यह छूट भारत के लिए आर्थिक रूप से उतनी फायदेमंद नहीं है, जितनी दिखती है। फरवरी 2026 में रूसी उरालस क्रूड ब्रेंट से 13 डालर प्रति बैरल सस्ता मिल रहा था। युद्ध के बाद अब यही तेल ब्रेंट से चार-पांच डालर प्रति बैरल महंगा हो गया है-यानी प्रीमियम पर। एचपीसीएल ने युद्ध से पहले 13 डालर छूट पर दो कार्गो खरीदे थे। आयल एनालिटिक्स, एसएंडपी ग्लोबल एनर्जी सेरा के मुताबिक इस छूट का उद्देश्य बाजार की भावना को शांत करना और तत्काल आपूर्ति जोखिम को दूर करना है, न कि प्रतिबंध नीति में बदलाव।

होर्मुज में पिछले पांच दिनों में जो व्यवधान हुआ है, वह शायद इतने कम समय में अब तक का सबसे बड़ा आपूर्ति व्यवधान है। इस छूट का लक्ष्य बढ़े हुए भू-राजनीतिक जोखिम से उपजी निकट-भविष्य की आपूर्ति बाधा को रोकना है-प्रतिबंध नीति में बदलाव नहीं। होर्मुज में पांच दिनों का व्यवधान शायद इतने कम समय में अब तक का सबसे बड़ा आपूर्ति संकट है।

> **तीस** दिन की छूट नि:शुल्क नहीं है। बेसेंट ने स्पष्ट किया कि भारत अमेरिका का अनिवार्य भागीदार है, और हम पूरी तरह अपेक्षा करते हैं कि वह अमेरिकी तेल की खरीद बढ़ाएगा। यानी यह छूट रणनीतिक लेन-देन है।

असली शर्त-अमेरिकी तेल खरीदो

यह छूट नि:शुल्क नहीं है। बेसेंट ने स्पष्ट किया कि भारत अमेरिका का अनिवार्य भागीदार है, और हम पूरी तरह अपेक्षा करते हैं कि वह अमेरिकी तेल की खरीद बढ़ाएगा। फरवरी 2026 में ही ट्रंप ने घोषणा की थी कि भारत ने रूसी तेल बंद करने और अमेरिकी-वेनेजुएलाई तेल खरीदने पर सहमति दी है। 50 फीसद शुल्क हटाकर 18 फीसद किया गया था। यानी यह 30 दिन की छूट एक रणनीतिक लेन-देन है, आज की जरूरत पूरी करो, पर अमेरिकी तेल का बाजार बनो। भारत की सामरिक स्वायत्तता पर यह एक और बड़ा दबाव है।

49 अरब डालर दांव पर

विश्व बैंक के अनुसार भारत 2024 में 129 अरब डालर के धन प्रेषण का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता देश बना। इसमें से लगभग 38 फीसद यानी करीब 47-49 अरब डालर खाड़ी देशों से आता है। यूएई, सऊदी अरब, कतर, कुवैत और ओमान में मिलकर एक करोड़ से अधिक भारतीय रहते हैं। महाराष्ट्र (20.5%), केरल (19.7%), तमिलनाडु (10.4%), तेलंगाना (8.1%) और कर्नाटक (7.7%) - इन राज्यों के लाखों परिवारों की आजीविका खाड़ी से जुड़ी है। साल 1990 में जब कुवैत पर हमला हुआ था तब कुल धन प्रेषण 2.1 अरब डालर था। आज यह 60 गुना बढ़ चुका है।

जानकार 1990 के खाड़ी संकट से इसे इसलिए ज्यादा गंभीर मान रहे हैं क्योंकि भारत तेल आपूर्ति के लिए मध्य-पूर्व पर जितना निर्भर अभी है, उतना पहले कभी नहीं था। फिर आज 36 साल पहले इतनी बड़ी संख्या में भारतीय मध्य-पूर्व के देशों में नहीं रहते थे। 1990 में तेल पर निर्भरता 77 फीसद थी, आज 87.7 फीसद है। धन प्रेषण का आकार 1991 में 2.1 अरब डालर था, आज 129 अरब डालर (साल 2024) है। यानी यह अब 60 गुना अधिक है। खाड़ी में तब भारतीय 20 लाख थे। आज एक करोड़ से अधिक हैं।

लाल सागर का लंबा रास्ता

लाल सागर और बाब-अल-मंदेब पर हमलों के कारण जहाजों को केप आफ गुड होप का रास्ता लेना पड़ रहा है। इससे यात्रा में 15-20 दिन और लागत में 3-6 लाख डालर प्रति यात्रा की वृद्धि हो रही है। जनवरी 2026 में भारत का व्यापार घाटा 34.68 अरब डालर है यानी तीन महीने का सर्वोच्च। हवाई मार्ग भी प्रभावित हैं। एविलाज कंसल्टंट्स के सीईओ संज लाजर के अनुसार मध्य-पूर्व गलियारा भारत का सबसे बड़ा पश्चिमी हवाई मार्ग है। पाकिस्तानी हवाई क्षेत्र पहले से बंद हैं। ईरान और खाड़ी का मार्ग भी अवरुद्ध है। इंडिगो और एअर इंडिया की यूरोपीय उड़ानें प्रभावित हुई हैं।

1990 बनाम 2026 की हकीकत

साल 1990-91 के खाड़ी युद्ध के समय भारत की अर्थव्यवस्था आज से बिल्कुल अलग थी। बंद, आत्मनिर्भर और खाड़ी के साथ सीमित जुड़ाव वाली। 1991 में विदेशी मुद्रा भंडार मात्र तीन हफ्ते का था। आज 640 अरब डालर से अधिक है। यह एक बड़ी सुरक्षा है। लेकिन खुली अर्थव्यवस्था का अर्थ यह भी है कि हर बाहरी झटका सीधे घर तक पहुंचता है। साल 1990 में केवल तेल का झटका था। आज तेल, धन प्रेषण, व्यापार, नौ-परिवहन ढुलाई और कूटनीति-सब एक साथ दांव पर हैं। बीआइएमसीओ के आंकड़े बताते हैं कि भारत 2025 में रूस के समुद्री कच्चे निर्यात का 25 फीसद खरीदता था। 2026 की शुरुआत में यह 34 फीसद घट गया था और अब होर्मुज बंद होने से फिर रूसी तेल की जरूरत आ पड़ी है।

भारत की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इस युद्ध में उसके सभी प्रमुख साझेदार अलग-अलग खेमों में हैं। ईरान के साथ चाबहार बंदरगाह और आइएनएसटीसी गलियारा है। इजराइल के साथ रक्षा साझेदारी है। जीसीसी के साथ 179 अरब डालर का व्यापार और लाखों प्रवासियों की आजीविका है।

भारत का असली काम अब यह है कि 30 दिन के भीतर समुद्र में फंसे रूसी तेल को भारतीय बंदरगाहों तक लाना, रणनीतिक भंडार बढ़ाना, और ऊर्जा विविधीकरण की दीर्घकालिक नीति को तेज करना। यह संकट एक बार फिर याद दिला रहा है कि सामरिक स्वायत्तता की परीक्षा हर बार अलग तरह की होती है।

ईरान से आसान नहीं भारतीयों की निकासी

ईरान में फंसे 9,000 भारतीयों में कई वर्ग हैं। इनमें सबसे बड़ी संख्या है मेडिकल विद्यार्थियों की। लगभग 3,000 भारतीय छात्र ईरानी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, जिनमें से करीब 2,000 कश्मीर घाटी से हैं।

इसके अलावा चाबहार बंदरगाह के परियोजना-कर्मी, खुजेस्तान के तेल क्षेत्र के तकनीशियन, कोम और मशहद के शिया तीर्थयात्री और कारोबारी भी शामिल हैं। ईरान यूनिवर्सिटी आफ मेडिकल साइंसेज के एक छात्र ने वीडियो अपील में कहा-हम तेहरान में हैं और यहां मिसाइलें गिर रही हैं। हम सभी भारतीय छात्रों की तरफ से भारत सरकार से गुजारिश है-जल्दी निकालिए।

हालात अलग, हवाई क्षेत्र हैं बंद

विदेश मंत्रालय ने एक मार्च की रात आपातकालीन परामर्श जारी किया- उपलब्ध किसी भी साधन से तुरंत ईरान छोड़ें। उड़ान, आर्मेनिया की ओर से जमीनी मार्ग और यूएई के लिए फेरी-ये तीनों विकल्प सुझाए गए। सरकार की तरफ से तेहरान दूतावास के चार आपातकालीन नंबर जारी किए गए।

खाड़ी के अन्य देशों से निकासी अपेक्षाकृत आसान रही, लेकिन ईरान की स्थिति अलग है। ईरान के ऊपर हवाई क्षेत्र लगभग बंद है। विशेषज्ञों ने कहा कि जब तक हवाई क्षेत्र प्रतिबंध और अस्थिर परिस्थितियां बनी हैं, कोई निकासी अभियान संभव नहीं। इंटरनेट और फोन सेवाएं आंशिक रूप से बाधित हैं।

भारत की ऐतिहासिक मिसाल

भारत इससे पहले भी ऐसे अभियान सफलतापूर्वक चला चुका है। आपरेशन सिंधु (जून 2025-इजराइल-ईरान संघर्ष में 4,415 भारतीयों को निकाला गया), आपरेशन देवी शक्ति (अफगानिस्तान, 2021), आपरेशन गंगा (रूस-यूक्रेन, 2022) और वंदे भारत मिशन (कोविड-19, 2020)-इनका हवाला देते हुए सरकार ने भारतीय नागरिकों को पूरी सुरक्षा का भरोसा दिलाया है।

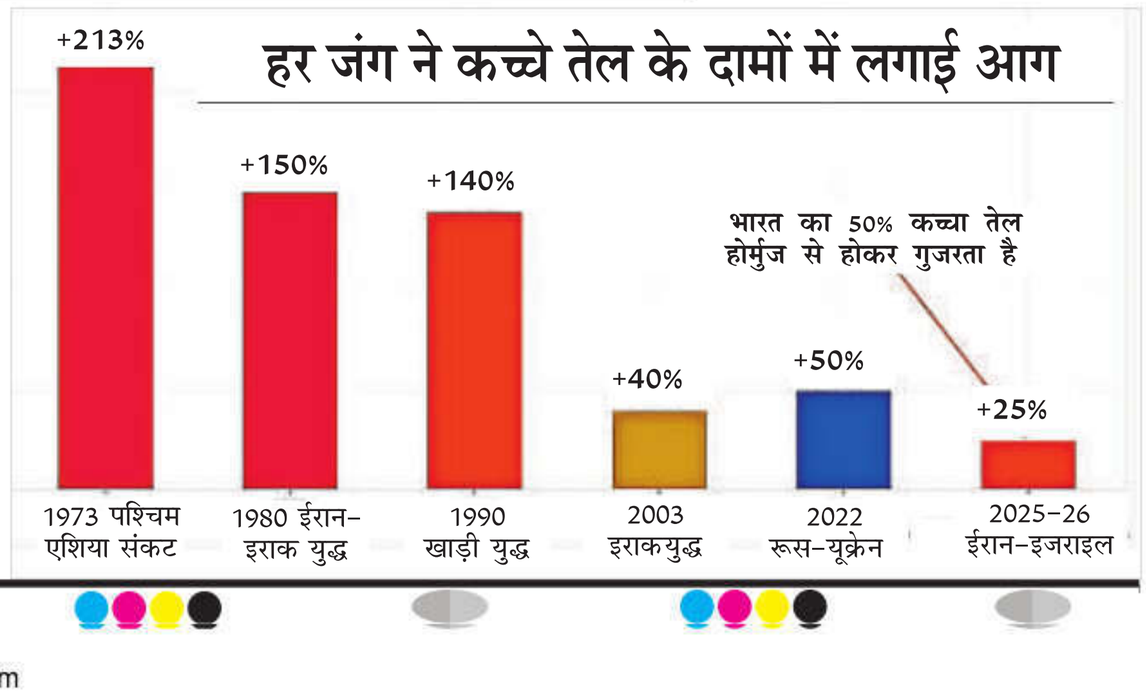

कोतवाल के सामने समर्पण

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

मध्य पूर्व में भारत के मानवीय, आर्थिक और राजनीतिक हित अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, मगर इस क्षेत्र में बढ़ती हिंसा और विनाश के बीच भारत अलग-थलग पड़ गया है। ईरान ने जार्डन, कुवैत, बहरीन, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और इराक में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया है। इस क्षेत्र में करीब एक करोड़ भारतीय रहते हैं। यहां भारत के तेल, निर्यात और अन्य आर्थिक हित हैं। इसके बावजूद भारत की आवाज और प्रभाव न के बराबर है।

एक और युद्ध शुरू हो चुका है। इजराइल उकसाने वाला है और अमेरिका युद्ध का आगाज करने वाला है।

इजराइल ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को यह विश्वास दिला दिया है कि ईरान के पास परमाणु हथियार हैं या लगभग विकसित करने के अंतिम चरण में है और वह अमेरिका को धमकी देने की योजना बना रहा है। हालांकि, वाल स्ट्रीट जर्नल ने रपट दी है कि गोपनीय जानकारी रखने वाले अमेरिकी अधिकारियों ने इन कथित संभावित धमकियों को निराधार बताकर सिरे से खारिज कर दिया है। फिर भी, ट्रंप ने इजराइल के साथ मिलकर ईरान के खिलाफ व्यापक पैमाने पर युद्ध शुरू कर दिया है।

अतीत के झूठे दावे

ईरान के परमाणु हथियारों के कथित खतरे की बात उसी तरह है, जैसे इराक के पास 'सामूहिक विनाश के हथियार' होने का झूठा दावा किया गया था, जिसका इस्तेमाल अमेरिका के राष्ट्रपति बुश ने वर्ष 2003 में इराक पर आक्रमण करने के लिए किया था। यह उस झूठे दावे से भी मिलता-जुलता है कि मुअम्मर अल-गद्दाफी ने लीबिया में जनसंहार की योजना बनाई थी, जिसके आधार पर वर्ष 2011 में राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 'मानवीय संकट को रोकने' के लिए अमेरिकी हस्तक्षेप को उचित ठहराया था। ट्रंप ने पिछले दिनों वेनेजुएला में 'सत्ता परिवर्तन' लाने के लिए मोनरो सिद्धांत को नए सिरे से गढ़ा और ईरान के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए इस सिद्धांत का विस्तार किया है।

अमेरिका के ये सैन्य हस्तक्षेप अवैध थे और हैं। अमेरिका का राष्ट्रपति वहां की कांग्रेस की अनुमति के बिना किसी अन्य देश के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं कर सकता। ऐसे हस्तक्षेप संयुक्त राष्ट्र चार्टर के भी विरुद्ध हैं। किसी भी देश की ओर से दूसरे संप्रभु राष्ट्र में सत्ता परिवर्तन करना न केवल अवैध है, बल्कि अनैतिक भी है। जिस तरह रूस की ओर से यूक्रेन के खिलाफ छेड़ा गया युद्ध नाजायज है, उसी प्रकार अमेरिका द्वारा वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो का अपहरण करना तथा अमेरिका और इजराइल की ओर से ईरान के तत्कालीन सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह खामेनेई एवं उनके सहयोगियों को मार गिराना भी अवैध है। भारत ने इनकी मौत पर छह दिन बाद शोक व्यक्त किया।

इजराइल की संसद को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन इजराइली परिवारों के प्रति भारत की संवेदना व्यक्त की, 'जिनकी दुनिया सात अक्तूबर को हमास के बर्बर हमले में तबाह हो गई थी।' उन्होंने यह कहकर चौंका दिया कि 'भारत इस समय और भविष्य में भी पूरी दृढ़ता एवं विश्वास से इजराइल के साथ खड़ा है।' मगर उन्होंने गाजा में फिलिस्तीनी बस्तियों के लगभग पूरी तरह नष्ट हो जाने की निंदा में एक शब्द भी नहीं कहा। हालांकि, यह सच है कि हमास के बिना उकसावे वाले हमले में 1,219 इजराइली नागरिक मारे गए, लेकिन यह भी हकीकत है कि इजराइल की कार्रवाई में गाजा में 70,000 से अधिक फिलिस्तीनी नागरिकों की मौत हो गई।

इजराइल की संसद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भाषण 25 फरवरी, 2026 को हुआ था। इसके बाद अमेरिका और इजराइल ने 28 फरवरी को युद्ध की शुरुआत कर दी। ईरान ने जवाबी कार्रवाई करते हुए अरब देशों में कई अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमले किए। ट्रंप ने कहा कि युद्ध चार से पांच सप्ताह या उससे अधिक समय तक चल सकता है। इजराइल के प्रति उनके समर्थन ने भारत की उस संभावित भूमिका के रास्ते बंद कर दिए हैं, जिनके जरिए वह युद्ध समाप्त कराने या उसे अन्य अरब देशों तक फैलने से रोकने में मदद कर सकता था। अपनी नैतिक साख खोकर, भारत एक असहाय दर्शक बना हुआ है, जबकि युद्ध पूरे क्षेत्र यहां तक कि श्रीलंका के पास अंतरराष्ट्रीय समुद्री क्षेत्रों में फैल रहा है।

सत्ता परिवर्तन

इस युद्ध का मुख्य मुद्दा 'सत्ता परिवर्तन' है। किसी देश में शासन व्यवस्था कितनी भी खराब क्यों न हो, दूसरे देश को बलपूर्वक शासन बदलने का कोई अधिकार नहीं है। इस मानक के अनुसार, दुनिया भर में पचास से अधिक ऐसे देश हैं, जहां वर्तमान सरकार को बदलना आवश्यक है। मगर वास्तव में ऐसे कई तानाशाह अमेरिका के मित्र हैं और उस पर आश्रित हैं।

जून 2025 में अमेरिका ने इजराइल के उकसावे पर 'मिडनाइट हैमर' अभियान चलाया और बारह दिनों के बाद दावा किया कि 'ईरान की प्रमुख परमाणु संवर्धन इकाइयों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया है।' यदि यह दावा सच था, तो ईरान ने परमाणु हथियार या संवर्धित यूरेनियम का भंडार कैसे जमा किया होगा, जो अमेरिका के लिए खतरा पैदा करता हो? इसके अलावा ओमान, जो ईरान और अमेरिका के बीच मध्यस्थता कर रहा था, उसने स्पष्ट रूप से कहा था कि ईरान ने 'संवर्धित यूरेनियम का कोई भंडार जमा न करने और कभी भी परमाणु बम न रखने' पर सहमति जताई थी। रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने एक प्रासंगिक सवाल पूछा, 'ईरान में परमाणु हथियारों के सबूत कहां हैं?' अमेरिका की ओर से अतीत में शुरू किए गए कुछ अन्य युद्धों की तरह ईरान के खिलाफ युद्ध भी एक असत्य पर आधारित है।

इजराइल और ईरान दोनों एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन हैं। अमेरिका ने इराक और लीबिया से इजराइल को होने वाले खतरों को लगभग समाप्त कर दिया है। इजराइल ने सऊदी अरब के साथ कम से कम फिलहाल के लिए शांति समझौता कर लिया है। मध्य-पूर्व में एकमात्र और प्रमुख शक्ति बनने के इजराइल के रास्ते में केवल ईरान ही बाधा बना हुआ था। इजराइल ने अमेरिका को ईरान में सत्ता परिवर्तन कराने और ईरान को एक अधीन राज्य बनाने के लिए उकसाया है। यह एक घृणित सिद्धांत है। कोई भी शासन कितना भी बुरा क्यों न हो, सत्ता परिवर्तन करना उस देश की जनता का एकमात्र अधिकार है।

अमेरिका और इजराइल दोनों ही अपनी सफलता के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर दावे कर रहे हैं। एक सम्मानित इजराइली संवाददाता एलन मिजराही का दृष्टिकोण इससे अलग है। उनका कहना है कि यह एक ऐसा युद्ध है, जिसमें सैनिक नहीं हैं। दोनों ओर से मशीनों से ही युद्ध लड़ा जा रहा है। जो मशीनें सबसे घातक हैं और जिनकी आपूर्ति असीमित है, वही जीतेंगी।

भारत की साख कमजोर हुई

मध्य-पूर्व में भारत के मानवीय, आर्थिक और राजनीतिक हित अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, मगर इस क्षेत्र में बढ़ती हिंसा और विनाश के बीच वह अलग-थलग पड़ गया है। ईरान ने जार्डन, कुवैत, बहरीन, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और इराक में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया है। इस क्षेत्र में करीब एक करोड़ भारतीय रहते हैं। यहां भारत के तेल, निर्यात और अन्य आर्थिक हित हैं। भारत ने ईरान के चाबहार बंदरगाह में 37 करोड़ अमेरिकी डालर का निवेश करने की प्रतिबद्धता जताई है। इन हितों के बावजूद भारत की आवाज और प्रभाव न के बराबर है - और यह सब इजराइल के उद्देश्यों के प्रति भारत के सिद्धांतहीन समर्थन के कारण हुआ है।

नए दौर में

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

भारत ने अपना पक्ष तय कर लिया है। इसलिए अपने प्रधानमंत्री ने दुख व्यक्त किया जब दुबई, अबू धाबी और सऊदी अरब पर ईरान ने जवाबी हमले किए, लेकिन उनकी तरफ से पहले हमने ईरान के लिए थोड़ी-सी भी सहानुभूति नहीं सुनी। इसलिए जिनको खयाल था कि भारत इस युद्ध में निष्पक्ष रहेगा, उनको दोबारा सोचना चाहिए। हम निष्पक्ष नहीं हैं। हमारा पक्ष है वह वाला, जिसका नेतृत्व अमेरिका और इजराइल कर रहे हैं।

दुनिया इतनी बदल गई पिछले सप्ताह कि इस परिवर्तन को समझना मुश्किल है विशेषज्ञों के लिए भी। रही अपने घर की बात, तो हम भारतवासी अक्सर अंदरूनी समस्याओं में इतने उलझे रहते हैं कि कम ही बार नजरें उठा कर देखते हैं कि बाकी दुनिया में क्या हो रहा है। इस बार इतना बड़ा परिवर्तन हुआ है पश्चिमी एशिया में कि हम मजबूर हैं इसको गंभीरता से लेने के लिए। एक तो इसलिए कि जो हो रहा है, उसका सीधा असर हमारे शेयर बाजार पर दिखने लगा है अभी से और दूसरा इसलिए कि अगर ईरान, इजराइल और अमेरिका के बीच हो रहे युद्ध के कारण तेल की कीमतें बढ़ती हैं, तो अपने देश में महंगाई आसमान छूने लगेगी। इसकी चिंता क्यों न हो?

हमारी समस्या यह भी है कि हमको कभी न कभी तय करना पड़ेगा कि हम किसके साथ हैं। अयातुल्लाह खामेनेई के मारे जाने के कुछ दिन पहले भारत के प्रधानमंत्री इजराइल गए थे, जहां उन्होंने स्पष्ट किया कि हमारी दोस्ती इजराइल के साथ पक्की है और निजी तौर पर भी नेतन्याहू को वे अपना दोस्त मानते हैं। जब इजराइल और अमेरिका ने कुछ घंटों बाद ईरान पर हमला कर उसके 'सुप्रीम लीडर' और उनके कई साथियों को जान से मारा, तो लोग पूछने लगे कि क्या नरेंद्र मोदी जानते थे कि युद्ध होने वाला है! हालांकि इसके बारे में वही बता सकते हैं, लेकिन मैं उनमें से हूं जो नहीं मानती कि मोदी इतने बेखबर थे इजराइल जाने से पहले कि उनको किसी ने जानकारी नहीं दी कि युद्ध की आशंकाएं हैं।

मेरा मानना है कि भारत ने अपना पक्ष तय कर लिया है। इसलिए अपने प्रधानमंत्री ने दुख व्यक्त किया जब दुबई, अबू धाबी और सऊदी अरब पर ईरान ने जवाबी हमले किए, लेकिन उनकी तरफ से पहले हमने ईरान के लिए थोड़ी-सी भी सहानुभूति नहीं सुनी। इसलिए जिनको खयाल था कि भारत इस युद्ध में निष्पक्ष रहेगा, उनको दोबारा सोचना चाहिए। हम निष्पक्ष नहीं हैं। हमारा पक्ष है वह वाला, जिसका नेतृत्व अमेरिका और इजराइल कर रहे हैं। मेरी निजी राय है कि हमने सही टीम को चुना है विश्व के इस बदलते, खतरनाक खेल में।

दूसरी टीम की अगुआई कर रहा है हमारा पुराना दुश्मन चीन और उस टीम में जितने भी देश हैं, उनमें एक भी ऐसा नहीं मिलेगा आपको जिसमें असली लोकतंत्र हो। हमारी जगह हमेशा होनी चाहिए लोकतांत्रिक देशों की टीम में। दूसरी टीम में हमारे दुश्मन भी हैं और ऐसे भी देश हैं जिनसे हमारे लोकतांत्रिक सिद्धांत, हमारी विचारधारा और हमारी सभ्यता बिल्कुल अलग है।

हमारे देश में वामपंथी विचार के लोग हैं, जिनके लिए अमेरिका सबसे बड़ा शैतान रहा है दशकों से। ये लोग जानते हैं कि ईरान में मजहब की आड़ में अयातुल्लाह ने कितने जुल्म ढाए अपने ही लोगों पर, लेकिन इनको उनमें शैतानी कभी नहीं दिखती है। वामपंथियों के साथ खड़े हैं हमारे दूसरे समुदाय के नागरिक, जो इस्लामी मुल्कों का साथ देते हैं हर कठिनाई में, बावजूद इसके कि इस्लामी देश भारत का पक्ष कम ही लेते हैं दुनिया की सभाओं में। मैंने कभी सोचा था कि सिर्फ जिहादी सोच के मुसलिम इस्लाम के नाम पर पक्षपात करते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। कई अति समझदार, धर्मनिरपेक्ष मुसलिम भी अमेरिका के खिलाफ बोलने को तैयार हैं, लेकिन ईरान के खिलाफ नहीं।

पिछले सप्ताह जब लखनऊ और श्रीनगर में शिया मुसलमानों ने सड़कों पर उतर कर अयातुल्लाह खामेनेई की हत्या का मातम किया और अमेरिका मुर्दाबाद के नारे लगाए, तब एक नास्तिक दोस्त से बात हुई। उसकी शिकायत यह थी कि मैंने खामेनेई के मारे जाने की खुशी जताई सोशल मीडिया पर। मैंने 'एक्स' पर लिखा था कि यह खुशी की बात है दुनिया के लिए। मेरे दोस्त की राय अलग थी। उसने कहा, खामेनेई को इन्होंने मारा सिर्फ इसलिए कि वह उनकी बात नहीं मान रहा था। मैंने याद दिलाया कि इस कथित धर्मगुरु ने हमास और हिजबुल्लाह जैसी आतंकवादी लश्करें तैयार कर आतंक फैलाया। इस पर मेरे नास्तिक दोस्त ने कुछ नहीं कहा।

मेरी नजरों में सबसे बड़े जालिम वही हैं जो अपने बेसहारा और निहत्थे लोगों पर जुल्म ढाते हैं। ईरान में पिछले महीने से इतना जुल्म देखने को मिला है कि वहां की कहानियां सुननी मुश्किल हो गई हैं मेरे लिए। बच्चों पर गोलियां चलवाई गईं। महिलाओं के बलात्कार करवाए जेलों के अंदर, ताकि उनको जन्नत नसीब न हो और अस्पतालों में जाकर घायलों की हत्याएं कराईं। अमेरिका की तरफ से जुल्म जितने भी हुए हों, कम से कम ऐसा तो उन्होंने अपने लोगों के साथ कभी नहीं किया है।

मेरी राजनीतिक दृष्टि के दो बड़े खंबे हैं। पहला कि मैं हमेशा उनके साथ हूं जो लोकतंत्र के आधार पर अपने देश चलाते हैं और जिनके देशों में कानून प्रणाली का आधार मजबूत होता है। दूसरा यह कि मुझे सख्त नफरत है ऐसे राजनेताओं से जो धर्म-मजहब को अपनी राजनीति में घसीट कर उसकी शरण लेते हैं। ईरान में जबसे इस्लामी क्रांति आई थी सैंतालीस वर्ष पहले, तब से लोकतंत्र के आधार पर शासन नहीं चला है। खामेनेई अकेले नहीं थे, उनके नीचे जुल्म ढाने वाली कई संस्थाएं भी थीं, जिनकी अलग भूमिकाएं हैं। कुछ ऐसी हैं जो महिलाओं को जबरदस्ती हिजाब पहनाने का काम करती हैं, तो कुछ आम लोगों को जबरदस्ती काबू में रखने का काम करती हैं। जुल्म का यह पूरा ढांचा अभी तक कायम है।

इसलिए विशेषज्ञों का मानना है कि ईरान में तख्ता पलटना आसान नहीं होगा। हो सकता है यह लोग ठीक कह रहे हों।

विचार का जीवन

संदर्भ

राकेश सिन्हा

बहस में पक्ष-विपक्ष दोनों ही रहते हैं, पर इसका आधा समय बीत गया और अपेक्षा के अनुकूल सार्वजनिक बहस नहीं हुई। विचारों पर मंथन जितना बीसवीं शताब्दी में होता था, उसका लघु अंश भी अभी नहीं हो रहा है। अंग्रेजी अखबारों में तब भी उदासीनता थी, पर भाषाई अखबारों में गंभीर बहस की शृंखला दिखती थी। अखबारों की कतरनों में सूक्ष्म और विवादित वैचारिक प्रश्नों पर चर्चाओं में खुलापन था।

घटनाओं, प्रतिक्रियाओं और संवाद की प्रकृति के आधार पर हम किसी समाज की सामूहिक मानसिक उन्नति या अवनति का अनुमान लगा सकते हैं। प्रत्येक समाज के लिए ऐसी परीक्षा की घड़ी एक समयांतर पर आती रहती है। ऐसा ही एक अवसर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शताब्दी वर्ष है। संघ 1925 में शून्य से शुरू होकर आज शतक तक पहुंचा है। सिर्फ संघ की आयु अपने आप में महत्त्वपूर्ण नहीं है। यह वैचारिक लड़ाई का एक अपवादस्वरूप उदाहरण है। भारत की जिस परिभाषा को लेकर इसकी शुरुआत हुई, वह उस समकालीन परिभाषा का प्रतिकार था, जिसके पास सैकड़ों राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रूप से सुविख्यात विचारक थे। इतना ही नहीं, वह वैचारिक धारा दुनिया की मुख्यधारा की सोच से जुड़ी थी। इसके उलट संघ के संस्थापक डा केशव बलिराम हेडगेवार के पास न बड़ी पहचान थी, न ही राष्ट्रीय या यहां तक कि स्थानीय स्तर पर उनसे सहमति जताने वालों की फौज थी। 'केसरी' ने दो जुलाई 1940 को लिखा था कि विख्यात कुल या अमीर घराना जैसी बातें नहीं होने पर भी उन्होंने वह सब कुछ कर दिखाया, जो असंभव माना जाता था। उन्होंने भीड़ का हिस्सा समझे जाने वाले अतिसामान्य लोगों को संगठित कर संघ को असामान्य परिणाम देने वाला संगठन बना दिया।

स्वतंत्र भारत में संघ सामाजिक-आर्थिक घटनाओं में स्वाभाविक रूप से महत्त्वपूर्ण और कुछ अवसरों पर तो निर्णायक कारक बनता रहा है । राजनीतिक परिवर्तन भी इसी विचारधारा के प्रभाव का अप्रत्यक्ष परिणाम है, लेकिन इसकी सफलता का इससे भी बड़ा एक मानक है। संस्कृति और सभ्यता के प्रसंगों, विरासत और योगदानों को राष्ट्र की परिभाषा में गौण कर दिया गया था। नबगोपालमित्रा से महर्षि अरविंद, लोकमान्य तिलक से बिपिन चंद्र पाल जैसे विचारक उससे उबारने में जीवनपर्यंत लगे रहे। उनके योगदान तो महत्त्वपूर्ण थे, पर परिणाम सीमित रहा। संघ ने उसे सौ सालों में परिणामकारी बना दिया।

साधारणतया वैचारिक आंदोलनों का नेतृत्व विचारकों का कुलीन तबका करता है। शेष लोग उसके अनुगामी होते हैं। चाहे वह दुनिया का कम्युनिस्ट आंदोलन हो या भारत में धर्मनिरपेक्ष सोच। सीमित लोगों की सोच और असीमित लोगों की उपेक्षा कभी स्थायी और रचनात्मक नहीं बन पाती है। संघ ने इस पद्धति को नकार दिया। विचारों के सृजन में कुलीनता या पिरामिडीय पद्धति से अलग रास्ता अपनाया। इसने जमीन पर वैचारिक निरक्षरता को दूर किया। यह मुट्ठी भर वैचारिक कुलीनों से संचालित नहीं हुई। इसलिए इसके नेतृत्व और सामान्य कार्यकर्ताओं की सोच के बीच में भी खाई नहीं बनी। जितना नीचे का कार्यकर्ता ऊपर के नेतृत्व को देखता है, उतना ही ऊपर का नेतृत्व जमीन पर सक्रिय स्वयंसेवकों की ओर देखता है।

इस तरह का वैचारिक आंदोलन ही नैतिक मूल्यों को गढ़ पाता है। इसलिए जब संघ का आधार सीमित था तब भी उसकी नैतिक ताकत का असर समाज और राजनीति दोनों पर कई गुना अधिक था। यह नैतिकता व्यक्तिगत आचरण के साथ समाज के ज्वलंत प्रश्नों से साथ साक्षात्कार में प्रकट होता है। समाज की बीमारियों से लड़ने का जितना उत्साह होता है, उसी अनुपात में उसे लोगों का मौन समर्थन मिलता है। इसी मौन लोक-वैधानिकता के कारण संघ नेहरूवादी राज्य और शक्तिशाली मार्क्सवादी चिंतकों का मुकाबला करता रहा। इसलिए किसी भी संगठन को इसी मौन लोक-वैधानिकता, जो उसके नैतिक सूचकांक पर निर्भर रहता है, को मापते रहना चाहिए। इसी को आत्मालोचन भी कहते हैं।

शताब्दी वर्ष में वैचारिक प्रश्नों पर गहन चर्चा की अपेक्षा स्वाभाविक कांग्रेस जन असंतुष्ट हैं, पर हिंदुओं को वर्तमान पतन से उठाने के लिए उसके प्राचीन जीवन की श्रेष्ठता का आदर्श रखना क्या फासीवाद का द्योतक है? प्रत्येक राष्ट्र अपने इतिहास और पूर्वकालीन महापुरुषों के जीवन से अपने उत्थान की स्फूर्ति प्राप्त करता है। क्या यह कार्य फासीवादी है।'

आज हम 'हिंदुत्व', पंथनिरपेक्षता, वि-औपनिवेशीकरण, संस्कृति, जातीय-सांप्रदायिक चेतना आदि के प्रश्नों पर आरोप-प्रत्यारोप की मुद्रा में हैं। जयचंद्र विद्यालंकार, राधाकुमुद मुखर्जी, केपी जायसवाल, देवदत्त रामकृष्ण भंडारकर, नीलकंठ शास्त्री जैसे विचारकों की दुर्लभता के दौर से हम गुजर रहे हैं। जिस समाज में कलम से अधिक मुंह चलता है और मस्तिष्क से अधिक मन, वह श्रेष्ठता से दूर होता जाता है। इसे बदलना ही आज कामयाबी मानी जाएगी। संघ से विरक्त होकर मार्क्सवादी बने बालाजी हुद्दार ने 1940 में कहा था कि भारत की नव संस्कृति की खोज ही संघ की भूमिका है। राजनीतिक प्रश्रय से मार्क्सवादी-नेहरूवादी विचारधारा की प्रतिकूलता से लड़ने में अक्षम हैं। वे सभी अनुकूलताओं में शेर थे, पर प्रतिकूलताओं में वे कागजी शेर भी नहीं रह गए। यह एक महत्त्वपूर्ण संदेश है, जिसे सभी विचारधाराओं को आत्मसात करना चाहिए। खुलेपन से यह परिस्थिति पैदा नहीं होती है।

आशंकाओं के बीच

बाखबर

सुधीश पचौरी

एक 'युद्ध चिंतक' कहता है कि यह विश्वयुद्ध तो नहीं, लेकिन 'विश्वयुद्ध जैसा' लगता है। भारतीय मूल के एक अमेरिकी विशेषज्ञ कह उठते हैं कि यह युद्ध मध्यकालीन 'क्रूसेड' बरक्स 'जिहाद' का नया संस्करण है। बीच में टोक कर एंकर इसे 'भू-राजनीतिक वर्चस्व' की लड़ाई बताने लगता है।

उधर बम गिर रहे हैं, इधर 'गाल' बज रहे हैं। उधर बच्चे मर रहे हैं और हम कोरी हमदर्दी में मरे जा रहे हैं। वे गोलियां बरसा रहे हैं और हमारे कुछ नेता 'गाल' बजा रहे हैं। एक एंकर दो दिन से अपने चैनल पर चिंतामग्न है कि हे प्रभु यह 'युद्ध है कि 'महायुद्ध'? 'छोटा युद्ध' है कि 'विश्वयुद्ध-3'? एंकर समझाता है कि 'विश्वयुद्ध' लंबा चलता है, जिसमें सब शामिल होते हैं, लेकिन जिसे कोई नहीं जीतता। चालीस मिनट की यह चिंता तीन बड़े कारपोरेट द्वारा प्रायोजित है। हम हो रहे युद्ध की विभीषिका को भूल कर बाल की खाल निकालने लग जाते हैं कि यह 'विश्वयुद्ध 3' है कि नहीं। एक 'साम्राज्यवादी हमले' को 'महायुद्ध' या 'विश्वयुद्ध' बना कर हमारे सामने पेश किया जा रहा है।

एक 'युद्ध चिंतक' कहता है कि यह विश्वयुद्ध तो नहीं, लेकिन 'विश्वयुद्ध जैसा' जरूर लगता है। दूसरा कहता है कि यह 'विश्वयुद्ध' तो पिछले बीस बरस से चल रहा है। एक चर्चा में भारतीय मूल के अमेरिकी विशेषज्ञ कह उठते हैं कि यह युद्ध मध्यकालीन 'क्रूसेड' बरक्स 'जिहाद' का नया संस्करण है, यह 'ईसाई' बरक्स 'इस्लाम' के वर्चस्व की लड़ाई है। बीच में टोक कर एंकर इसे 'भू-राजनीतिक वर्चस्व' की लड़ाई बताने लगता है।

एक एंकर ईरानी प्रवक्ता से पूछ रही है कि भारत ने आज ही खामेनेई की हत्या पर शोक व्यक्त किया है। आप भारत से क्या चाहते हैं? वह कहता है, भारत और ईरान के तीन हजार साल पुराने संबंध हैं। भारत को हत्यारों और साम्राज्यवादियों का साथ नहीं देना चाहिए। यानी मान लिया कि भारत उसके दुश्मन के साथ है।

एक चर्चक इसका तुरंत खंडन करता है कि भारत की विदेश नीति अपने देश के हित से तय होती है... बताइए ईरान ने हमारा साथ कब दिया, जो हम दें। ईरान जब भी बोला, पाकिस्तान के पक्ष में बोला। 370 से लेकर पहलगाम तक ईरान पाक के पक्ष में रहा। भारत की विदेश नीति किसी के चलाए नहीं चलती। वह अपने हितों को केंद्र में रख कर चलती है। भारत के करीब एक करोड़ नागरिक खाड़ी देशों में फंसे हैं। हम उनकी जान बचाएं या मरने दें? इसी बीच अमेरिका की पनडुब्बी ईरान के एक जहाज को टारपीडो मार कर नष्ट कर देती है, तो विपक्ष चढ़ बैठता है कि युद्ध तो हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है और हमारा नेतृत्व चुप है। एक विपक्षी प्रवक्ता कहता है कि यह 'राष्ट्र विरोधी' रवैया है।

एक बहस यह भी चलने लगी है कि यह युद्ध कब तक चलेगा? शुरू में अमेरिका ने कहा कि चार-छह दिन में हम ईरान को घुटनों पर ला देंगे। वहां 'सत्ता परिवर्तन' कर देंगे, लेकिन जब ईरान अड़ गया, तो कहने लगे कि यह तीस-चालीस दिन तक चल सकता है और अब कहा जा रहा है कि सौ दिन लग सकते हैं।

अंकल सैम कहिन कि हमने सोचा था कि मामला जल्द निपट जाएगा, लेकिन लगता है ईरान और मार खाना चाहता है। हमारे पास बहुत गोला-बारूद है। अब जब तक ईरान पूरी तरह समर्पण नहीं कर देता, तब तक युद्ध चलेगा...। ईरानी प्रवक्ता तुरंत जवाब देते हैं कि हम आखिरी सांस तक लड़ेंगे। जब खामेनेई की जगह ईरान ने अपना सर्वोच्च नेता चुन लिया, तो अमेरिका ने कहा कि हम किसी लीडर को नहीं मानते। हमें तो ईरान में अपना बंदा चाहिए।

ऐसे ताल ठोंकू वातावरण में युद्ध लंबा खिंचने से होने वाले परिणामों की चिंता की जाने लगती है कि अगर ऐसा हुआ, तो सब लपेटे में आएंगे। ईरान ने 'होर्मुज जलमार्ग' बंद कर दिया है। भारत के सैकड़ों तेल टैंकर फंसे हैं। तेल आपूर्ति का क्या होगा? इस पर भारत का जवाब आता है कि देश के पास अभी चार से छह हफ्ते तक का तेल और गैस भंडार है। आगे के लिए वह तेल और गैस की 'वैकल्पिक शृंखला' खोज रहा है जो कि उपलब्ध है। इतने में अमेरिका कह देता है कि एक महीने तक भारत रूस से तेल खरीद सकता है। भारत की बल्ले-बल्ले होने लगती है। इस तरह अमेरिका 'डाल डाल', तो ईरान 'पात पात'। अमेरिका-इजराइल मिल कर ईरान को मारें, तो ईरान इजराइल और अमेरिका के खाड़ी दोस्तों को मारे।

इस युद्ध ने शंकराचार्य की कहानी से लेकर कई सारी कहानियों को किनारे कर दिया कि अचानक बिहार के सुशासन बाबू यानी नीतीश कुमार द्वारा राज्यसभा की सदस्यता के लिए फार्म भरने की कहानी ने चैनल चर्चाओं को बिहार की राजनीति की ओर मोड़ दिया। और तुरंत हाय नीतीश कि वाह नीतीश कि आह नीतीश होने लगा। रोने-बिलखने का शो देते कई कार्यकर्ता मानो गाने लगे कि 'जब तुम ही चले परदेस, लगा कर ठेस, ओ प्रीतम प्यारा, दुनिया में कौन हमारा!'

कार्यकर्ताओं का विरह और विपक्ष की वही 'हाय हाय' कि यह तो पहले से ही तय था कि बिहार में भी महाराष्ट्र माडल लागू होगा। एक विपक्षी नेता कहिन कि ये नीतीश को 'मादुरो' की तरह उठा ले जाना है, 'अपहरण' करना है। सत्ता प्रवक्ता कहिन कि नीतीश पर किसी का कोई दबाव नहीं। वे सब कुछ स्वेच्छा से कर रहे हैं। फिर सवाल हुआ कि नीतीश के बाद कौन? और जवाब आया कि सब कुछ 'विश्वगुरु' के हाथ जो 'राई को पर्वत करें, पर्वत राई माहिं'।

मार्था अकेली नहीं है

तनुजा चौबे

कहानी

आज फिर सामने वाली बहुमंजिला सोसायटी के नीचे से तेज-तेज झगड़े की आवाज आ रही थी। यह कोई नई बात नहीं थी। लगभग हर दूसरे दिन यही होता-कभी सड़क की सफाई को लेकर, कभी किसी आवारा कुत्ते को किसी ने पत्थर मार दिया हो तो उस पर। एक औरत जोर-जोर से चिल्लाती और आस-पड़ोस के लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकल आते। कुछ तमाशा देखते, कुछ हंसते और फिर अपने-अपने काम में लग जाते।

बहुमंजिला सोसायटी के सामने ही मंदिर है। रोज सुबह-शाम यहां आवाजाही लगी रहती। इंदु यह सब देखकर समझ गई थी कि आज भी वही शोर है। उसे कई बार यह दृश्य देखना पड़ा था, क्योंकि इंदु का मंदिर जाना और उस औरत का चिल्लाना अक्सर एक ही समय होता। मंदिर में ही किसी ने बताया था कि उस औरत का नाम मार्था है। वह ईसाई है और उसी बहुमंजिला की पहली मंजिल पर रहती है। बहुमंजिला विलासिता का प्रतीक था, जहां केवल संपन्न लोग ही फ्लैट ले सकते थे। इसका मतलब था कि वह किसी संपन्न परिवार से ही होगी।

आज भी शायद किसी बात ने उसे भड़का दिया था। इंदु मंदिर जाने के लिए घर से निकली तो सारी आवाजें साफ सुनाई दे रही थीं। उसके घर के गेट से ही बहुमंजिला का किनारे वाला हिस्सा दिखाई देता था। वहीं से वह अकसर मार्था को चिल्लाते हुए देखती-सुनती थी। अधिकतर जब सुबह की दिनचर्या शुरू होती, तभी उसका किसी न किसी से विवाद हो जाता।

गोरे रंग की मार्था, घुटनों तक की स्कर्ट और ब्लाउज पहने, छोटे-छोटे कटे बाल और हाथ में एक थैली लिए रहती। अगर वह यूं आक्रामक व्यवहार न कर रही हो, तो कोई यह नहीं कह सकता था कि वह मानसिक रूप से परेशान है। जब वह नीचे उतरती, तो सड़क के सारे आवारा कुत्ते उसे घेरकर बैठ जाते। ये कुत्ते बड़े खतरनाक माने जाते थे-लोगों के पीछे दौड़ते, गाड़ियों पर भौंकते, कभी किसी को काट लेते, कभी गिरा देते। लेकिन मार्था को देखते ही उनकी पूंछें हिलने लगतीं। वह उन्हें प्यार करती। धूप में, सड़क के किनारे, सोसायटी के गेट के पास कुर्सी डालकर बैठ जाती और कालोनी में घूमने वाले कुत्ते उसके आसपास जमा हो जाते। ऐसा लगता, मानो वह कोई महारानी हो और आसपास उसके सेवक बैठे हों।

कभी-कभी वह उन कुत्तों को ऊपर फ्लैट में भी ले जाती। फ्लैट वाले इसका विरोध करना चाहते, मगर वह इतनी झगड़ालू थी कि कोई उसका सामना नहीं करना चाहता था। उससे कोई भी बात करना पसंद नहीं करता, लेकिन उसे इन बातों की कोई परवाह नहीं थी। थैली से बिस्कुट निकाल-निकालकर वह कुत्तों को खिलाती रहती। कभी प्यार से सहलाती, कभी गले लगाती, कभी गोद में बैठा लेती। लोग उसे मजाक का विषय बना लेते। उसकी ऊंची आवाज और लगातार चिल्लाना किसी को भी उससे बात करने के लिए प्रेरित नहीं करता था।

कभी-कभी वह उन कुत्तों को ऊपर फ्लैट में भी ले जाती। फ्लैट वाले इसका विरोध करना चाहते, मगर वह इतनी झगड़ालू थी कि कोई उसका सामना नहीं करना चाहता था।

इंदु ने महसूस किया कि मार्था को कुछ बातों पर बहुत गुस्सा आता है। जो भी आदमी कचरा फैलाता, वह उस पर अंग्रेजी-हिंदी की मिली-जुली भाषा में चिल्लाने लगती। कोई आवारा कुत्ते को पत्थर मार देता तो उसकी शामत आ जाती। मार्था इतना शोर मचाती कि आसपास के सारे लोग बाहर निकल आते।

इसी बीच एक दृश्य रोज दोहराया जाने लगा। एक आदमी गुलाबी साइकिल पर रोज मंदिर आता। वह मार्था को लगातार देखता रहता-उतनी देर तक, जब तक वह मंदिर के भीतर न चला जाता। फिर वह मार्था से थोड़ी दूरी बनाकर बैठ जाता। मार्था उसे देखकर कभी अजीब-सी मुस्कान दे देती, कभी अचानक चुप हो जाती और कभी और जोर से चिल्लाने लगती।

कई दिनों तक यह क्रम चलता रहा। फिर वह आदमी मंदिर के गेट के पास बने पिलर पर चढ़कर बैठने लगा। उसका मुंह हमेशा मार्था की ओर रहता। कभी ध्यान मुद्रा में बैठ जाता, कभी जोर-जोर से गाने लगता। उधर मार्था सामने रखी कुर्सी पर बैठ कर किताब खोलकर पढ़ती रहती। दोनों बहुत देर तक एक-दूसरे को देखते रहते। कई बार मार्था उसे नीचे उतर जाने को कहती, तो वह चुपचाप उतरकर चला जाता।

एक दिन वह जोर-जोर से अपनी कापी से कविता पढ़ रहा था- 'तुम लगाकर बैठी हो धूप में कुर्सी, आज तक देखी नहीं हसीना तुम-सी। जरा एक बार सीधे देख लो मुझे भी, थक गया हूं सहते-सहते तुम्हारी नजरें तिरछी।' ये चार पंक्तियां इंदु को भी याद हो गई थीं। एक रोज जब इंदु मंदिर से लौट रही थी, तभी उसकी नजर मार्था की आंखों से मिली।

मार्था ने इंदु की तरफ हाथ बढ़ाया और बोली, 'आप रोज मंदिर जाती हैं न? आज पहली बार आपसे बात हो रही है।' इसके बाद जब भी इंदु निकलती, दोनों एक-दूसरे का अभिवादन करने लगीं। थोड़ी-बहुत बातचीत भी होने लगी। इंदु धीरे-धीरे मार्था के स्वभाव को समझने लगी थी। एक दिन उसने हिम्मत करके पूछा, 'आप अकेली रहती हैं?' मार्था बोली, 'मेरा बेटा है। अमेरिका में रहता है।' 'आप कभी-कभी वहीं जाती होंगी? तभी कुछ दिनों नजर नहीं आतीं?' 'हां।' 'और आपके पति?' मार्था चुप हो गई।

कुछ दिनों बाद, जैसे उसके भीतर बरसों से जमा बांध टूट गया।

'मैं उसे बहुत प्यार करती थी'। उसकी आवाज भर्रा गई। 'एक दिन उसने मुझे गुलाब दिया था। मुझे लगा था-प्रेम हमेशा साथ निभाता है। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। बेटा नहीं हुआ था तब तक, वह कभी-कभी शराब पीता था। धीरे-धीरे उसकी आदत बढ़ती गई। जब पीकर घर आता, तो पहले मुझे तोड़ता-शब्दों से, हाथों से-और फिर घर में तोड़-फोड़ मचाता। हर तरफ कचरा, गंदगी फैल जाती। कहीं भी उल्टियां करता, बोतलें तोड़ देता। घर डर और बदबू से भर जाता था। तभी से जब भी कचरा देखती हूं, खुद पर काबू नहीं रख पाती। ज्यादा शराब से उसका लिवर खराब हो गया और वह मर गया। तब से मुझे लगने लगा इंसानों से बेहतर ये कुत्ते हैं। अब यही मेरी दुनिया हैं।'

समय बीतता गया। एक दिन इंदु ने देखा—दोनों एक बेंच पर बैठे हाथ थामे हैं। मार्था अब शांत थी। धीरे-धीरे कालोनी में यह स्पष्ट होने लगा कि दोनों ने एक-दूसरे को अपना लिया है। इंदु ने सुना था कि उसने एक दिन मुस्कुराकर मार्था से पूछा था, 'क्या तुम मेरे साथ रहोगी?'

मार्था ने उत्तर में कुछ नहीं कहा। बस उसकी ओर देखकर मुस्कुरा दी। वही उसकी स्वीकृति थी।

अब धूप में रखी उस कुर्सी के पास दो कप चाय भी रखी दिखाई देती हैं। कुत्तों की टोली पहले की तरह आसपास बैठती है, पर अब वहां शोर नहीं, एक सुकून भरी खामोशी होती है। एक दिन इंदु वहां से गुजरी तो कवि ने मुस्कुराकर कहा,'अब मार्था अकेली नहीं है।'

समय सूचक

परिवर्तन में वैचारिक परतों की परख

जनसत्ता सरोकार

दुनिया के कई देश विभिन्न तरह की समस्याओं से गुजर रहे हैं और वैश्विक स्तर पर सत्ता परिवर्तन का दौर भी चल रहा है। मुश्किल यह है कि सत्ता परिवर्तनों के बीच नागरिकों की समस्याओं का कोई समाधान नहीं हो रहा है। राजनीति और समाज के इन्हीं विरोधाभासों को समझने में एंटोनियो ग्राम्शी का अहम योगदान रहा है। ग्राम्शी का जन्म 22 जनवरी 1891 को एलिस में हुआ था।

वे इटली के प्रसिद्ध मार्क्सवादी चिंतक, दार्शनिक पत्रकार और राजनीतिक कार्यकर्ता थे। अपनी उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए ग्राम्शी ट्यूरिन गए और वहां मजदूर आंदोलनों के साथ समाजवादी विचारों के प्रभाव में आए। 1921 में उन्होंने इटालियन कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में अहम भूमिका निभाई। ग्राम्शी ने 'निष्क्रिय क्रांति' की अवधारणा के तहत कहा था कि ऊपर से किया गया सामाजिक परिवर्तन जिसमें जनता की सक्रिय भागीदारी नहीं होती है, वह किसी भी तरह का बदलाव नहीं ला पाता है। उन्होंने अपने सिद्धांतों से तथ्य स्थापित किया कि सत्ता केवल आर्थिक नियंत्रण से नहीं चलती, उसके लिए विचारधारा भी महत्त्वपूर्ण है। ग्राम्शी के मुताबिक संस्कृति, शिक्षा और विचारधारा के योग से ही सत्ता को बनाए रखा जा सकता है। यानी किसी भी तरह के परिवर्तन के लिए वैचारिक और सांस्कृतिक संघर्ष भी जरूरी है। मुसोलिनी की सरकार ने 1926 में ग्राम्शी को गिरफ्तार कर लिया था। अदालत में उनके बारे में अभियोजक ने कहा था, 'हमें इस व्यक्ति को बीस साल तक काम करने से रोकना होगा।' ग्राम्शी को लगभग बीस वर्ष की कैद हुई थी।

एंटोनियो ग्राम्शी

उन्होंने कैद के दौरान ऐसे सिद्धांत विकसित किए जिसने विचारधारात्मक स्तर पर राजनीतिक चिंतन में गहरा प्रभाव छोड़ा। 27 अप्रैल 1937 को रोम में उनका निधन हो गया।

उपहार की कीमत

विमला रस्तोगी

बाल कथा

विराग दिल्ली के एक स्कूल में आठवीं कक्षा का छात्र था। उसके पापा इंजीनियर थे। उनका तबादला होते रहता था। इसलिए उन्होंने विराग को छात्रावास में रख दिया था।

विराग के पापा पिछले एक साल से नरौरा में कार्यरत थे। वहां रहने के लिए उन्हें खासी बड़ी कोठी मिली हुई थी। पीछे बड़ा बगीचा था, जिसमें तरह-तरह के फूलों और सब्जियों के पौधे लगे हुए थे। थोड़ी दूरी पर जूनियर इंजीनियर का मकान था। उनका बेटा प्रफुल्ल भी विराग के साथ उसी छात्रावास में था। दोनों साथ ही दिल्ली आते-जाते थे। वहीं पर मास्टर शर्मा जी का मकान था। उनकी बेटी शिप्रा वहीं के स्कूल की सातवीं कक्षा की छात्रा थी। उसे पेंटिंग में काफी रुचि थी।

विराग की एक बहन थी मानसी, जो उससे छह वर्ष छोटी थी। अभी वहीं के स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन मानसी खरगोश के पीछे दौड़ती-दौड़ती सड़क तक आ गई। सामने से आती कार पर उसने ध्यान नहीं दिया। वह सड़क पार करने के लिए जैसे ही बढ़ी शिप्रा ने लपक कर उसे खींच लिया। एक दुर्घटना टल गई। शिप्रा स्वयं मानसी को उसकी कोठी तक छोड़ने गई। तभी मानसी की मम्मी से उसकी मुलाकात हुई। मम्मी ने शिप्रा को अंदर बुलाकर बैठाया, वह शिप्रा की सूझबूझ से बहुत प्रभावित हुई। अगले दिन शिप्रा ने उन्हें अपनी बनाई हुई कई वस्तुएं दिखाई। मम्मी ने तारीफ कर शिप्रा को प्रोत्साहित किया। उस दिन से शिप्रा रोज ही मानसी के पास आने लगी। मानसी के पास कई अच्छे-अच्छे खिलौने थे। विराग और प्रफुल्ल से भी उसकी जान पहचान हो गई। शिप्रा ने विराग को भी अपनी पेंटिंग दिखाई। विराग ने अनमने भाव से देखा, कुछ कहा नहीं। तभी कोई और बात चल निकली अतः शिप्रा ने इस बात का बुरा न माना।

दीपावली पर विराग घर आया, शिप्रा ने अपने हाथ से बनाकर शुभकामना कार्ड बना कर मानसी की मम्मी को दिया। कार्ड मम्मी और पापा दोनों को बहुत पसंद आया, लेकिन विराग को नहीं। उसे तो महंगे वाले कार्ड ही पसंद आते थे। वह बनाने वाले की मेहनत नहीं, वस्तु की कीमत देखता था।

छुट्टियों में विराग पुनः घर आया। सब दोस्तों से मिला। शिप्रा से भी मिला। जनवरी में विराग का जन्मदिन आने वाला था। तैयारियां होने लगी। जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया। बड़े-बड़े उपहार लेकर लोग आए। विराग के दोस्त अपनी गाड़ी से दिल्ली से आए थे। प्रफुल्ल और हेमंत ने भी अच्छे उपहार दिए। शिप्रा ने अपने हाथ से बनाए हुए कागज व कपड़े के रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता उपहार में दिया था। विराग की मम्मी के कहने पर शिप्रा ने डांस भी किया।

अगले दिन शाम को प्रफुल्ल विराग के पास आया और पूछा- 'कहो दोस्त, उपहार कैसे लगे?' 'सब उपहार अच्छे थे बस शिप्रा ने बेगार टाल दी।' 'तुम ठीक कहते हो यार, वह हर किसी को तोहफे में अपने हाथ से बनी हुई चीज ही देती है, मेरे जन्मदिन पर भी उसने एक माडल बनाकर दिया था।' प्रफुल्ल ने कहा।

'वह अपनी कला सब पर लादती फिरती है। यह भी कोई बात है, हूं।' कहते हुए विराग ने शिप्रा के दिए फूलों का गुच्छा उठाकर बरामदे में फेंक दिया, जो सामने से आ रही शिप्रा के पांवों पर गिरा। शिप्रा ठगी सी रह गई। उससे झुक कर फूलों को उठाया भी न गया, उसकी आंखों में आंसू आ गए। बगीचे में खड़े पापा ने सब देख लिया था। वह लपक कर आए और कागज के फूलों का गुच्छा उठाते हुए बोले, 'तुम गलत समझ रही हो शिप्रा। विराग प्रफुल्ल को यह दिखा रहा था कि किसी वस्तु को कितनी दूर फेंक सकता है। उसकी यह गलती है कि उसने फेंकने के लिए फूलों के इस गुच्छे को चुना। फिर भी देखो, एक फूल भी नहीं निकला। कागज और कपड़े से बने

विराग की एक बहन थी मानसी, जो उससे छह वर्ष छोटी थी। अभी वहीं के स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन मानसी खरगोश के पीछे दौड़ती-दौड़ती सड़क तक आ गई। सामने से आती कार पर उसने ध्यान नहीं दिया। वह सड़क पार करने के लिए जैसे ही बढ़ी, शिप्रा ने लपक कर उसे खींच लिया। एक दुर्घटना टल गई।

यह सुंदर फूल ताजा फूलों से अच्छे हैं। ये कभी मुरझाते नहीं, सदा तरोताजा रहते हैं, तुम बच्चों की तरह।' कह कर उन्होंने फूलों का गुच्छा विराग को पकड़ा दिया। विराग ने चुपचाप उसे फूलदान में लगा दिया। 'विराग, तुम्हें पता है, कला प्रतियोगिता में शिप्रा को प्रथम पुरस्कार मिला है। तुम्हारी मम्मी ने मुझे बताया था।' पापा ने कहा।

'अच्छा, बधाई हो शिप्रा तुमने बताया नहीं', विराग ने जैसे-तैसे कहा। 'अगर मैं बताती तो तुम विश्वास करते?' शिप्रा ने कहा। विराग से जवाब देते न बना। पापा ही बोले, 'ये दोनों इधर-उधर की बातों में समय खराब करते रहते हैं। काम की बात इन्हें याद ही नहीं रहती। अब तुम सब लोग जाओ रसोई में। चंदू ने नाश्ता बना दिया होगा। मेज पर लगाओ, हम और तुम्हारी मम्मी अभी आते हैं।'

तीनों ने मिलकर नाश्ता मेज पर लगाया, मम्मी-पापा भी आ गए। सबने एक साथ नाश्ता किया। शिप्रा और प्रफुल्ल अपने-अपने घर चले गए। शाम को मम्मी-पापा बगीचे में बैठे थे। विराग भी वहीं था। मम्मी ने कहा, 'विराग किसी के दिए उपहार की कीमत मत आंको। उपहार देने वाले की भावना देखो। आज अगर पापा बात न संभालते तो शिप्रा को कितना दुख होता।' 'सारी मम्मी।' विराग ने अपनी गलती महसूस की। उस दिन के बाद से विराग ने किसी के उपहार का मजाक नहीं बनाया। उसने प्रफुल्ल को भी यही बात समझाई कि उपहार में देने वाले की मेहनत और भावना देखते हैं, कीमत नहीं।

स्त्री की अंतरराष्ट्रीय पीड़ा

जनसत्ता सरोकार

आज जब पूरी दुनिया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मना रही है तो दुनिया भर की नारीवादी स्त्रियां आपस में बंटी हुई हैं। एक तबका कह रहा है कि ईरान के सुप्रीम नेता खानेमई की मौत पर मातम मनाने वालीं महिलाएं पितृसत्ता के साथ हैं। वहीं, दूसरे तबके की नारीवादी महिलाओं का कहना है कि हम अमेरिका जैसे साम्राज्यवादी देश के इशारे पर अपने नारीवाद को परिभाषित नहीं कर सकती हैं।

पितृसत्ता पर आधारित इस दुनिया में स्त्री शोषण के जितने रूप हैं, उन्हें एक जगह इकट्ठा करना मुश्किल है। हर समाज की जितनी परतें खुलती हैं, उसमें स्त्री-शोषण का उतना ही नया रूप दिखता है। कहीं हिजाब और महिलाओं पर कई तरह के प्रतिबंध दिखते हैं, तो नंगी आंखों को भी समझ में आ जाता है कि यहां पर महिलाओं की क्या स्थिति है। वहीं, कोई समाज ऐसा होता है, जहां का कथित विकास और खुलापन हमारी आंखें चकाचौंध किए रहता है। लगता है, यहां पर तो सब कुछ ठीक होगा। यहां की स्त्रियां तो आजाद और शोषण-मुक्त होंगी। ऐसे ही चकाचौंध वाले समाज के बीच में एक दिन 'एपस्टीन फाइल' सामने आती है, जो

मार्गदर्शन

स्त्रियों के शोषण का जघन्यतम रूप है। यह अपराध तो इतना घृणित है जहां, बच्चियों को गरिमामय तरीके से स्त्री बनने ही नहीं दिया गया। बाल यौन उत्पीड़न वह अपराध है जो व्यक्ति को जिंदगी भर सहज वयस्क नहीं होने देता है।

हिजाब के मुल्क वालीं महिलाएं सवाल उठा रही हैं कि वह मुल्क क्या हम स्त्रियों को अधिकार दिलाएगा जहां यौन शोषण के आरोपी सत्ता के सभी स्तरों में हैं। जो देश खुद स्त्रियों का मुजरिम है, वह दुनिया को युद्ध में झोंक रहा है। युद्ध के अपराधी दावा कर रहे हैं कि हम ईरान की स्त्रियों को धार्मिक कट्टरपंथ से मुक्त कर रहे हैं। सवाल है कि किन स्त्रियों को मुक्त कर रहे हैं-जिसका पिता, पति, बेटा युद्ध में मारा जा चुका है। जिसकी स्कूल गई नन्ही सी बेटी बम गिरने से मारी गई। 160 स्कूली बच्चियों की कब्रें पूछ रही हैं कि इस तरह तुमने स्त्रियों को मुक्त किया है? स्कूलों के अंदर बच्चियों को मौत देना स्त्री-मुक्ति का कौन सा पथ है? किसी भी तरह के युद्ध ने स्त्री को और ज्यादा गुलामी व विनाश की राह पर ही धकेला है।

ईरान में मानवाधिकार और स्त्री-मुक्ति लाने के अमेरिकी दावों के बीच स्पेन से यूरोपीय संसद की सदस्य व युद्ध विरोधी नेता इरेने मोनतेरो ने कहा- अमेरिकी बमों और अवैध अतिक्रमण से आज तक किसी भी स्त्री को मुक्ति नहीं मिली है। न तो सीरिया में, न ईराक में, न लेबनान में और न ही अफगानिस्तान में। ईरान में भी कोई स्त्री-मुक्ति जैसी चीज नहीं होने वाली है। उनका आरोप है कि अमेरिका जैसी शक्तियां अपने साम्राज्यवादी युद्ध को न्यायोचित ठहराने के लिए महिला अधिकारों के पीछे छुप जाती हैं।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का संदेश यही था कि दुनिया भर की स्त्रियों का दुख एक है और उनकी मुक्ति का रास्ता भी एक है। साम्राज्यवादी युद्धों के इस दौर में दुनिया भर की स्त्रियों को नए सिरे से एकजुट होने की जरूरत है।

आलिवर ट्विस्ट : समाज का यथार्थ

जनसत्ता सरोकार

अमर किरदार

किसी देश और काल के आकलन के बहुत से पैमाने हो सकते हैं। उनमें से एक पैमाना यह भी है कि उस समाज में हाशिये के तबके के बच्चों की स्थिति कैसी है? चार्ल्स डिकेंस ने इतिहास की शान समझे जाने वाले विक्टोरिया-युग के लिए यही पैमाना चुना और उनकी कलम ने आलिवर ट्विस्ट को जन्म दिया।

चार्ल्स डिकेंस का उपन्यास 1837 से 1839 तक बेंटीज मिसलेनी में बोंज नाम से धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। 1838 में यह तीन खंडों वाली पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ। चार्ल्स डिकेंस के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने भी अपने बचपन में गरीबी को बहुत करीब से देखा था, इसलिए वे इस तरह के किरदार को गढ़ पाए। विक्टोरिया-युग का आदर्शवाद इस तरह के साहित्य को पसंद नहीं करता था, जहां गुरबत, अमानवीयता, अत्याचार और शासकीय भ्रष्टाचार का विवरण हो। लेकिन आम जनता ने चार्ल्स डिकेंस की इस रचना को खूब पसंद किया।

मुझे थोड़ा और खाना चाहिए...। आलिवर ट्विस्ट का यह संवाद ही इस उपन्यास की आत्मा है, जो घर और अभिभावकहीन बच्चे के संघर्ष को बयान करता है। आलिवर ट्विस्ट को जन्म देते ही प्रसव व्याधियों के कारण उसकी मां का निधन हो गया। ट्विस्ट को उसकी मां ने सड़क पर जन्म दिया था

चार्ल्स डिकेंस के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने भी अपने बचपन में गरीबी को बहुत करीब से देखा था, इसलिए वे इस तरह के किरदार को गढ़ पाए। वे विक्टोरिया-युग के सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले साहित्यकारों में थे।

और उसके पिता के बारे में किसी को पता नहीं था। आलिवर को एक अनाथालय में भेज दिया जाता है। अनाथालय के अमानवीय माहौल में ट्विस्ट बड़ा होता है। एक कारखाने से उसे सावरबेरी के पास नौकर के रूप में भेज दिया जाता है। सावरबेरी के घर भी अपमान और शोषण मिलने के बाद आलिवर लंदन की ओर निकल पड़ता है।

लंदन के रास्ते में आलिवर ट्विस्ट की मुलाकात जैक डाकिंस से होती है जो उसे अपराधियों के पास ले जाता है। अब आलिव जेबकतरों के गिरोह के बीच है। एक दिन वह जेब काटने के दौरान मिस्टर ब्राउनलो के हाथों पकड़ा जाता है। लेकिन ब्राउनलो ट्विस्ट के प्रति सहृदयी हो जाते हैं और उसे अदालत से बचाते हैं। अब आलिवर ट्विस्ट की जिंदगी में प्यार और आस-पास दयालु लोग हैं। लेकिन अपराधी गिरोह को लगता है कि आलिवर का उन लोगों के साथ रहना उनके लिए खतरा है। गिरोह को डर है कि आलिवर की वजह से पुलिस उन तक पहुंच सकती है। खूंखार डाकू बिल साइक्स और उसकी प्रेमिका नैंसी आलिवर को फिर से अपराधियों के बीच पहुंचा देते हैं। अब कहानी में आलिवर का सौतेला भाई मांक्स आता है, इसके साथ ही आलिवर के पिता के अस्तित्व का पता चलता है, जिनकी संपत्ति का आधा हिस्सा आलिवर को मिलना था। लेकिन मांक्स आलिवर का हिस्सा हड़पना चाहता है। तभी नैंसी का दिल आलिवर के प्रति नरम हो जाता है। वह ब्राउलो से संपर्क कर आलिवर के बारे में बताती है। नैंसी की हत्या कर दी जाती है, लेकिन आलिवर ट्विस्ट को ब्राउनलो अपने दत्तक पुत्र के रूप में अपना लेते हैं। कहानी सुखांत के साथ सुकून देती है।

राहत के साथ पाचन सुधारे छाछ

आजकल बच्चे और युवा बाजार में बिकने वाले डिब्बाबंद पेय तो चाव से पीते हैं, लेकिन उनका ध्यान कभी नारियल पानी या छाछ की तरफ नहीं जाता। हालांकि अब ये भी डिब्बाबंद आने लगे हैं जो बहुत फायदेमंद नहीं। वहीं अगर घर में बनी छाछ का सेवन किया जाए, तो इसके कई फायदे हैं और यह कुछ बीमारियों को रोकने में नुस्खे का काम करती है। ग्रीष्म ऋतु में छाछ का सेवन अच्छा माना गया है।

दूर करे निर्जलीकरण

गर्मी के दिनों में अक्सर शरीर में पानी की कमी हो जाती है। आमतौर पर लोग इस दौरान कमजोर या थका हुआ महसूस करते हैं। छाछ में चूंकि ज्यादातर पानी होता है, इसलिए यह शरीर में तरलता की पूर्ति आसानी से कर देता है। अगर कोई शरीर में पानी की कमी महसूस कर रहा है, तो इसका सीधा-सा नुस्खा है। बाहर से लौटने पर कुछ देर के अंतराल के बाद वह ठंडी छाछ ले। यों इसे दोपहर के भोजन के साथ भी लिया जा सकता है। बिना नमक वाली छाछ अधिक फायदेमंद है।

हड्डियां हों मजबूत

दूध से बने इस तरल पदार्थ में हड्डियों को मजबूत करने वाले कैल्शियम और फासफोरस तथा प्रोटीन होता है। इसलिए छाछ को दैनिक आहार में शामिल करने से हड्डियां तो मजबूत होती ही हैं, वहीं पोषक तत्त्वों की भी पूर्ति हो जाती है। मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए आसान नुस्खा यही है कि इसे रोज नाश्ते और भोजन के साथ नियमित रूप से लें। यह युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक के लिए फायदेमंद है।

पाचन रखे दुरुस्त

छाछ पेट की गर्मी को सहजता से शांत कर देती है। यह पाचन क्रिया को दुरुस्त कर जठराग्नि को बढ़ा देती है। नतीजा इससे भूख बढ़ जाती है। यह न केवल पेट में जलन और वायु विकार को दूर करती है, बल्कि कब्ज से भी राहत दिलाती है। इन सभी समस्याओं को दूर करने के लिए यही सरल नुस्खा है। इसके लिए जीरा और अजवाइन भून कर पीस लें और इसे चुटकी भर सेंधा नमक के साथ एक गिलास छाछ में मिला लें। इससे अपच में भी राहत मिलेगी। पाचन तंत्र भी बेहतर होगा। सेंधा नमक के साथ नियमित रूप से छाछ पीने से आंतों की ही नहीं, यकृत की भी सफाई हो जाती है। अगर किसी को बवासीर की शिकायत है, तो उसे छाछ में त्रिफला चूर्ण मिला कर लेना चाहिए।

मर्ज अनेक उपाय एक

छाछ की अच्छी बात यह है कि यह न केवल शरीर के विषैले तत्त्वों को बाहर निकाल देती है, बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूत कर देती है। यह उच्च कोलेस्ट्राल को कम करती है। इसलिए यह दिल की सेहत के लिए भी अच्छा है। गौरतलब है कि सेंधा नमक और भुनी हुई अजवाइन के साथ नियमित रूप से छाछ पीने से 'मेटाबालिज्म' यानी

नुस्खे

चयापचय बढ़ता है। भोजन आसानी से पचता है और शरीर को ऊर्जा मिलती है। इससे वजन भी नियंत्रित रहता है। इसी तरह उल्टी और जी मिचलाए, तो छाछ में जायफल थोड़ा-सा पीस कर मिला लें। इस छाछ को पीने से आराम मिलेगा। छाछ के इस्तेमाल में सावधानी बरतनी चाहिए। किसी को की कफ समस्या है, तो उसे परहेज करना चाहिए। वहीं खट्टी छाछ पीने से बचना चाहिए।

अपनी अपनी कहानी

हर में अक्सर यह लगता होगा कि हमारे जीवन में कोई न कोई कहानी होती है, जिसे हम किसी को सुनाना चाहते हैं। पर 'ब्रांड' यानी मशहूर होने और शोर के पीछे भागता समाज यह तय नहीं कर पाता कि योग्यता ही अपने आपमें कीमत या पैमाना होती है। हालांकि विकसित समाज को उस कहानी को वह जगह देना भी चाहिए। हमारे जीवन में भी ऐसा होता है। हमारी कहानी तब तक कोई नहीं सुनना चाहता, जब तक हमारी कोई 'ब्रांड वैल्यू' नहीं हो जाती। यानी हमारा कद ऊंचा नहीं हो जाता। यह भी कि एक पल में कोई किसी को उसकी कहानी में छोटा भी कर सकता है। कई बार कुछ मशहूर लोगों को भी अपनी कहानी सुनाने और उसके लिए जगह हासिल करने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। कहानी को तब तक कोई सुनना नहीं चाहता, जब तक कहानीकार की कहानी कोई मुकाम नहीं हासिल करती। वैसे लोगों के बारे में बस अंदाजा ही लगाया जा सकता है, जो अपनी कहानी रोज बुनते है, उस संघर्ष और श्रम की कहानी किसी को सुनाना चाहते हैं।

पुस्तक-संस्कृति

नंदितेश निलय

एक अदद चाह

इसे एक संदर्भ के साथ समझने की कोशिश करते हैं। उसका नाम सुग्गा था। अपनी दुनिया का एक मौन और विनम्र कहानीकार। एक दिन वह ट्रेन में था और अपनी कहानी सुनाना चाह रहा था। उसने ठान लिया कि वह अपनी कहानी किसी को भी सुनाएगा- चाहे वह कोई हो। ट्रेन में पास बैठे सहयात्री से उसने कहा- 'क्या आप जयपुर जा रहे हैं?' दाढ़ी वाला व्यक्ति अपने चेहरे पर गंभीरता ओढ़े जवाब देने के बजाय सुग्गा से ही पूछ बैठा, 'आप जयपुर क्यों जा रहे हैं? मुझे यकीन है कि आप साहित्य महोत्सव में नहीं जा रहे होंगे।' सुग्गा ने जवाब दिया, 'मुझे साहित्य महोत्सव के बारे में कोई जानकारी नहीं है। मैं एक आम आदमी हूं। बस पढ़ना-लिखना पसंद है। स्कूल के बच्चों को संगीत सिखाता हूं। मगर मुझे कहानियां लिखना पसंद है। क्या आप मेरी कहानी सुनना चाहेंगे?'

वह गंभीर व्यक्ति एक शरारती मुस्कान के साथ अपने अहं को संभाले अपनी डायरी देख रहा था। उसने कहा, 'ओह! मैं एक अंतरराष्ट्रीय लेखक हूं। आपने मेरी तस्वीर देखी होगी। मैं वहां साहित्य उत्सव में अपनी बेहद ऊंचे दर्जे की रचनाएं पढ़ने जा रहा हूं। क्या आप मेरी कहानियां सुनना चाहेंगे?' सुग्गा को भ्रम हो रहा था। फिर भी उसने पूछा, 'अगर मैं आपकी कहानी सुनूंगा, तो क्या आप मुझे अपनी कहानी सुनाने का मौका देंगे?' उसका इतना कहना उस सज्जन की दाढ़ी-मूंछ की रंगों को बदलने के लिए काफी था। और वह 'आप-आप' की लखनवी तहजीब भी गायब हो गई।

उसने कहा- 'तुम जानते हो मैं कौन हूं? मैं शब्दकोश हूं और मुझे कहानीवाला के नाम से भी जाना जाता है... दुनिया भर में मुझे सुना जाता है... मेरी फीस लाखों में है। मेरा अपना प्रकाशन है। यह है मेरी 'ब्रांड वैल्यू'। तुम्हारी क्या है?'

इतना सुनते ही सुग्गा की आवाज ही कहीं दब गई। मानो प्रजातंत्र की अंतिम सीढ़ी पर खड़ा, वह अंतिम आदमी। वह मौन और मद्धिम-सा हो गया। उसकी उड़ान थम-सी गई। वह अंदर से कुछ उद्विग्न लग रहा था। फिर भी उसने कहा, 'माफ कीजिए आदरणीय शब्दकोश सर। कृपया आप वह कहानी मुझे सुनाएं, जो आपकी प्रिय कहानी है और सबसे अच्छी भी।' यह सुनते ही शब्दकोश यानी कहानीवाला कुछ अकड़ गया, और अकड़ गई उसकी तंत्रिकाएं भी, जो उसे उसके घमंड की कहानी सुनाती रहीं। उसकी जबान तल्ख हो गई और नजरें सूखी। उसने अपनी सारी बेरुखी को बटोरकर कहा, 'सबसे अच्छी से तुम्हारा क्या मतलब है? मेरी सारी कहानियां ऊंचे दर्जे की हैं। मुझे साहित्य महोत्सव में आमंत्रित किया गया है। हजारों लोग मेरा इंतजार कर रहे होंगे। अपने पाठकों के लिए मैं हीरो हूं। और तुम बस बेवकूफों जैसी बातें कर रहे हो। अब मैं समझ सकता हूं कि तुम किस तरह के इंसान हो और तुम्हारी कहानी का स्तर कैसा होगा? खैर, यह बताओ कि तुम कहां और क्यों जा रहे हो?'

कद के पैमाने

सुग्गा ने जवाब दिया, 'मैं अपनी कहानियों के साथ साहित्य महोत्सव में हिस्सा लेने को इच्छुक हूं। शायद किसी को मेरी कहानी काम की लग जाए।' शब्दकोश अपनी शरारती मुस्कान रोक नहीं पाया। उसने कहा, 'तुम्हारे जैसे लोग सिर्फ भावनाओं से भरे रहते हैं। पहले सफल और मशहूर बनो। फिर कहानी सुनाना।'

एक दिन रुकने के बाद सुग्गा उस शहर से वापस लौट रहा होता है। रेलवे स्टेशन पर उसकी बातचीत एक कुली से होती है।

> *कई* बार कुछ मशहूर लोगों को भी अपनी कहानी सुनाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। कहानी को तब तक कोई सुनना नहीं चाहता, जब तक कहानीकार की कहानी कोई मुकाम नहीं हासिल करती। वैसे लोगों के बारे में बस अंदाजा ही लगाया जा सकता है, जो अपनी कहानी रोज बुनते है, उस संघर्ष और श्रम की कहानी किसी को सुनाना चाहते हैं।

कुली कहता है, 'जब लोग जयपुर से लौटते हैं, तो वे हमेशा खुश रहते हैं। आखिरकार हम राजस्थानी हैं और हमारे लिए अतिथि देवो भव। मगर आप उदास क्यों दिख रहे हैं?' उसकी बात सुनकर सुग्गा भावुक हो गया और बोला- 'मैं एक कहानीकार हूं। मेरा नाम सुग्गा है, लेकिन कोई मेरी कहानी सुनता ही नहीं।' यह सुनते ही उस कुली का हावभाव बदल गया।

कहानी का श्रोता

उसकी आंखें भर आईं और वह वहीं बैठ गया। उसने कहा, 'ट्रेन आधे घंटे लेट है। क्या आप मुझे अपनी कहानी सुना सकते हैं? देखिए, मैं आपकी कहानी भले न समझ पाऊं, पर सुनूंगा जरूर।' यह सुनते ही मानो सुग्गा एक 'ब्रांड' बन गया। उसने कहा, 'कौन-सी कहानी? मेरी कहानियां मेरे दिल के अंदर हैं भाई। सभी की कहानियां दिल ही में तो होती हैं। आप अपनी कोई कहानी सुनाइए।' कुली हैरान रह गया। उसने कहा, 'सर, मजाक मत करिए। मैं एक आम आदमी हूं, लेकिन मेरी कहानियां बहुत भारी हैं। वे आपकी तरह दिल के अंदर नहीं, बल्कि मेरे सिर पर बैठी रहती हैं। अब आप जल्दी से अपनी कहानी सुनाइए। मैं आपको हताश लौटते नहीं देख सकता।'

आखिर सुग्गा ने बताया कि जयपुर आते वक्त मेरी भेंट ट्रेन में एक सज्जन से हुई थी, जो थोड़ी ही देर में कुछ छोटा और कमतर कर देते हैं। कुछेक मिनटों में मैं अपना अर्थ खो बैठा। अब यहां स्टेशन पर मैं फिर से किसी से मिला, जिसने मुझे अगले ही पल बहुत बड़ा आदमी बना दिया। मेरी 'ब्रांड वैल्यू' बन जाती है। उसने मुझे सुना भी।' तभी ट्रेन आ गई और कुली ने कहा, 'यह कहानी दिल को छू गई। पैसा नहीं ले सकता!' स्टेशन और ट्रेन के शोर में कुछ भी सुनना संभव नहीं था, पर किसी ने किसी की कहानी सुन ली।

सफलता की दौड़ में प्रतिस्पर्धा की सीमा

आज के दौर में प्रतिस्पर्धा मानव जीवन का एक अहम पहलू बन गई है। इसमें दोराय नहीं कि प्रतिस्पर्धा सफलता के लिए प्रेरित करती है, लेकिन इसकी निरंतरता के नकारात्मक परिणाम भी सामने आ सकते हैं। दूसरों से लगातार तुलना करने के दबाव में प्रतिस्पर्धा कई बार हीन भावना या ईर्ष्या में बदल सकती है, जो मानसिक स्वास्थ्य और समाज में व्यक्तिगत छवि को नुकसान पहुंचा सकती है। इससे कुंठा, तनाव और बेचैनी जैसी समस्याएं पैदा होने की संभावनाएं बनी रहती हैं। इस स्थिति से बचने के लिए जरूरी है कि प्रतिस्पर्धा के दायरे को सीमित रखा जाए, दूसरों से खुद की तुलना करने के बजाय अपनी क्षमताओं को स्वीकार किया जाए और उसमें सुधार लाया जाए।

जीवन शैली

आत्म-मूल्यांकन

प्रतिस्पर्धा का मतलब अंधी दौड़ नहीं, बल्कि आत्म-मूल्यांकन से अपनी क्षमताओं को बढ़ाकर बेहतर प्रदर्शन करना या सफलता हासिल करना है। किसी व्यक्ति की योग्यता और मूल्य परीक्षा के अंक या दूसरे की उपलब्धि से तय नहीं होते हैं। अपनी कमियों को स्वीकार करना और उनमें सुधार लाना ही सही दृष्टिकोण है। प्रतिस्पर्धा का अर्थ केवल दूसरों को पीछे छोड़ना नहीं, बल्कि साथ मिलकर सीखना और आगे बढ़ना होना चाहिए। जरूरत से ज्यादा प्रतिस्पर्धा सहयोग और सामूहिक प्रयासों में बाधा डाल सकती है। इस स्थिति में व्यक्ति अपनी सफलता पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है और समूह के रूप में काम नहीं कर पाता। इससे सहयोग और संचार की कमी हो सकती है, जो निश्चित रूप से प्रगति एवं नवाचार में व्यवधान उत्पन्न करती है।

प्रेरणा स्रोत

कई बार प्रतिस्पर्धा में हम सामने वाले को अपना अहितकारी मानने लगते हैं। इसी भावना से हम अपने लक्ष्य को हासिल करने का प्रयास करते हैं, मगर हम भूल जाते हैं कि यह लक्ष्य वास्तव में हमने नहीं, बल्कि सामने वाले से प्रतिस्पर्धा ने तय किया है। जब हम दूसरों से आगे निकलने में सक्षम नहीं हो पाते हैं, तो खुद को कमतर महसूस करने लगते हैं, जिसका सीधा असर हमारी क्षमताओं पर पड़ता है। कई बार ईर्ष्यावश हम दूसरों की सफलता में भी बाधा उत्पन्न करने की कोशिश करते हैं। इसलिए जरूरी है कि अपने प्रतिस्पर्धी को चुनौती के बजाय प्रेरणा स्रोत की तरह देखा जाए, जिससे हमारे प्रयासों को नई ऊर्जा और ताकत मिल सके।

> *जब हम दूसरों से आगे निकलने में सक्षम नहीं हो पाते हैं, तो खुद को कमतर महसूस करने लगते हैं, जिसका सीधा असर हमारी क्षमताओं पर पड़ता है।*

प्रदर्शन का दबाव

प्रतिस्पर्धा के नकारात्मक प्रभावों में से एक है इससे उत्पन्न होने वाला दबाव और तनाव। यही दबाव चिंता, अवसाद और स्वास्थ्य संबंधी अन्य समस्याओं का कारण बन सकता है। इसके अलावा प्रतिस्पर्धा कई बार अनैतिक व्यवहार को भी जन्म दे सकती है। यानी आगे निकलने के लिए ईमानदार प्रयासों के बजाय अनैतिक हथकंडे अपनाकर अपने प्रदर्शन को बेहतर दिखाने की कोशिश करना। इस तरह का व्यवहार व्यक्ति के आत्मविश्वास को भी कमजोर करता है। अत्यधिक प्रतिस्पर्धा का भाव असफलता का भय पैदा करता है।

जीवन शैली बदलें थायराइड से बचें

थायराइड ऐसा रोग है जिसकी ओर ध्यान देर से जाता है। आयुर्वेद इसे वात, कफ और पित्त से जोड़ कर देखता है। दरअसल, गलत खानपान और शारीरिक श्रम के अभाव में लोगों को कई तरह की बीमारियां हो रही हैं। कुछ रोगों की वजह हमारी ग्रंथियों से भी जुड़ी हैं। इन्हीं में से गंभीर रोग है- थायराइड। यह गले की एक ऐसी ग्रंथि है जो ठीक सांस नली के ऊपर होती है। यह शरीर में पाई जाने वाली सबसे बड़ी अंतस्रावी ग्रंथियों में से एक है। इसमें गड़बड़ी होने से ही थायराइड होता है।

रोग का सिरा

आज जिस तरह की लोगों की जीवनशैली है, इसमें अक्सर लोग देर रात तक जागते हैं। यह दूसरी बीमारियों के साथ थायराइड की भी वजह है। अधिक तनाव और अवसाद से भी समस्या जटिल हो रही है। नमक की मात्रा कम या अधिक होने और आहार में सोया उत्पाद की मात्रा ज्यादा लेने से भी यह रोग हो सकता है। आयोडीन की कमी से भी यह रोग हो जाता है। महिलाओं में हार्मोनल असंतुलन, तनाव और गर्भावस्था के बाद थायराइड के लक्षण दिखते हैं। मधुमेह से भी इसका जोखिम रहता है। अवसाद को नियंत्रित करने की दवाइयां भी नुकसान करती हैं।

सेहत

ग्रंथि की भूमिका

थायराइड ग्रंथि में बनने वाला थायरोक्सिन प्रोटीन और वसा के चयापचय को नियंत्रित रखता है। यह हार्मोन न केवल हृदयगति और रक्तचाप को काबू में रखता है, बल्कि रक्त में चीनी और कोलेस्ट्राल की मात्रा को भी संतुलित रखता है। यह हड्डियों और मांसपेशियों को भी स्वस्थ रखता है। थायराइड ग्रंथि टी-3 और टी-4 थायराक्सिन नामक हार्मोन बनाती है जो पाचन तंत्र और दिल की धड़कन से लेकर शरीर के तापमान तक को प्रभावित करती है। अगर इस ग्रंथि में समस्या पैदा होती है, तो हार्मोन का संतुलन बिगड़ जाता है। महिलाओं में यह समस्या अनुवांशिक कारणों से होती है, वहीं ज्यादा उम्र में गले की ग्रंथियों में समस्या होने से थायराइड हो जाता है।

लक्षण और संकेत

आमतौर पर थायराइड से जुड़े दो तरह के विकार सामने आते हैं। एक में थायराइड ग्रंथि ज्यादा सक्रिय हो जाती है, तो दूसरे में यह कम सक्रिय होती है। अति सक्रिय होने पर शरीर इससे बनी अधिक ऊर्जा को खर्च करने लगता है। इसे 'हाइपरथायरिज्म' कहा जाता है। तब यह रोग पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को अधिक होता है। इस स्थिति में उनका मासिक धर्म अनियमित हो जाता है। घबराहट, चिड़चिड़ापन और अनिद्रा के लक्षण दिखते हैं। अधिक पसीना आता है। बाल झड़ने लगते हैं। ज्यादा भूख लगती है। हाथ कांपने और वजन घटने जैसे लक्षण भी दिखते हैं। कम सक्रिय थायराइड में जोड़ों में दर्द, मांसपेशियों में अकड़न और हमेशा थकान रहने जैसे लक्षण दिखते हैं। बार-बार भूलने और धड़कन धीमी होने की भी समस्या पैदा होती है। मरीज अवसाद में दिखता है। कब्ज और त्वचा में सूखापन भी लक्षण है।

निदान की राहें

थायराइड से बचने के लिए पर्याप्त नींद जरूरी है। यह बीमारी अस्वस्थ आहार और तनावपूर्ण जिंदगी की वजह से होती है। ग्रंथि संबंधी कुछ जांच के बाद चिकित्सक दवाइयां निर्धारित करते हैं। उपचार से मरीज स्वस्थ होने लगता है। चिकित्सक हर वर्ष थायराइड की जांच कराने की भी सलाह दे सकते हैं। महिलाओं को विशेष ध्यान रखने की जरूरत होती है। थायराइड के मरीजों को तैलीय भोजन और मसालेदार खाद्य पदार्थों से दूर रहने के लिए कहा जाता है। चाय और काफी का सेवन बंद करने की सलाह दी जाती है। मैदे से बनी कोई भी चीज खाने से बचें। सच यही है कि आहार से भी इस रोग को काबू किया जा सकता है। इसलिए भोजन में प्रचुर मात्रा में हरी पत्तेदार सब्जियों को शामिल किया जाना चाहिए। रात में हल्दी-दूध लिया जा सकता है। फलों की मात्रा बढ़ा दें।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

जायका ऐसा भाए, खाए बिन रहा न जाए

लच्छा मूली

मूली की सामान्य सब्जी तभी अच्छी लगती है, जब उसे पत्तों के साथ बनाया जाए। अगर बिना पत्तों के बनानी हो तो, इसे लच्छेदार तरीके से बनाया जा सकता है। इससे उसका कड़वापन भी खत्म हो जाता है और स्वाद भी लाजवाब होता है। मूली स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद मानी जाती है। इसका जायका थोड़ा भिन्न हो, तो खाने का भी मजा जा आता है।

रसोई

सामग्री

ताजा मूलीः 500 ग्राम, हरी मिर्चः तीन, प्याजः दो, लहसुनः चार-पांच कलियां, हल्दीः आधा चम्मच, जीराः एक चम्मच, कसूरी मेथीः डेढ़ चम्मच, गर्म मसाला पाउडरः एक चम्मच, नींबू का रसः एक चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

सबसे पहले मूली को अच्छी तरह धो लें और फिर उसे कपड़े से साफ कर लें। अब उसे मोटे आकार में कद्दूकश कर लें और एक थाली में कुछ देर के लिए ढककर रख दें। इसी बीच प्याज-लहसुन और अदरक का पेस्ट तैयार कर लें। साथ ही टमाटर भी बारीक काट लीजिए। इसके बाद कद्दूकश की गई मूली में आप देखेंगे कि थाली में नीचे रस निकल आया होगा, जिसे उसी में रहने दें, क्योंकि मूली की लच्छेदार सब्जी बनाने के लिए उसमें पानी नहीं डाला जाता है, इसे मूली से निकले रस में ही पकाना होता है। अब एक कड़ाही में तेल गरम करें और उसमें जीरा तथा मेथी दाना भून लें। फिर प्याज-लहसुन-अदरक का पेस्ट इसमें डालकर हल्का सा भून लें। इसके बाद कटे हुए टमाटर इसमें डाल दें और अच्छी तरह मिला लें। साथ ही इसमें थोड़ा सा पानी डालकर तब तक पकाएं, जब तक कि गाढ़ी तरी न बन जाए। इसके उपरांत कद्दूकश की गई मूली उसके रस के साथ कड़ाही में डाल दें। अब इसमें कटी हुई हरी मिर्च, गर्म मसाला पाउडर, हल्दी, नमक और कसूरी मेथी मिलाकर ढक्कन लगा दें। दस-बारह मिनट तक पकाएं। इस दौरान बीच-बीच में इसे चलाते रहें। अंत में इसमें नींबू का रस निचोड़ कर अच्छी तरह मिलाएं और रोटी, ब्रेड या परांठे के साथ परोसें।

मलाई राजमा

राजमा ज्यादातर लोगों को पसंद आता है, लेकिन मलाई राजमा का अपना ही स्वाद होता है। राजमा अगर लाल हो, तो ज्यादा बेहतर होता है। इसे बनाने में ज्यादा समय नहीं लगता है, बशर्ते राजमा पहले से भिगोए हुए हों। इन्हें कुकर में उबाला भी जा सकता है, लेकिन उसमें थोड़ा वक्त लग जाता है।

सामग्री

लाल राजमाः 250-350 ग्राम, दहीः 150 ग्राम, मलाईः आधा कप, प्याजः एक, टमाटरः तीन, अदरकः एक इंच, लहसुनः चार-पांच कलियां, मिर्च पाउडरः एक चम्मच, हल्दी पाउडरःआधा चम्मच, गरम मसाला पाउडरः एक चम्मच, कसूरी मेथीः एक चम्मच, नमक स्वादानुसार।

विधि

लाल राजमा को धोकर पांच-छह घंटे तक पानी में भिगोने के लिए रख दें। या फिर उन्हें कुकर में भी उबाला जा सकता है। इस बीच लहसुन और अदरक छीलकर उसका पेस्ट तैयार लें। साथ ही प्याज और टमाटर को बारीक काट लें। अब एक कड़ाही में तेल गरम करके उसमें जीरा और मेथी दाना भून लें। फिर कटा हुआ प्याज डालकर उसे सुनहरा रंग आने तक भूनें। इसके बाद लहसुन और अदरक का पेस्ट डाल दें और इसे अच्छी तरह मिला दें। हल्का-सा भूनने के बाद इसमें कटे हुए टमाटर डाल दें। साथ ही मिर्च पाउडर और हल्दी में मिला दें। अब थोड़ा सा पानी डालकर इसकी गाढ़ी तरी बना लीजिए। फिर उबले हुए राजमा इसमें डाल दें। साथ ही धनिया पाउडर, नमक और गरम मसाला भी डालें। राजमा को इस मिश्रण के साथ थोड़ी देर भूनें और फिर जरूरत के मुताबिक पानी मिला दें। इसे ढक्कन लगाकर दस-बारह मिनट तक पकाएं। इस बीच दही और मलाई को मिक्सी में फेंट लें और जब राजमा पूरी तरह पक जाएं, तो उसमें इसे डाल दें। अंत में बारीक कटा हुआ हरा धनिया इसमें मिला दें और ऊपर से थोड़ी और मलाई डाल दें। इसे गरम-गरम रोटी, नान या चावल के साथ परोसा जा सकता है।

पंजाब केसरी संपादकीय
संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रोमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

आदित्य नारायण चोपड़ा
adityachopra@punjabkesari.com

नेपाल में जेन-जी सरकार

पड़ोसी देश नेपाल में हुए आम चुनावों में वहां की राजनीति में बड़ा उल्टफेर हो चुका है। चुनाव में काठमांडौ के पूर्व मेयर बालेन्द्र शाह की पार्टी राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी प्रचंड बहुमत की ओर अग्रसर है। जबकि दशकों से सत्ता में रहे पारम्परिक दल बुरी तरह से पिछड़ गए हैं। भारत विरोधी पूर्व प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली को अपने निर्वाचन क्षेत्र में ही बालेन्द्र शाह से हार का मुंह देखना पड़ा है। के.पी. शर्मा ओली की कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यूएमएल), पूर्व प्रधानमंत्री पुष्प दहल प्रचंड की सीपीएम (माओइस्ट सैंटर) और पूर्व प्रधानमंत्री शेर बहादुर देऊबा की नेपाली कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। बालेन्द्र शाह जिन्हें बालेन शाह भी कहा जाता है, का प्रधानमंत्री बनना तय है। वह भारत के बेलगांव (कर्नाटक) से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर नेपाल की राजनीति में कूदे थे। वे एक लोकप्रिय रैपर और यूट्यूबर बने और फिर काठमांडौ के मेयर बने। उन्होंने नेपाल की राजनीति की तस्वीर बदल कर रख दी है। बालेन्द्र उन प्रदर्शनकारियों में से थे जो सितम्बर 2025 में सड़कों पर उतरे थे और जेन-जी आंदोलन के कारण उस समय की के.पी. शर्मा ओली सरकार को इस्तीफा देना पड़ा था। नेपाल का जनादेश नेतृत्व में पीढ़ीगत बदलाव की ओर इशारा कर रहा है। नेपाल की जनता को जेन-जी की नई सरकार से बहुत उम्मीदें हैं।

नेपाल में 19 मिलियन पंजीकृत मतदाताओं में से 60 प्रतिशत ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। जिन मुद्दों पर चुनाव लड़े गए वे वही थे जो पिछले साल के विरोध-प्रदर्शनों के दौरान उठाए गए थे। चुनावी मुद्दों में घोटाले, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पलायन, असमानता और कमजोर आर्थिक हालत शामिल रहे। हमारे आस-पड़ोस श्रीलंका और बांग्लादेश में भी किशोरों, नौजवानों ने अपने-अपने निजाम की चूलें हिसा दी थीं और इन देशों में लोकप्रिय सरकारों का गठन हो चुका है। नेपाल तीसरा देश है जहां जेन-जेड की सरकार बन रही है। नेपाल की राजनीति में 2008 में राजशाही के खात्मे के बाद लोकतंत्र का सूर्य जरूर निकला मगर राजनीतिक स्थिरता मृगतृष्णा ही बनी रही। इस छोटे से देश ने 17 साल में 14 प्रधानमंत्रियों को आते-जाते देखा और सत्ता की बंदरबांट को लगातार देखा। माओवादी नेता पुष्प कमल दहल प्रचंड हों या शेर बहादुर देऊबा, मधेसी आंदोलन से उपजे नए नेता हों या फिर के.पी. शर्मा ओली कभी विश्वासघात ने, कभी गठबंधन की जंग ने और कभी जनता के गुस्से ने प्रधानमंत्रियों को कुर्सी छोड़ने पर मजबूर किया। हर चेहरा सत्ता में आया लेकिन स्थिरता लाने में नाकाम रहा। औसतन हर 14, 15 महीने में नेपाल के लोगों को नया प्रधानमंत्री मिला। जनता ने सोचा था कि अब देश नई दिशा में आगे बढ़ेगा। गरीबी हटेगी, रोजगार मिलेगा, बुनियादी ढांचा सुधरेगा और पड़ोसी देशों के साथ संतुलित संबंध बनेंगे लेकिन वास्तविकता इससे बिल्कुल उल्ट निकली। नेपाल में नया संविधान बनाने और उसको लागू करने में उथल-पुथल मची रही। आंदोलनों का दौर चला। शासन में नेपाल के भारत से संबंध काफी तनावपूर्ण रहे और उन्होंने नेपाल को पूरी तरह चीन के हाथों गिरवी रख दिया था। भारत और नेपाल के संबंध रोटी और बेटी के रहे हैं। हालांकि संबंधों में काफी उतार-चढ़ाव भी आता रहा है। भारत न केवल नेपाल का निकटतम बाजार है, बल्कि व्यापार, ऊर्जा, आपूर्ति और मौद्रिक स्थिरता का प्रमुख केन्द्र भी है। नेपाल के कुल व्यापार में नई दिल्ली के साथ व्यापार का हिस्सा लगभग 63 फीसदी है। जिसमें भारत उसके निर्यात का 68 प्रतिशत हिस्सा ग्रहण करता है।

> **विशेषज्ञों का मानना है कि शासन का सीमित अनुभव होने के कारण बालेन्द्र शाह की विदेश नीति कभी-कभी अप्रत्याशित हो सकती है। जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नई सरकार को भारत और चीन के साथ संतुलन बनाकर चलना होगा। नई सरकार के घरेलू रोजगार सृजन, अर्थव्यवस्था में सुधार, महंगाई नियंत्रण पर अत्याधिक ध्यान देना होगा। लोगों की चिंता का मूल कारण गहरी आर्थिक कमजोरी है। नेपाल की नाजुक अर्थव्यवस्था को नई सरकार किस तरह से सम्भालती है यह अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती है।**

भारत ने हर संकट में नेपाल की सहायता ही की है। काफी हद तक नेपाल भारत पर निर्भर रहा है। नेपाल की सियासत में चीन का हस्ताक्षेप बढ़ने से संबंधों पर काफी प्रभाव पड़ा है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि नेपाल की नई सरकार के भारत के साथ संबंध कैसे रहेंगे। बालेन्द्र शाह के कुछ पुराने बयानों ने भारत को चिंता में डाला था। 2023 में उन्होंने बालीवुड फिल्म में सीता को 'भारत की बेटी' कहने पर भारतीय फिल्मों पर बैन की मांग की थी, क्योंकि नेपाली परंपरा में सीता का जन्म नेपाल या नेपाल-बिहार बॉर्डर पर माना जाता है। उसी साल उन्होंने अपने ऑफिस में 'ग्रेटर नेपाल' का मैप लगाया था, जिसमें कुछ भारतीय क्षेत्र शामिल थे और इसे भारत के संसद में 'अखंड भारत' म्यूरल का जवाब बताया। वर्ष 2025 में एक पोस्ट में भारत, अमेरिका और चीन के खिलाफ गाली-गलौज वाली भाषा इस्तेमाल की, जिसे बाद में डिलीट कर दिया लेकिन हाल के महीनों में उनके रुख में बदलाव दिखा है। आरएसपी के मेनिफेस्टो से चीन की बीआरआर से जुड़े दमक इंडस्ट्रियल पार्क प्रोजेक्ट को हटा दिया गया, जो ओली के गढ़ झापा-5 में था। यह भारत के लिए राहत की बात है, खासकर सिलीगुड़ी कॉरिडोर की सुरक्षा के लिहाज से आरएसपी बैलेंस्ड विदेश नीति पर जोर दे रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि शासन का सीमित अनुभव होने के कारण बालेन्द्र शाह की विदेश नीति कभी-कभी अप्रत्याशित हो सकती है। जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नई सरकार को भारत और चीन के साथ संतुलन बनाकर चलना होगा। नई सरकार के घरेलू रोजगार सृजन, अर्थव्यवस्था में सुधार, महंगाई नियंत्रण पर अत्याधिक ध्यान देना होगा। लोगों की चिंता का मूल कारण गहरी आर्थिक कमजोरी है। नेपाल की नाजुक अर्थव्यवस्था को नई सरकार किस तरह से सम्भालती है यह अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती है। भारत और नेपाल में कई संधियां हैं। पुरानी संधियों को लेकर भी कुछ मतभेद बने हुए हैं। नेपाल की नई सरकार को भारत के साथ संधियों को चाहे वह जल-विद्युत परियोजना हो या अन्य संबंध उन्हें विश्वसनीय अनुबंधों में बदलना होगा और भारत के साथ संबंधों को दिखावे की बजाय पेशेवर तरीके से प्रबंधित करना होगा। नेपाल की नई सरकार को चीन से भी सतर्क रहना होगा, क्योंकि चीन पहले सहायता करता है फिर छोटे देशों को ऋण के जाल में फंसाता है, फिर उनकी भूमि हड़प लेता है। चीन ने श्रीलंका और अन्य देशों में ऐसा ही किया है। नए नेतृत्व को स्वच्छ शासन की छवि बनानी होगी। वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियां भी नई सरकार के लिए एक चुनौती है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए नई पीढ़ी को धैर्य और प्रतिबद्धता की जरूरत होगी। नेपाल में एक ही पार्टी को बहुमत मिलना नेपाली जनता की राजनीतिक स्थिरता की इच्छा को भी दर्शाते हैं। नेपाल में स्थिर एवं मजबूत सरकार का बनना भारत के लिए बेहतर होगा। इसकी उम्मीद की जा सकती है।

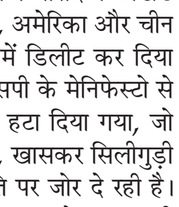

सशक्त महिलाएं...

गीता पाढा

"सशक्त महिलाएं किसी भी
सशक्त समाज का आधार है,
सशक्त नारी से ही होगा
एक मजबूत राष्ट्र का स्वप्न साकार है,,
प्रत्येक नारी की शिक्षा, स्वास्थ्य, मानसिक बल पर करना हमें विचार है,
क्योंकि नारी के उत्थान से ही होगा समाज और राष्ट्र का उद्धार है,,
इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हम सभी को यह संकल्प दोहराना है,
प्रत्येक महिला को आत्मनिर्भर और जागरूक बनाना है...।।"

क्या नीतीश डिप्टी पीएम बनेंगे?

मिर्च मसाला
त्रिदीब रमण
gossipguru.in

'वक्त-वक्त की बात है कभी तुझे, तो
कभी मुझे, इस इम्तहान से
गुजरना होगा
तू पत्थर है, तो मैं आइना हूं, तेरे लिए
न सही, मुझे अपने लिए तो
संवरना होगा'

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भले ही भाजपा के दबाव में बिहार से राज्यसभा के लिए अपना नामांकन दाखिल कर दिया हो, पर उनका मन अब भी बिहार में ही रमा हुआ है, वे यहां से जाना नहीं चाहते। नीतीश समर्थकों का भी कमोबेश यही रुख है कि 'अगर बिहार की जनता ने उन्हें 2030 तक के लिए अपना 'मैंडेट' दिया है तो फिर वे बिहार छोड़ कर क्यों जाए?' माना जाता है कि इससे पहले भी उन्हें भाजपा की ओर से उपराष्ट्रपति पद का ऑफर आया था, पर नीतीश ने इसके लिए मना कर दिया था। वे लगभग 20 वर्षों से बिहार के मुख्यमंत्री पद पर काबिज हैं, उनकी पार्टी के 85 विधायक और 12 लोकसभा सांसद हैं, फिर वे 37 वर्षों बाद बिहार

छोड़कर दिल्ली क्यों जाएं? यह भी माना जा रहा है कि 5 मार्च को यूं अचानक उनका राज्यसभा के लिए पर्चा भरना एक दबाव में लिया गया फैसला था, क्योंकि उसी रोज वे अपने पुत्र निशांत को सक्रिय राजनीति में लाने की एक बड़ी घोषणा करने वाले थे। सूत्रों का यह भी दावा है कि नीतीश की जान अपने जिस पुत्र तोते में अटकी है। सूत्र यह भी इशारा कर रहे हैं कि रह-रह कर नीतीश का विरोध आकार ले रहा है। सो, अब दिल्ली ने भी दबाव की राजनीति छोड़ कर नीतीश के समक्ष एक बड़ा प्रस्ताव रखा है। सूत्रों की मानें तो दिल्ली ने नीतीश को डिप्टी पीएम बनाने का प्रस्ताव दिया है अगर वे बिहार छोड़कर दिल्ली जाने को राजी हो जाते हैं। भाजपा की नज़र बिहार में नीतीश की परंपरागत वोट बैंक पर जमी है, जिसमें महिला वोटर, गैर यादव ओबीसी और लगभग 36 फीसदी ईबीसी आबादी शामिल है। अब भाजपा अपना मुख्यमंत्री बना इस वोट बैंक को साधने का काम कर सकती है, पर एक संभावना यह भी है कि अगर नीतीश बिहार छोड़कर दिल्ली जाते हैं तो उनका ये वोट बैंक टूट कर-छिटक कर अन्य पार्टियों का रुख कर लें, सो भाजपा की योजना नीतीश के बेटे निशांत के लिए एक बिहार यात्रा निकालने की है जिससे उनके पिता के कैडर वोट पुत्र के पाले में आ सके। वहीं नीतीश के करीबी नौकरशाह मनीष वर्मा नीतीश से यही कहते रहे कि वे अपनी जगह अपने पुत्र निशांत को राज्यसभा में भेज दें, पर बदली परिस्थितियों में नीतीश का राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुना जाना लगभग तय हो गया है।

क्या आरिफ को अपनी रुखसती का पहले से पता था?

बिहार के पूर्व गवर्नर आरिफ मोहम्मद खान की यूं अचानक उनकी विदाई की इबारत लिख दी गई या अपनी रुखसती का उन्हें पहले से इल्म था। विश्वस्त सूत्रों की मानें तो आरिफ को कोई पखवाड़े पूर्व इस बात का अहसास हो गया था कि 'उनकी गवर्नरी छिनी जा सकती है', कहते हैं इसके बाद ही दक्षिण दिल्ली के एक अति संभ्रांत इलाके में अवस्थित उनके बंगले की रंगाई-पुताई शुरू हो गई, जब कुछ पत्रकारों को इस बात की भनक मिली तो आरिफ के नजदीकियों की ओर से उन्हें बताया गया कि 'दरअसल महामहिम (आरिफ) के लिए एक निजी लाईब्रेरी बनाने पर काम चल रहा है', महामहिम से जुड़े सूत्रों ने इन अटकलों पर विराम लगाते हुए कहा कि 'फिलहाल उनका (आरिफ) दिल्ली वापस लौटने का कोई इरादा नहीं है।' फिर ऐसा क्या हुआ कि एक दिन अचानक बिना किसी नियोजित प्रोग्राम के आरिफ एक अनजान जगह के लिए छुट्टियों पर निकल जाते हैं। आरिफ को यह आश्वासन प्राप्त था कि बिहार के बाद उन्हें वेस्ट बंगाल भेजा जा सकता है, सो आरिफ के मन के किसी कोने में कतई इस संशय ने सिर नहीं उठाया होगा कि उन्हें एक झटके में यूं पैदल किया जा सकता है। जानकार बताते हैं कि इस बार बिहार में 'ऑपरेशन लोट्स' की पूरी तैयारी थी, वहीं आरिफ अपने मूल में सियासत में पगे एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिनको सियासी संतुलन साधने में महारथ हासिल थी। बिहार में भी उनकी लालू और नीतीश दोनों से बराबर की मित्रता थी, सो भाजपा को यह अंदेशा था कि अगर नीतीश को हटाने पर ज्यादा बवाल मचा तो बिहार में संक्रमण काल की उस राजनीतिक दौर में आरिफ पत्थर पर फूल खिलाने का काम कर सकते हैं, यानी वे लालू व नीतीश के बीच एक संवाद सेतु का कार्य कर सकते हैं, वैसे भी नीतीश को पलटने में सिद्दहस्ता हासिल है सो वे भाजपा के मारे एक बार फिर लालटेन की रौशनी में अपने सियासी भविष्य का 'रोड-मैप' तलाश सकते हैं।

वहीं अगर बदले घटनाक्रम में जदयू में बड़ी टूट हो गई तो आरिफ भाजपा के लाभार्थी बनने की राह में खड़े नज़र आ सकते हैं, वहीं दूसरी ओर बिहार के नवनियुक्त गवर्नर सैय्यद अता हुसैन जो कि एक फौजी बैक ग्राऊंड के हैं उनका ज्यादा यकीन 'रूलबुक' के हिसाब से चलने में हो सकता है, यही बात भाजपा के ज्यादा मुफीद है।

वहीं इस मामले में आरिफ का नज़रिया कहीं ज्यादा स्वतंत्र और राजनीति अवलंबित हो सकता था, यह एक बड़ी वज़ह थी जिसने आरिफ की रुखसती की इबारत लिख दी।

संधू को कम मत आंकिए बंधु

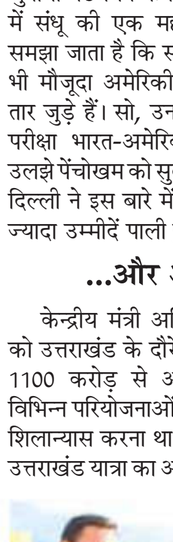

कोई चार वर्षों तक दिल्ली में उप राज्यपाली का जिम्मा संभाल रहे विनय सक्सेना को जिस जल्दबाजी में लद्दाख भेजा गया, राजनीतिक पर्यवेक्षक अब भी इसका सही कारण तलाशने में जुटे हैं, नहीं तो दिल्ली में भाजपा सरकार की वापसी का रोड मैप बनाने के लिए सक्सेना साहब ने क्या नहीं किया, भाजपा को दिल्ली में पुनर्स्थापित करने और जमी-जमाई आप सरकार को यहां से रुखसत करने में कोई भी उनकी भूमिका को कम करके नहीं आंक सकता। खैर, चलिए बात करते हैं दिल्ली में सक्सेना साहब की जगह लेने वाले पूर्व भारतीय राजनयिक तरणजीत सिंह संधू की। जिन्हें संघ और भाजपा दोनों का ही बेहद लाडला माना जाता है। वे 2024 का लोकसभा चुनाव इस दफे भाजपा के टिकट पर अमृतसर से लड़े थे, पर जीत दर्ज करा पाने में नाकामयाब रहे। अमेरिका में भारतीय राजदूत रहे संधू साहब का दिल्ली में लेफ्टिनेंट गवर्नरी हासिल करना किसी चमत्कार से कम नहीं। समझा जाता है कि उनके लिए इस दफे सबसे बड़ी लॉबिंग शिरोमणि अकाली दल के सर्वेसर्वा सुखबीर सिंह बादल ने की। यह भी कहा जाता है कि इस दफे अकाली दल व भाजपा को चुनावी गठबंधन के लिए तैयार करवाने में संधू की एक महती भूमिका रही। समझा जाता है कि संधू साहब की अब भी मौजूदा अमेरिकी प्रशासन से गहरे तार जुड़े हैं। सो, उनकी असली अग्नि परीक्षा भारत-अमेरिका के रिश्तों के उलझे पेंचोखम को सुलझाने की है, उनसे दिल्ली ने इस बारे में पहले से ही कहीं ज्यादा उम्मीदें पाली हुई हैं।

...और अंत में

केन्द्रीय मंत्री अमित शाह शनिवार को उत्तराखंड के दौरे पर थे, जहां उन्हें 1100 करोड़ से अधिक लागत की विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास करना था। सूत्रों की मानें तो उत्तराखंड यात्रा का असली मकसद वहां

भाजपा के विभिन्न गुटों में एका कराना और उन्हें आगामी चुनाव के लिए तैयार करना है। समझा जाता है कि भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को अभयदान मिल गया है और यह भी एक तरह से तय कर दिया गया है कि प्रदेश में धामी विरोध की अलख चाहे जितनी भी सुलग रही हो पर वहां सीएम बदला नहीं जाएगा, यानी भाजपा धामी के नेतृत्व में ही एक बार फिर से आने वाले उत्तराखंड चुनाव की तैयारियों में जुट गई है।

एसआईआर के बाद मतदाताओं के नाम हटाना बंगाल को विभाजित करने का प्रयास: ममता

कोलकाता, (पंजाब केसरी): पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को आरोप लगाया कि एसआईआर के बाद मतदाता सूचियों से मतदाताओं के नाम हटाने का उद्देश्य राज्य को विभाजित करना है।

राज्य में मतदाता सूची से कथित रूप से मनमाने तरीके से लोगों के नाम हटाए जाने के विरोध में प्रदर्शन कर रहीं ममता बनर्जी ने इस दौरान प्रदर्शन स्थल पर मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए भाजपा पर बांग्ला भाषी लोगों को उनके मतदान के अधिकार से वंचित करने का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री ने लगातार दूसरे दिन शनिवार को भी अपना विरोध प्रदर्शन जारी रखा। इससे पहले वह रात में यहीं धरना स्थल पर रुकी थीं।

बनर्जी ने प्रदर्शन स्थल पर आरोप लगाया, 'उनका (निर्वाचन आयोग और भाजपा का) इरादा बंगाल को बांटना है। भाजपा बंगाल को विभाजित करके वोट छीनने की साजिश रच रही है। वे (भाजपा नेता) अन्य राज्यों में बांग्ला भाषी लोगों को परेशान कर रहे हैं और पश्चिम बंगाल के लोगों को उनके मतदान के अधिकार से वंचित करने की साजिश रच रहे हैं।'

मुख्यमंत्री ने दावा किया कि एक दिन पहले उन्होंने एक ट्वीट में देखा था कि बंगाल और बिहार को विभाजित करके एक केंद्र शासित प्रदेश बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा, अगर उनमें हिम्मत है तो बंगाल को हाथ लगाकर दिखाएं। यह उनकी साजिश है। उन्होंने बिहार में झारखंड बनाकर ऐसा किया था, और अब वे फिर से ऐसा करने की कोशिश कर रहे हैं। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के बाद मतदाता सूची से लाखों नाम कथित तौर पर हटाए जाने पर निर्वाचन आयोग की आलोचना करते हुए बनर्जी ने कहा कि दीनहाटा जैसे एक ही विधानसभा क्षेत्र से 36,000 नाम हटा दिए गए। उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र भबानीपुर की कई महिलाओं से मंच पर आकर अपने दस्तावेज दिखाने को कहा। बनर्जी ने कहा, 'मेरे अपने निर्वाचन क्षेत्र में 60,000 वोट हटा दिए गए हैं। मैं आपको पूरी मतदाता सूची हटाने की चुनौती देती हूँ।' निर्वाचन आयोग पर 'मतों की लूट' का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा, 'क्या वे देश के नागरिक नहीं हैं? क्या उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं है?' उन्होंने कहा, आप बंगाल को बांटना चाहते हैं, लेकिन पहले एप्स्टीन से निपटिए। याद रखिए, आप हम पर जितना हमला करेंगे, जवाबी कार्रवाई उतनी ही जोरदार होगी।

बनर्जी ने यह बात एप्स्टीन फाइल विवाद का जिक्र करते हुए कही, लेकिन उन्होंने इस संबंध विस्तार से कुछ नहीं कहा। उन्होंने कहा, हम बंगाल में सभी धर्मों का सम्मान करते हैं और समाज में सभी को जाति, पंथ या धर्म के भेदभाव के बिना समान मानते हैं। और याद रखें कि बांग्ला भाषा को स्वतंत्रता से बहुत पहले ही मान्यता मिल चुकी थी। मेरे पास 10 रुपये का एक पुराना नोट है जिस पर राशि बांग्ला भाषा में लिखी हुई है। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) के अवसर पर, मतदाता सूची से महिलाओं के नाम हटाने और एलपीजी की कीमतों में वृद्धि के विरोध में हजारों महिलाएं रविवार को शहर की सड़कों पर उतरेंगी तथा प्रदर्शनकारी काले कपड़े पहनेंगी। उन्होंने कहा, 'भाजपा को सावधान हो जाना चाहिए। वोट मिटाकर तुम बंगाल को विभाजित नहीं कर सकते। और अगर तुमने हद पार की, तो तुम्हारी दिल्ली सरकार गिर जाएगी।' बनर्जी ने यह भी आरोप लगाया कि भाजपा कभी भी समान अधिकारों और महिला सशक्तीकरण के अपने चुनावी वादों को पूरा नहीं करती, जबकि तृणमूल कांग्रेस के नेतृत्व वाली बंगाल सरकार इन वादों को अक्षरश: और भावना के साथ पूरा करती है। उन्होंने कहा, बंगाल एकमात्र ऐसा राज्य है जहां संसद में 37 प्रतिशत निर्वाचित महिला प्रतिनिधि हैं, और वे महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण की बात करते हैं! पंचायतों और नगर निकायों में तो महिलाओं के लिए पहले से ही 50 प्रतिशत आरक्षण है। हमारे यहां मातृत्व अवकाश भी है। कामकाजी महिलाओं को लगभग 735 दिन का अवकाश मिलता है। वे (भाजपा नेता) चुनाव से पहले मतदाताओं को सिर्फ 10,000 रुपये देते हैं और फिर चुनाव के बाद बुलडोजर लेकर आ जाते हैं।'

बनर्जी ने शुक्रवार को मध्य कोलकाता में प्रदर्शन शुरू किया था, जिसमें उन्होंने निर्वाचन आयोग पर आगामी विधानसभा चुनाव से पहले 'बंगाल के मतदाताओं को मताधिकार से वंचित करने' के लिए भाजपा के साथ साजिश रचने का आरोप लगाया था।

यह प्रदर्शन विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची में संशोधन को लेकर बढ़ते राजनीतिक तनाव के बीच निर्वाचन आयोग की पूर्ण पीठ के पश्चिम बंगाल दौरे से कुछ दिन पहले हो रहा है।

निर्वाचन आयोग द्वारा 28 फरवरी को जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, पिछले साल नवंबर में एसआईआर प्रक्रिया शुरू होने के बाद से लगभग 63.66 लाख लोगों यानी लगभग 8.3 प्रतिशत मतदाताओं के नाम हटा दिए गए हैं, जिससे मतदाता आधार लगभग 7.66 करोड़ से घटकर 7.04 करोड़ से थोड़ा अधिक रह गया है।

इसके अलावा, 60.06 लाख से अधिक मतदाताओं को 'न्यायिक जांच के अधीन' श्रेणी में रखा गया है, जिसका अर्थ है कि आने वाले हफ्तों में कानूनी जांच के माध्यम से उनकी पात्रता निर्धारित की जाएगी।

महिला दिवस

श्रीमती किरण चोपड़ा
डायरेक्टर- पंजाब केसरी दैनिक समाचार लि.
चेयरपर्सन- वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब
मुख्य संरक्षिका- चौपाल
सदस्या- राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल, एकल
संरक्षिका- भारतीय लोक विकास परिषद
/kiranchopra01
kiranchopra@punjabkesari.com
kiranchopradesk@gmail.com

आज हम सब महिला दिवस मना रहे हैं। यह दिन सिर्फ मनाने और बधाई देने का नहीं बल्कि नारी के सम्मान शक्ति और योगदान को पहचानने का दिन है। नारी इस सृष्टि की सबसे सुन्दर और शक्तिशाली रचना है। वो जीवन देने वाली है। यानी धारणी है, जीवन को पालने वाली और दिशा देने वाली भी है। एक बेटी के रूप में वह घर में खुशियां लाती है, एक बहन के रूप में स्नेह देती है। एक पत्नी के रूप में जीवन की साथी बनती है और एक मां के रूप में पूरी पीढ़ी का निर्माण करती है। हमारी भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। हम सब अपने अनुभवों से जानते हैं, जहां नारी का सम्मान होता है वहीं देवताओं का वास होता है। चाहे वो नारी का कोई भी रूप हो। आजकल तो रील बन रही है कि अगर आपको अपना चन्द्रमा ऊंचा करना है तो सुबह-सुबह मां के पांव को हाथ लगाओ। अगर जीवन में तरक्की करनी है तो मां की सेवा करो। मेरे तीनों बेटे-बहुएं (जो मॉडर्न और एजुकेटिड हैं) सुबह उठते हैं। मेरे पांव छूते हैं और मेरे प्रति बहुत आदर सम्मान रखते हैं।

यही नहीं आज की महिला हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। चाहे वह शिक्षा हो, विज्ञान हो, राजनीति हो, व्यापार हो या खेल का मैदान। नभ-थल-जल हो लेकिन इसके साथ यह भी जरूरी है कि समाज में हर महिला को सम्मान, सुरक्षा और समान अवसर मिले। क्योंकि जब एक महिला आगे बढ़ती है तो वह केवल स्वयं नहीं

बढ़ती, पूरा परिवार, समाज और राष्ट्र आगे बढ़ता है। इसलिए आज महिला दिवस के अवसर पर हम सबको यह संकल्प लेना चाहिए कि हर महिलाओं का सम्मान हो। हमारी प्रतिभा की पहचान हो और एक ऐसे समाज का निर्माण हो जहां हर महिला सुरक्षित, सशक्त और सम्मानित हो। क्योंकि नारी केवल शक्ति नहीं, वह सृजन की सबसे बड़ी शक्ति है। जब हम समाज और देश की प्रगति की बात करते हैं तो हमें यह याद रखना चाहिए कि किसी भी समाज और देश की असली शक्ति उसकी नारी होती है।

अगर आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन अगर आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो पूरा परिवार और आने वाली पीढ़ी शिक्षित होती है। नारी केवल जीवन देने वाली नहीं वह संस्कार देने वाली और समाज को दिशा देने वाली शक्ति भी है। नारी सहनशीलता, संवेदनशीलता और शक्ति का सबसे सुन्दर संगम है।

महिला दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि यह याद दिलाने का दिन है कि नारी का सम्मान, सुरक्षा और सशक्तिकरण हर दिन होना चाहिए क्योंकि नारी केवल परिवार की शक्ति नहीं बल्कि राष्ट्र की प्रेरणा है। देश के युग पुरुष स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि महिलाओं की स्थिति में सुधार किए बिना दुनिया का कल्याण सम्भव नहीं है। कोई भी पक्षी एक पंख के सहारे नहीं उड़ सकता। इसलिए हर क्षेत्र में महिलाओं को भागीदार बनाना होगा। आज के दौर में नारी शक्ति पूरे आसमान को मुट्ठी में करने को बेकरार है और अनेक ने बहुत सारी उपलब्धियां हासिल की हैं। नारी तू नारायणी वाक्य से अभिप्राय यह है कि स्त्री केवल इंसान नहीं है, बल्कि साक्षात देवी लक्ष्मी और शक्ति का स्वरूप है।

नारी सशक्तिकरण की दिशा में आज की तारीख में सरकार बहुत कुछ कर रही है। क्या छोटे शहर और महानगर देश की नारी कड़ी मेहनत कर रही है। वह जमीन पर रहकर कड़ा श्रम करना जानती है तो आसमान में विमान उड़ाने में सक्षम है। आटो, कार चलाने से लेकर मैट्रो चलाती है। बॉर्डर पर डटकर ड्यूटी निभाती है और देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद की भी शोभा बढ़ा सकती है। आज महिला दिवस है, नारी के श्रम को सलाम करने का दिन है और नारी हमारे देश की शान बनकर पूरी दुनिया में एक उदाहरण स्थापित कर रही है। सच तो यही है कि

घर की शोभा गृहिणी से होती है। गृहिणी के बिना घर को घर नहीं कहा जा सकता। संवेदनशील सेवा समर्पिता की आकृति वो पत्नी के रूप में समाहित हो जाती है। घर के हर सदस्य का ध्यान रखने का दायित्व यह निभाती है। परिवार के हर सदस्य के दु:ख में दु:खी होती है। सभी की समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न करती है। इस रूप में यह खुद को भूलकर दूसरों के लिए जीने लगती है। किसको किस समय क्या चाहिये व किस की क्या पसंद है, ये ध्यान वो खुद की जरूरतों को भुला कर रखती है। अब वह अपनी घरेलू जिम्मेदारियों के साथ खुद की पहचान बनाने में भी आगे है। इसलिए कहा जाता है कि एक नारी के सौ रूप हैं और वो नारी से महारानी बनकर अब आगे आ रही है। नारी आज आधी आबादी का हिस्सा मानी जाती है परन्तु यह बड़े ही खेद का विषय है कि आज इस अति आधुनिक युग में, जिसमें मानवीय भावनाओं का स्थान धीरे- धीरे समाप्त होता जा रहा है नारी को लेकर एक अलग अवधारणा बनने लगी है। यद्यपि आज वह अपने सबसे प्रखर रूप में हमारे सामने है।

आज की नारी ने पुरुषों से कंधे से कन्धा मिलाकर यह साबित कर दिया है कि वह अब अबला नहीं रह गई। चिकित्सा, राजनीति, विज्ञान, तकनीकी, साहित्य और कला सभी क्षेत्रों में आज हम नारी को आगे पाते हैं। केवल महिला सशक्तिकरण का नारा देने से काम चलने वाला नहीं है। महिलाओं का सशक्तिकरण तभी संभव हो सकता है जब हम उसे अधिकार देंगे, बिन अधिकार कैसा सशक्तिकरण? कड़वा सच यही है कि ऐसे अपराध रोकने व अपराधियों को सजा दिलाने की व्यवस्था ही सच्चे महिला सशक्तिकरण और महिला दिवस की सार्थकता को दर्शाता है। नारी एक देवी है, वह दुर्गा है, भवानी है, चंडी है और नारी के योगदान को नारी दिवस पर हमारा हमारा कोटि-कोटि नमन है।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com
स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रेस, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

अमेरिका ने 42 ईरानी वॉरशिप डुबोए

वाशिंगटन, (पंजाब केसरी)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि अमेरिका के हमलों से ईरान पस्त हो गया है और उसकी सेना को भारी नुकसान हुआ है। उन्होंने यह बात फ्लोरिडा के मियामी में अपने गोल्फ रिजॉर्ट में लैटिन अमेरिकी देशों के नेताओं से बात करते हुए कही।

कार्यक्रम के दौरान ट्रंप ने कहा कि हाल के हमलों में ईरान के 42 नौसैनिक जहाज नष्ट कर दिए गए। ट्रंप के मुताबिक इन हमलों में ईरान की नौसेना, वायुसेना और संचार सिस्टम को भी बड़ा नुकसान पहुंचा है। उन्होंने यह भी दावा किया कि अमेरिकी हमलों में ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़े ठिकानों को भी निशाना बनाया गया। ट्रंप का कहना है कि ईरान परमाणु हथियार बनाने के करीब पहुंच गया था।

इस दौरान अपने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ की तरफ देखते हुए उन्होंने कहा: "पीट, आप शानदार हैं। आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। मुझे आप पर गर्व है।" इस बीच इजरायल ने भी दावा किया है कि उसने ईरान के 16 विमान तबाह कर दिए हैं। इजरायली सेना ने दावा किया कि ये विमान आईआरजीसी कुद्स फोर्स

- ट्रंप ने रक्षा मंत्री हेगसेथ को बताया शानदार

के थे। यह ईरानी सेना की वह यूनिट है जो देश के बाहर सैन्य ऑपरेशन करती है। इजरायली सेना ने कहा कि उसकी एयरफोर्स ने राजधानी तेहरान में कई जगहों पर रात में बड़े हमले किए। इन हमलों में मेहराबाद इंटरनेशनल एयरपोर्ट को भी टारगेट किया गया।

इस बीच, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने सोशल मीडिया पोस्ट की एक श्रृंखला में नया बयान जारी करते हुए दोहराया कि तेहरान ने "अपने दोस्त और पड़ोसी देशों पर हमला नहीं किया है, बल्कि इस इलाके में अमेरिकी मिलिट्री बेस, जगहों और केंद्रों को निशाना बनाया है। यह टीवी पर प्रसारित उस वीडियो संदेश के बाद आया है जिसमें उन्होंने पड़ोसी खाड़ी देशों से माफी मांगी थी और कहा था कि ईरान की अंतरिम लीडरशिप काउंसिल ने उनके खिलाफ हमले या मिसाइल हमले रोकने की मंजूरी दे दी है, जब तक कि ईरान के खिलाफ हमला उन देशों से न हो।

पेजेशकियान की टिप्पणी पर ट्रंप का तंज

वाशिंगटन, (एजेंसी): ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान की पड़ोसी देशों से मांगी गई माफी को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 'दबाव' में उठाया गया कदम करार दिया है। शनिवार को ट्रुथ सोशल प्लेटफॉर्म पर ट्रंप ने अपने चिर-परिचित अंदाज में पेजेशकियान पर तंज कसा। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि ईरान अपने पड़ोसी देशों के सामने झुक गया है। ईरान ने पड़ोसी देशों से माफी मांगी है और वादा किया है कि अब उन पर हमला नहीं करेगा। उनके मुताबिक ऐसा अमेरिका और इजरायल के लगातार हमलों के दबाव की वजह से हुआ है। ट्रंप ने लिखा, ईरान इस संघर्ष में बुरी तरह से पिट चुका है। उसने माफी मांगी है और अपने मिडिल ईस्ट पड़ोसियों के सामने सरेंडर कर दिया है, और वादा किया है कि वह अब उन पर गोली नहीं चलाएगा। ट्रंप के अनुसार, यह

- ईरान अब "मिडिल ईस्ट को धमकाएगा" नहीं, बल्कि वे "मिडिल ईस्ट के लूजर" हैं

वादा सिर्फ यूएस और इजरायल के लगातार हमले की वजह से किया गया है। ईरान मध्य पूर्व पर कब्जा करके राज करना चाहता था। यह पहली बार है जब ईरान हजारों सालों में, आस-पास के मिडिल ईस्ट देशों से परास्त हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने दावा किया है कि खाड़ी देशों ने ईरान के इस माफीनामे के बाद उनको (ट्रंप) धन्यवाद दिया है। पोस्ट में ट्रंप ने आगे लिखा कि उन्होंने (मिडिल ईस्ट) मुझे "थैंक यू प्रेसिडेंट ट्रंप" कहा और मैंने कहा, "आपका स्वागत है!" ईरान अब "मिडिल ईस्ट को धमकाएगा" नहीं, बल्कि वे "मिडिल ईस्ट के लूजर" हैं, और कई दशकों तक ऐसे ही रहेंगे जब तक वे सरेंडर नहीं कर देते या, पूरी तरह से खत्म नहीं हो जाते! इसके साथ ही, उन्होंने एक बार फिर ईरान पर बड़े हमले का ऐलान करते हुए दावा किया कि ईरान पर बहुत बुरा असर पड़ेगा! ईरान के बुरे बर्ताव की वजह से, पूरी तरह से तबाही और उसे पूरी तरह से खत्म करने को लेकर गंभीर रूप से विचार किया जा रहा है! इससे पहले ईरान के राष्ट्रपति का सरकारी टीवी पर बयान प्रसारित किया गया था। जिसमें उन्होंने कहा था कि ईरान पड़ोसी देशों पर हमले रोक सकता है, लेकिन अगर वहां से ईरान पर हमला हुआ तो जवाब दिया जाएगा।

मोदी ने सफल चुनावों पर नेपाल सरकार, वहां के लोगों को बधाई दी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को हिमालयी देश नेपाल में सफल आम चुनाव के लिए वहां की जनता और सरकार को बधाई दी तथा कहा कि यह ऐतिहासिक उपलब्धि नेपाल की लोकतांत्रिक यात्रा में एक गौरवपूर्ण क्षण है। मोदी ने यह भी कहा कि एक घनिष्ठ मित्र और पड़ोसी के रूप में, भारत नेपाल के लोगों और उसकी नयी सरकार के साथ मिलकर शांति, प्रगति और समृद्धि की नयी ऊंचाइयों को छूने के लिए दृढ़ संकल्पित है। उन्होंने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, नेपाल की जनता और सरकार को चुनावों के सफल और शांतिपूर्ण आयोजन पर हार्दिक बधाई। अपने नेपाली भाइयों और बहनों को इतने उत्साहपूर्वक तरीके से अपने लोकतांत्रिक अधिकारों का प्रयोग करते देखना बेहद खुशी की बात है। यह ऐतिहासिक उपलब्धि नेपाल की लोकतांत्रिक यात्रा में एक गौरवपूर्ण क्षण है।'

रैपर से राजनीतिक नेता बने बालेंद्र शाह की राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) भारी जीत की ओर बढ़ रही है, जिससे स्थापित राजनीतिक दलों का वर्चस्व टूटता नजर आ रहा है।

नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री को बालेंद्र शाह ने 50 हजार मतों से हराया

नेपाल के झापा-5निर्वाचन क्षेत्र से जीत के बाद प्रमाण पत्र प्राप्त करते आरएसपी नेता बालेंद्र शाह (छाया : प्रेट्र)

काठमांडू, (भाषा): नेपाल के झापा-5 निर्वाचन क्षेत्र में आरएसपी नेता और रैपर से नेता बने बालेंद्र शाह 'बालेन' ने चार बार प्रधानमंत्री रह चुके के.पी. शर्मा ओली को लगभग 50,000 मतों के भारी अंतर से हराया। निर्वाचन आयोग ने यहां यह जानकारी दी।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता पार्टी (आरएसपी) के नेता और काठमांडू के पूर्व महापौर, जिन्हें लोकप्रिय रूप से केवल बालेन के नाम से जाना जाता है, अपनी पार्टी के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार हैं। निर्वाचन आयोग ने बताया कि 35 वर्षीय बालेन को 68,348 मत मिले, जबकि 74 वर्षीय ओली को 18,734 मत मिले। पार्टी ने बलेंद्र शाह को प्रधानमंत्री पद का अपना उम्मीदवार घोषित किया था और मधेश के धनुषा जिले के जनकपुर से अपने चुनावी अभियान की शुरुआत की थी।

नेपाल में पिछले 18 वर्षों में 14 सरकार बन चुकी हैं। निर्वाचन आयोग के अनुसार, पूर्व प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल प्रचंड ने रुकुम पुरबा जिले से जीत हासिल की। नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी के नेता ने 10,240 वोट हासिल किए, जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी सीपीएन (यूएमएल) के लीलामणि गौतम को 3,462 वोट मिले।

लेबनान में इजराइली हमलों में 41 की मौत, 40 घायल

बेरुत,(एजेंसी): लेबनान के पूर्वी शहर नबी चित और आसपास के इलाकों में इजराइली हवाई हमलों में 41 लोगों की मौत हो गई और 40 अन्य घायल हो गये। इजराइली सेना के वहां उतरने और स्थानीय बंदूकधारियों के साथ झड़प के बाद शनिवार की रात उस क्षेत्र में झड़प की घटनाएं और हवाई हमले हुए। लेबनानी सेना ने कहा कि मृतकों में उसके तीन सैनिक भी शामिल हैं। इजराइली सेना इजराइली नाविक रॉन अराद के बारे में जानकारी की तलाश कर रही थी, जो 40 साल पहले लेबनान में उनके लड़ाकू विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद लापता हो गए थे। इजराइली सेना ने कहा कि उसे अराद के अवशेष नहीं मिले।

ईरान के और भी अधिकारियों को निशाना बनाया जायेगा: ट्रंप

डोरल (अमेरिका) (एजेंसी) अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को चेतावनी दी कि युद्ध में ईरान के और भी अधिकारियों को निशाना बनाया जायेगा और 'आज ईरान पर जबरदस्त प्रहार किया जायेगा।' ट्रंप ने अपनी वेबसाइट 'ट्रुथ सोशल' पर ये टिप्पणियां कीं, जिसमें उन्होंने तेहरान के हमलों को लेकर ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान द्वारा पड़ोसी देशों से माफी मांगने का जिक्र किया। ट्रंप ने लिखा, 'ईरान के खराब व्यवहार के कारण अब ऐसे इलाकों और लोगों के समूहों को भी निशाना बनाने पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है, जिन्हें अब तक निशाना बनाने के लिए नहीं सोचा गया था।'

हमले में बिहार के एक व्यक्ति की मौत

पटना, (पंजाब केसरी) पश्चिम एशिया के अशांत क्षेत्र में इस सप्ताह की शुरुआत में एक कंटेनर जहाज पर हुए हमले में मारे गए लोगों की पहचान सुनिश्चित करने के लिए जांच जारी है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

अमेरिका में फरवरी में 92,000 नौकरियां घटीं,

वॉशिंगटन, (पंजाब केसरी): श्रम सांख्यिकी ब्यूरो द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार अमेरिका में फरवरी में 92,000 नौकरियां खत्म हो गईं। यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था में संभावित कमजोरी का संकेत है।

अमेरिका में फरवरी महीने में 92,000 नौकरियां कम हो गईं, जिससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था में संभावित कमजोरी के संकेत मिले हैं। यह आंकड़े श्रम सांख्यिकी ब्यूरो द्वारा जारी किए गए।

रिपोर्ट के अनुसार, नॉनफार्म पेरोल पिछले महीने की तुलना में 92,000 घटे हैं। पिछले पांच महीनों में यह तीसरी बार है जब रोजगार में गिरावट दर्ज की गई है।

देश में बेरोजगारी दर बढ़कर 4.4 प्रतिशत हो गई है, क्योंकि कई प्रमुख क्षेत्रों में नौकरियां कम हुई हैं। शिन्हुआ न्यूज एजेंसी के मुताबिक हेल्थकेयर सेक्टर में 28,000 नौकरियां कम हुईं। इसका मुख्य कारण एक बड़े हेल्थ इंश्योरेंस प्रदाता कंपनी में हुई हड़ताल बताया गया है। पीटरसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स में नॉनरेजिडेंट सीनियर फेलो गैरी क्लाइड ने कहा, "मैं काफी समय से श्रम बाजार के कमजोर होने की उम्मीद कर रहा था। अब यह सामने

- देश में बेरोजगारी दर बढ़कर 4.4 प्रतिशत हो गई है
- यह आंकड़े श्रम सांख्यिकी ब्यूरो द्वारा जारी किए गए
- यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था में संभावित कमजोरी का संकेत है

आ गया है। हालांकि मुझे बड़े क्रैश की उम्मीद नहीं है लेकिन आने वाले महीनों में रोजगार वृद्धि धीमी रह सकती है।"

उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था के लिए टैक्स और टैरिफ रिफंड सकारात्मक पक्ष हैं जबकि ऊंची ऊर्जा कीमतें नकारात्मक पक्ष हैं।

आर्थिक एवं नीति अनुसंधान केंद्र के सह-संस्थापक डीन बेकर ने कहा कि रोजगार के आंकड़े उम्मीद से कमजोर हैं, लेकिन इसका एक कारण खराब मौसम भी हो सकता है। फरवरी में कुछ क्षेत्रों में रिकॉर्ड बर्फबारी के साथ तेज ठंड देखी गई। उन्होंने बताया कि रेस्टोरेंट सेक्टर में 30,000 और कंस्ट्रक्शन सेक्टर में 11,000 नौकरियां कम हुईं, जिसमें मौसम की भूमिका रही। फिलहाल कोई भी सेक्टर मजबूत रोजगार वृद्धि नहीं दिखा रहा है। इसके साथ ही वेतन में अपेक्षा से अधिक वृद्धि हुई है। औसत प्रति घंटे की कमाई महीने-दर-महीने 0.4 प्रतिशत और साल-दर-साल 3.8 प्रतिशत बढ़ी। जो फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ सैन फ्रांसिस्को की अध्यक्ष मैरी डेली ने सीएनबीसी से कहा कि यह आंकड़े दिखाते हैं कि श्रम बाजार के स्थिर होने की उम्मीद शायद ज्यादा थी। साथ ही महंगाई लक्ष्य से ऊपर बनी हुई है और तेल की कीमतें बढ़ रही हैं।

रिपोर्ट के अनुसार इन्फॉर्मेशन सर्विसेज सेक्टर में 11,000 नौकरियां कम हुईं, जिसका कारण आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़ी कटौती बताया गया है। वहीं मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में 12,000 नौकरियां घटीं।

जेफरिज में सीनियर इकोनॉमिस्ट थॉमस सिमोन्स ने कहा कि फिलहाल यह जरूरी नहीं कि आगे लगातार खराब रोजगार आंकड़े आएं, लेकिन आर्थिक मंदी का जोखिम जरूर बढ़ गया है।

दिल्ली व आसपास के इलाकों में कई हमले करने की तैयारी थी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): जैश ए मोहम्मद के फरीदाबाद मॉड्यूल मामले की जांच में खुलासा हुआ है कि आतंकी संगठन ने एक मेडिकल संस्थान में घुसपैठ कर डॉक्टरों को भारत में हमले करने के लिए अपने साथ जोड़ लिया था।

जैश ए मोहम्मद के फरीदाबाद मॉड्यूल मामले की जांच में कई चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। जांच एजेंसियों के अनुसार इस "व्हाइट-कॉलर मॉड्यूल" ने करीब 2,500 किलोग्राम अमोनियम नाइट्रेट जुटा लिया था और दिल्ली व आसपास के इलाकों में कई हमले करने की योजना बनाई थी।

खुफिया एजेंसियों को अब एक और साजिश का पता चला है, जिसमें जेईएम स्कूलों व कॉलेजों में घुसपैठ कर छात्रों को कट्टरपंथ की ओर मोड़ने की योजना बना रहा था। संगठन अपने प्रचार सामग्री के जरिए कुछ छात्रों को भर्ती करने की कोशिश कर रहा है, ताकि वे अपने दोस्तों के बीच भी उसकी विचारधारा फैलाएं।

एक अधिकारी ने बताया कि छात्रों को शामिल करने की यह रणनीति दीर्घकालिक योजना का हिस्सा है।

ड्राइवर चाहिए

वजीरपुर, दिल्ली स्थित कार्यालय के लिए ड्राइवरों की आवश्यकता है, जिन्हें सभी प्रकार की गाड़ियां चलाने का अनुभव हो।

संपर्क करें

फोन नंबर- 9310206323,9310739099,9711128325
फोन करें - 10:00 AM to 5:00 PM

चपरासी चाहिए

वजीरपुर, दिल्ली स्थित कार्यालय के लिए चपरासी, जो दसवीं पास हो और ऑफिस के रूटीन कार्य कर सके, फ्रैशर/अनुभवी को प्राथमिकता।

संपर्क करें

फोन नंबर- 9310206323, 9310739099
फोन करें - 10:00 AM to 5:00 PM

विदेश मंत्रालय ने पश्चिम एशिया की स्थिति पर अपडेट जारी किया

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी)। भारत सरकार पश्चिम एशिया और खाड़ी क्षेत्र में विकसित हो रही स्थिति की लगातार निगरानी कर रही है, विशेष रूप से उन भारतीय नागरिकों के कल्याण के संबंध में जो पारगमन के दौरान या अल्पकालिक यात्राओं पर वहां फंसे हुए हैं। क्षेत्र में सभी भारतीय नागरिकों को सलाह दी जाती है कि वे स्थानीय अधिकारियों के दिशानिर्देशों के साथ-साथ अपने स्थान पर भारतीय दूतावास या वाणिज्य दूतावास द्वारा जारी की जा रही सलाहों का पालन करें। इन देशों में हमारे प्रत्येक दूतावास और वाणिज्य दूतावास ने विस्तृत सलाह जारी की है और 24X7 हेल्पलाइन स्थापित की हैं जो मौजूदा स्थिति के कारण चिंताओं को दूर करने में सहायता कर रही हैं।

40 साल से लापता सैनिक की खोज के लिए इजरायली सेना ने चलाया विशेष ऑपरेशन

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): ईरान के साथ चल रही लड़ाई के बीच इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बताया कि उनके सैनिक शुक्रवार की रात को एक विशेष अभियान पर रवाना हुए।

यह अभियान 40 साल पहले लापता हुए एक सैनिक की खोज से जुड़ा हुआ है। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि हमारे वीर योद्धा कल रात एक विशेष अभियान पर रवाना हुए, जिसका उद्देश्य लगभग 40 वर्ष पूर्व लेबनान में बंदी बनाए गए जवान रॉन अराद को ढूंढना और उन्हें घर वापस लाना है। उन्होंने कहा कि कई वर्षों से हम इस लक्ष्य को अथक रूप से प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

पहचान की अपील

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक मृतक नवजात शिशु जिसका **नाम** : नामालूम, **पुत्री** : नामालूम, **पता**: नामालूम, **उम्र** : नवजात शिशु, **कद** : नवजात शिशु, **रंग** : गोरा, **शरीर** : स्वस्थ शिशु, **चेहरा** : अण्डाकार, **पहनावा**: नग्न, जो चौधरी अमीर चंद धर्मशाला स्वरूप नगर दिल्ली में दिनांक 28.02.2026 को 10:00 बजे नग्न अवस्था में मृत मिली। इस संदर्भ में **एफआईआर नं. 90/26, दिनांक 28.02.2026** थाना स्वरूप नगर, दिल्ली में दर्ज है।

पुलिस द्वारा हर संभव कोशिश के बाद भी अब तक इस मृतक नवजात शिशु के बारे में कोई जानकारी या सुराग नहीं मिल पाया है।

यदि किसी भी व्यक्ति को इस मृतक शिशु के बारे कोई जानकारी या सुराग मिले तो अधोहस्ताक्षरी को निम्नलिखित पते पर सूचित करने की कृपा करें।

थानाध्यक्ष
थाना : स्वरूप नगर, दिल्ली
फोन : 011-27811738
7065036327

DP/2935/ON/2026

गुमशुदा की तलाश

संजना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि एक लड़की जिसका **नाम: संजना पुत्री:** श्री चूरामन **पता:** आर-3/ए35, मोहन गार्डन, नई दिल्ली, **लिंग:** महिला, **उम्र:** 17 वर्ष 6 महीने **कद:** 4'9", **रंग:** गोरा, **चेहरा:** लम्बा, **शरीर:** पतला, **पहनावा:** स्काई ब्लू कलर का डॉटेड सूट, डस्ट कलर का प्लाजो और पैरों में ब्लैक कलर की चप्पल पहन रखी है जो दिनांक 25.02.2026 से आर-3/ए35, मोहन गार्डन, नई दिल्ली, थाना क्षेत्र मोहन गार्डन, नई दिल्ली, से लापता है।

इस बाबत **FIR No. 057/2026, U/s 137(2) BNS, दिनांक: 26.02.2026 थाना: मोहन गार्डन, नई दिल्ली,** में दर्ज है। स्थानीय पुलिस द्वारा हर संभव कोशिश के बाद भी इस लापता लड़की के बारे में कुछ मालूम नहीं हो पाया है। अगर किसी को भी इस लापता लड़की के बारे में कोई जानकारी मिले तो कृपया निम्नलिखित पर सूचित करें।

वेबसाईट: http://cbi.nic.in
ई-मेल: cic@cbi.gov.in
फैक्स: 011-24368639
DP/2923/DW/2026

थानाध्यक्ष
पुलिस स्टेशन: मोहन गार्डन, नई दिल्ली
मो. नं. 8750871029, 8851199334
9910260135, 9540979930

पहचान के लिए अपील

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक अज्ञात व्यक्ति जिसका **नाम: अज्ञात, पुत्र: अज्ञात, निवासी: अज्ञात जोकि दिनांक 01.03.2026 को सुबह 6:00 बजे किलोमीटर पोल संख्या-1523/20-22, कंटेनर डिपो, ओखला फेज-II, दिल्ली में मृत पाया गया।** इस संदर्भ में **DD No. 7A, U/s: 194(1)** भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, **2023, Dated 01.03.2026** पुलिस थाना **हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन, दिल्ली** में रिपोर्ट दर्ज है। शव को पहचान के लिए एलएनजेपी अस्पताल शवगृह में 72 घंटे के लिए सुरक्षित रखा गया है। नीचे मृत व्यक्ति का हुलिया दिया गया है:

नाम: अज्ञात, उम्र: 30 वर्ष, कद: 5'5", रंग: गेहुँआ, पहनाव: काले रंग की हाफ टी-शर्ट और नीले रंग का लोअर, साइड में सफेद तीन लाइन के साथ।

अगर किसी को इस मृत व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी मिले कृपया नीचे दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

थाना प्रभारी
पुलिस थाना हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन, दिल्ली
DP/2857/RLY/2026 फोन: 7303708714, 9540046098

गुमशुदा की तलाश

मुन्नी कुमारी

आम जनता को सूचित किया जाता है कि यह महिला (फोटो में दर्शायी गयी है) नाम: **मुन्नी कुमारी, पुत्री: श्री प्रभु सेन, निवासी: मकान नं. टी-93, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली 22.02.2026 को शाम 5.00 बजे** अपने घर/मालवीय नगर थाना क्षेत्र से लापता/अपहृत हो गयी है। इस संबंध में **DD No. 08A दिनांक 28.02.2025** के तहत **थाना मालवीय नगर, दक्षिण जिला, नई दिल्ली** में मामला दर्ज किया गया है।

उनका शारीरिक विवरण इस प्रकार है:-

लिंग: स्त्री, **उम्र:** 20 वर्ष, **कद:** 5', **रंग:** गोरा, **बनावट:** मध्यम, **पहनावा:** काले रंग का सूट, सफेद रंग की सलवार और लाल रंग की शॉल।

स्थानीय पुलिस द्वारा लापता महिला का पता लगाने के लिए गंभीर प्रयास किए गए हैं लेकिन अभी तक कोई सुराग सामने नहीं आया है यदि किसी को इस महिला के बारे में कोई जानकारी हो तो कृपया निम्नलिखित को सूचित करें।

फोन नंबर: 011-24368638, 011-24368641 | **फैक्स नंबर:** 011-24368639
ईमेल आईडी: cic@cbi.nic.in | **वेबसाइट:** http://cbi.nic.in

थानाध्यक्ष
थाना मालवीय नगर, नई दिल्ली
DP/2959/SD/2026 फोन: 011-2659186, 7065569292, 8750870822

शिमला-चंडीगढ़ रूट पर अब रोज दो उड़ानें

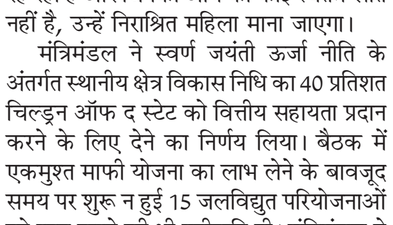

शिमला, विक्रांत सूद(पंजाब केसरी): मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में आज यहां आयोजित राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। मंत्रिमंडल ने हिमाचल प्रदेश पंचायती राज (निर्वाचन) नियम, 1994 के नियम 28, 87, 88 और 89 में प्रस्तावित संशोधनों पर आम जनता से आपत्तियां और सुझाव आमंत्रित करने का निर्णय लिया। प्रस्तावित संशोधनों के अनुसार, वर्ष 2010 को आधार वर्ष मानते हुए जो पंचायतें लगातार दो कार्यकाल तक आरक्षित रही हैं, उन्हें आगामी पंचायत चुनावों में आरक्षित नहीं किया जाएगा।

बैठक में सामाजिक सुरक्षा पेंशन नियम, 2010 में संशोधन को भी स्वीकृति दी गई, जिसके तहत 'निराश्रित' शब्द को अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है तथा लाभ प्राप्त करने के लिए प्रमाणन प्रक्रिया को सरल बनाया गया है। संशोधित प्रावधानों के अनुसार, वे महिलाएं जिन्हें उनके पति ने छोड़ दिया है, जो उनके साथ नहीं रह रही हैं और जिनकी आय का कोई स्वतंत्र स्रोत नहीं है, उन्हें निराश्रित महिला माना जाएगा।

मंत्रिमंडल ने स्वर्ण जयंती ऊर्जा नीति के अंतर्गत स्थानीय क्षेत्र विकास निधि का 40 प्रतिशत चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए देने का निर्णय लिया। बैठक में एकमुश्त माफी योजना का लाभ लेने के बावजूद समय पर शुरू न हुई 15 जलविद्युत परियोजनाओं को रद्द करने की भी स्वीकृति दी। मंत्रिमंडल ने पंडोह में 10 मेगावाट क्षमता की लघु जलविद्युत परियोजना को भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बीबीएमबी) को इस शर्त पर आवंटित करने का निर्णय लिया कि बीबीएमबी उपयोग में न लाई गई भूमि राज्य सरकार को वापस करेगा।

12 राशियां और आपका दिन

Forecast for 8March 2026
By: Dr. Prem Kumar Sharma
(Astrologer, Palmist, Numerologist & Vastu Consultant)
Email: psharma@premastrologer.com,
Url: http://www.premastrologer.com
Contact: Panchkula: +91-172-2562832, 2572874
Delhi: +91-11-47033152/40532026

premastrologer premastrologer premastrologer askpremastrologer

रविवार 8 मार्च 2026

आज का राशिफल

मेष ARIES (21 मार्च - 20 अप्रैल)
आज खर्चा कंट्रोल से बाहर जा सकता है। हेल्थ इश्यू को इग्नोर न करें। आपकी स्किल्स बिजनेस में नए मौके दिला सकती हैं। कोई क्लोज फ्रेंड दिन को मजेदार बना देगा।
लकी नंबर: 18, लकी कलर: बेज

वृषभ TAURUS (21 अप्रैल - 20 मई)
आज लक आपके फेवर में होगा। इन्वेस्टमेंट का गोल्डन मौका मिल सकता है। नए फिटनेस रूटीन का असर दिखेगा।घर में पॉजिटिव वाइब्स बनी रहेगी। फ्रेंड्स के साथ ट्रिप एंजॉयमेंट वाली रहेगी। **लकी नंबर: 6, लकी कलर: गोल्डन**

मिथुन GEMINI (21 मई - 21 जून)
बच्चों के साथ अच्छा टाइम बिताएंगे। पैसों के मामले में किस्मत साथ देगी। डिटॉक्स या लाइट डाइट आपको फ्रेश फील कराएगी। सोशल सर्कल में कोई आपसे मदद मांग सकता हैं। **लकी नंबर: 4, लकी कलर: लाइट ब्लू**

कर्क CANCER (22 जून - 22 जुलाई)
आज रिएक्ट करने की बजाये शांति से काम लें। मैरेज प्रपोजल की बात आगे बढ़ सकती है। फिटनेस के लिए हेल्दी चॉइस अपनाए। ट्रैवल ज्यादा रहेगा पर रिजल्ट भी देगा।
लकी नंबर: 1, लकी कलर: येलो

सिंह LEO (23 जुलाई - 23 अगस्त)
सोशल लाइफ में कोई स्पेशल मूमेंट एन्जॉय करेंगे। घर में किसी की जिद से मूड खराब हो सकता है, इग्नोर करें। फैमिली ट्रिप पोस्टपोन हो सकती है।
लकी नंबर: 7, लकी कलर: ग्रे

कन्या VIRGO (24 अगस्त - 23 सितंबर)
फैमिली मेंबर का मूड स्विंग झेलना पड़ सकता हैं। वर्कआउट करने वालों को शानदार रिजल्ट मिलेंगे। फ्रेंड की एडवाइस इन्वेस्टमेंट में काम आएगी। लॉन्ग ड्राइव में डिले हो सकता है। किराये के लिए कोई फ्लैट देख सकते हैं।
लकी नंबर: 22, लकी कलर: क्रीम

तुला LIBRA (24 सितंबर - 23 अक्टूबर)
किसी को आपकी हेल्प की जरूरत होगी। जंक फूड से बचें। घर में शादी का माहौल एक्साइटमेंट बढ़ाएगा। ट्रेन जर्नी थका सकती है। प्रॉपर्टी मामलों में बिजी रहेंगे।
लकी नंबर: 6, लकी कलर: व्हाइट

वृश्चिक SCORPIO (24 अक्टूबर - 22 नवंबर)
प्रॉपर्टी से जुड़ी बातचीत आपके हक़ में होगी। परिवार में कोई आपकी शान बढ़ाएगा। मैडिटेशन को आज रूटीन में शामिल करें। आपका आउटिंग प्लान सबको पसंद आएगा।
लकी नंबर: 8, लकी कलर: रेड

धनु SAGITTARIUS (23 नवंबर - 21 दिसंबर)
दिन को अच्छे से मैनेज करेंगे। घर की प्लानिंग में पूरी तरह इन्वॉल्व रहेंगे। जिम ज्वाइन करने का सही समय है। लॉन्ग ट्रैवल में किसी को साथ लेकर जाए।
लकी नंबर: 1, लकी कलर: बेबी पिंक

मकर CAPRICORN (22 दिसंबर - 21 जनवरी)
फैमिली में किसी से मतभेद हो सकता हैं, ओवररिएक्ट न करें। हेल्दी फूड और एक्टिव लाइफस्टाइल फिट रखेगा। ट्रिप खास और यादगार रहेगा।रिश्ते में आई दूरी को कम करें।
लकी नंबर: 3, लकी कलर: पर्पल

कुंभ AQUARIUS (22 जनवरी - 19 फरवरी)
वेकेशन प्लान बन सकता है। प्रॉपर्टी पेपर वर्क फाइनल स्टेज पर है। स्टडीज में लर्निंग प्रोसेस सैटिस्फैक्ट्री रहेगा। इन्फ्लुएंशल पर्सनैलिटी के साथ नेटवर्क मजबूत होगा। कमाई के नए मौके सामने आएंगे।
लकी नंबर: 9, लकी कलर: पीच

मीन PISCES (20 फरवरी - 20 मार्च)
फैमिली गेट-टुगेदर पुराने कनेक्शन रिफ्रेश करेगा। डेली एक्सरसाइज से सेहत अच्छी रहेगी। किसी एक्साइटिंग जगह जाने का मौका मिलेगा। नई प्रॉपर्टी का सपना सच हो सकता है। रिलेशनशिप में नई शुरुआत संभव है।
लकी नंबर: 2, लकी कलर: क्रीम

संपादकीय जागरण

रविवार, 8 मार्च, 2026: चैत्र कृष्ण - 5 वि. 2082

आत्मविश्वास का अभाव उन्नति में सबसे बड़ा अवरोध है

हंगामे के आसार

संसद के बजट सत्र के दूसरे चरण का प्रारंभ हंगामे से होने के आसार पर आश्चर्य नहीं। अब संसद के प्रत्येक सत्र की शुरुआत हंगामे से ही होती है और कई बार तो पूरा सत्र उसी की भेंट चढ़ जाता है। बजट सत्र के दूसरे चरण में एक तो लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर बहस के दौरान पक्ष-विपक्ष में तकरार तय है और दूसरे, ईरान पर इजरायल-अमेरिका के हमले को लेकर विपक्ष की ओर से सरकार को घेरने के चलते आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला देखने को मिल सकता है। लोकसभा स्पीकर के खिलाफ विपक्ष की ओर से लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर चाहे जितनी तीखी बहस हो, उसका नतीजा तय है। चूंकि सत्तापक्ष का बहुमत है और प्रधानमंत्री ने सत्र शुरू होने के पहले लोकसभा अध्यक्ष की प्रशंसा करते हुए जिस तरह कहा कि वे अहंकारी-उत्पाती छात्रों को ठीक करना जानते हैं, उससे यह स्पष्ट है कि वे सत्तापक्ष को ओम बिरला के पक्ष में एकजुट होने का संदेश दे रहे हैं। इस अविश्वास प्रस्ताव पर शक्ति परीक्षण भी देखने को मिल सकता है, क्योंकि भाजपा और कांग्रेस, दोनों ने अपने लोकसभा सदस्यों को 9-10 मार्च को सदन में उपस्थित रहने के लिए व्हिप जारी कर दिया है।

भले ही उच्च सदन को वरिष्ठों का सदन कहा जाता हो और यह अपेक्षा की जाती हो कि इस सदन के सदस्य सभी विषयों पर कहीं अधिक धीर-गंभीर और दलगत हितों से ऊपर उठकर चर्चा करेंगे, लेकिन सच यह है कि अब लोकसभा की तरह राज्यसभा में भी हंगामे के दृश्य दिखना आम हो गया है। बजट सत्र के दूसरे चरण के पहले कांग्रेस समेत कई पार्टियों ने इजरायल-अमेरिका द्वारा ईरान पर किए गए हमले और ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत पर भी बयान जारी करने की मांग की है। हालांकि सरकार की ओर से खामेनेई की मौत पर शोक जताया जा चुका है, लेकिन कांग्रेस समेत कई विपक्षी दल इस पर जोर दे सकते हैं कि सरकार उनके मन माफिक बयान जारी करे। विपक्षी दल इससे अनजान नहीं हो सकते कि इजरायल-अमेरिका और ईरान के बीच सैन्य संघर्ष से जो जटिल स्थिति उपजी है, वह ऐसी नहीं कि सरकार किसी एक के पक्ष में खुलकर खड़ी हो सके। इस स्थिति से सबसे अच्छी तरह लंबे समय तक केंद्र की सत्ता में रही कांग्रेस अवगत होगी, पर वही इस मामले में अपने संकीर्ण रवैये का परिचय देने में सबसे आगे रह सकती है। इसका प्रमाण सोनिया गांधी का वह लेख है, जिसमें उन्होंने पश्चिम एशिया संकट पर सरकार के रवैये को कोसा। कम से कम कांग्रेस को तो यह पता होना चाहिए कि विदेश नीति किसी दल या सरकार की नहीं, बल्कि देश की होती है और उस पर पक्ष-विपक्ष को न केवल सहमति कायम करनी चाहिए, बल्कि उसका प्रदर्शन भी करना चाहिए।

सख्त कार्रवाई जरूरी

दिल्ली के उत्तम नगर थाना क्षेत्र में होली के दिन बच्ची के हाथ से पानी का गुब्बारा गिरने के बाद महिला पर छींटें गिरने से शुरू हुए विवाद में युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। हत्या करने वाले और पीड़ित परिवार पड़ोसी हैं और एक-दूसरे को करीब 50 वर्षों से जानते थे। इसके बावजूद मामूली विवाद का इस हद तक पहुंचना अत्यंत दुखद और चिंताजनक है। इस घटना के बाद से उत्तम नगर क्षेत्र में तनाव है। पुलिस को इस मामले की निष्पक्ष जांच करनी चाहिए। हत्या में 15 से अधिक लोगों के शामिल होने की बात कही जा रही है। अब तक इनमें से छह को गिरफ्तार किया जा चुका है तथा एक नाबालिग को भी पकड़ा गया है।

युवक की हत्या के मामले में पुलिस को निष्पक्ष जांच कर आरोपितों को कड़ी सजा दिलानी चाहिए

इस मामले में सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि लोगों के बीच वैमनस्य बढ़ रहा है। मामूली बातों पर हत्या की कई घटनाएं पहले भी हो चुकी हैं। जांच में यह भी सामने आया है कि दोनों पड़ोसियों के बीच कुछ महीनों से पार्किंग तथा कूड़ा फेंकने को लेकर विवाद था। ऐसे विवाद आम हैं, लेकिन इस कारण किसी की हत्या करना अत्यंत गंभीर अपराध है। जिस प्रकार कई लोगों ने मिलकर युवक की हत्या की, उससे यह प्रतीत होता है कि यह एक सुनियोजित साजिश थी। इस घटना से लोगों में आक्रोश स्वाभाविक है, लेकिन पुलिस के साथ-साथ समाज के सभी सदस्यों को सामाजिक सौहार्द बनाए रखने में अपना योगदान देना चाहिए।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या इजरायल-अमेरिका और ईरान युद्ध के प्रति भारत का रुख सही है?

आज का सवाल

क्या न्यूजीलैंड के विरुद्ध फाइनल मैच में वरुण चक्रवर्ती की जगह कुलदीप यादव को मौका दिया जाना चाहिए?

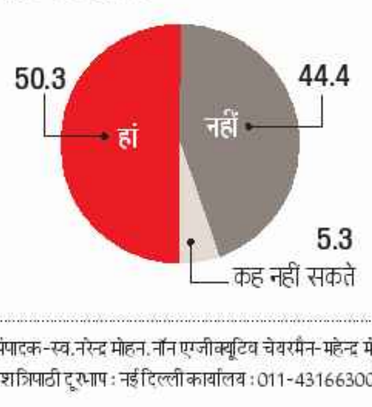

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

वैश्विक संकट बढ़ाने वाला युद्ध

संजय गुप्त

यदि ईरान के खिलाफ अमेरिका और इजरायल की ओर से छेड़ा गया युद्ध लंबा खिंचा तो शेष विश्व के साथ अमेरिकी अर्थव्यवस्था का भी संकट बढ़ सकता है

जैसी आशंका थी, वैसा ही हुआ। अमेरिका ने इजरायल के साथ मिलकर ईरान पर हमला बोल दिया। इस हमले को लेकर राष्ट्रपति ट्रंप का तर्क है कि वे वहां सत्ता बदलने के साथ ईरान की परमाणु हथियार निर्माण क्षमता खत्म करना चाहते हैं। अमेरिका और इजरायल के संयुक्त हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अली खामेनेई की मौत के साथ ही करीब 40 वर्षों से सत्ता पर काबिज एक कठोर मजहबी शासन के संचालक का अंत हो गया, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि इस देश में सत्ता परिवर्तन भी होने जा रहा है। फिलहाल इसके कोई संकेत नहीं। अमेरिका और इजरायल ईरान पर हमले के लिए चाहे जो तर्क दें, उसे वैध नहीं कहा जा सकता। यह वैसा ही मनमाना हमला है, जैसा वेनेजुएला में किया गया था। अमेरिका पिछले काफी समय से ईरान की घेरेबंदी के साथ ही उससे वार्ता भी कर रहा था। इस वार्ता के बीच ही उसने ईरान पर हमला कर दिया।

ईरान अमेरिका और इजरायल के संयुक्त हमलों का जवाब देने में लगा हुआ है। वह इजरायल को निशाना बनाने के साथ ही पड़ोसी देशों सऊदी अरब, बहरीन, कतर, संयुक्त अरब अमीरात आदि में अमेरिकी सैनिक ठिकानों के साथ इन देशों के नागरिक क्षेत्रों को भी निशाना बना रहा है। इससे पूरे पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ रहा है। ईरान ने खाड़ी के देशों में मिसाइलें और ड्रोन दागने के साथ ही होर्मुज समुद्री जल मार्ग बंद कर दिया है। उसने इस जल मार्ग से निकलने की कोशिश कर रहे कुछ तेल टैंकरों पर भी हमला किया। होर्मुज जल मार्ग बंद होने से पश्चिम एशिया से आने वाले तेल एवं गैस की आपूर्ति रुक गई है। इस जल मार्ग से दुनिया के कुल उपभोग के लगभग एक चौथाई हिस्से की तेल एवं गैस की आपूर्ति होती है। होर्मुज स्ट्रेट बंद होने से भारत समेत दुनिया के कई देशों को तेल एवं गैस की आपूर्ति बाधित होने की आशंका गहरा गई है। यदि पश्चिम एशियाई देशों से तेल एवं गैस की आपूर्ति लंबे समय तक बाधित रहती है तो विश्व में ऊर्जा संकट खड़ा हो सकता है। ईरान पड़ोसी देशों के नागरिक ठिकानों पर हमला कर और फिर होर्मुज जल मार्ग को बंद करके खुद को विश्व से अलग-थलग करने का ही काम कर रहा है। यदि उसने अपना रवैया नहीं बदला तो उसके प्रति जो थोड़ी-बहुत सहानुभूति है, वह खत्म होने में देर नहीं लगेगी, क्योंकि तेल के दाम लगातार बढ़ रहे हैं और इससे दुनिया की बेचैनी बढ़ती जा रही है।

इजरायल-अमेरिका और ईरान युद्ध ने भारत के सामने कूटनीतिक संतुलन साधने की चुनौती भी खड़ी कर दी है, क्योंकि उसके संबंध दोनों पक्षों से है।

अवधेश राजपूत

हालांकि भारत ने खामेनेई की मौत पर शोक व्यक्त किया है और लगातार ऐसे बयान दे रहा है कि किसी भी विवाद का समाधान संवाद से होना चाहिए, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि खामेनेई के नेतृत्व वाला ईरान का मजहबी शासन तंत्र निरंकुश था। वह अपने ही लोगों का दमन करने के लिए कुख्यात था। कुछ ही दिनों पहले उसकी पुलिस ने उन हजारों प्रदर्शनकारियों को मारा, जो उसकी नीतियों से नाराज होकर सड़कों पर उतरकर विरोध कर रहे थे। खामेनेई के पूर्ववर्ती खुमैनी इस्लामिक क्रांति के नाम पर राजशाही को हटाकर ईरान की सत्ता पर काबिज हुए थे। उन्होंने अपने लोगों को कट्टर इस्लामिक तौर-तरीके अपनाने के लिए बाध्य किया। उनके निधन के बाद उनकी जगह कमान संभालने वाले खामेनेई भी उन्हीं के रास्ते पर चले। उनके सत्ता में रहते ईरान ने हमास, हिजबुल्ला, हाउती जैसे चरमपंथी गुटों को सहयोग और समर्थन दिया। ये सभी गुट इजरायल के लिए खतरा बने हुए हैं।

ईरान में इस्लामिक क्रांति के बाद से अमेरिका ने कई बार वहां के असंतुष्टों को विद्रोह के लिए उकसाया, पर वह सफल नहीं हो सका और दूसरी ओर ईरान ने इन असंतुष्टों का निर्ममता से दमन किया। हालिया विद्रोह को भी उसने निर्ममता से कुचला। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं कि खामेनेई की मौत के बाद उनका उत्तराधिकारी कौन बनेगा। इसमें संदेह है कि अमेरिका वहां सत्ता परिवर्तन करा सकेगा। यदि वह इसमें सफल नहीं हुआ तो ट्रंप के इरादों पर पानी ही फिरेगा। संदेह इस पर भी है कि इजरायल और अमेरिका ईरान की परमाणु हथियार निर्माण क्षमता खत्म कर सकेंगे। पिछले वर्ष जून में जब इन दोनों देशों ने ईरान पर हमला किया था, तब यह दावा किया था कि उसके परमाणु हथियार संबंधी तंत्र को ध्वस्त कर दिया गया।

ईरान ने अपनी समस्या इसलिए बढ़ा ली है, क्योंकि एक तो वह परमाणु हथियार बनाने पर आमादा है और दूसरे इजरायल को दुनिया के नक्शे से मिटाने की बातें करता रहता है। इस कारण पश्चिमी देश उससे सशंकित रहते हैं। ईरान कठोर अमेरिकी प्रतिबंधों का सामना करने के बाद भी न तो हमास, हिजबुल्ला जैसे गुटों को हथियार एवं पैसा देने की अपनी नीति छोड़ रहा है और न ही परमाणु हथियार बनाने के इरादे का परित्याग कर रहा है। इन प्रतिबंधों के चलते उसकी अर्थव्यवस्था खस्ताहाल है। वह इसके बाद भी अपना रवैया बदलने के लिए तैयार नहीं कि उसके समर्थक देश रूस और चीन उसकी एक सीमा से अधिक मदद करने में सक्षम नहीं।

यह सही है कि खामेनेई की मौत से ईरानी जनता का एक वर्ग खुश है, लेकिन यह कहना कठिन है कि वह सत्ता परिवर्तन में सहायक बन सकेगा, क्योंकि ईरानी सेना और खासकर इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कोर की देश पर मजबूत पकड़ है। ऐसा लगता है कि अमेरिका ने बिना किसी ठोस रणनीति के ईरान पर हमला कर दिया, क्योंकि सभी नाटो देश उसका साथ देने के इच्छुक नहीं। ट्रंप ने इस हमले से विश्व अर्थव्यवस्था के समक्ष जो संकट बढ़ाया है, उसकी चपेट में वह भी आएगा। लगता है सुप्रीम कोर्ट की ओर से अपनी टैरिफ नीति खारिज किए जाने से अपनी कमजोर होती स्थिति से अपने लोगों को ध्यान बंटाने के लिए ट्रंप ने ईरान को निशाना बनाया। यदि ट्रंप प्रशासन को अवैध ठहराए गए टैरिफ को वापस करना पड़ा और ईरान से युद्ध लंबा खिंचा तो शेष विश्व के साथ अमेरिकी अर्थव्यवस्था भी चरमरा सकती है। इसी के साथ ट्रंप का वैश्विक तेल कारोबार पर अपना दबदबा बनाने और इस बहाने डालर का वर्चस्व कायम रखने का सपना भी टूट सकता है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि वेनेजुएला की तरह ईरान भी अपना तेल डालर में नहीं बेच रहा था।

response@jagran.com

डर को भी डिजिटल बनाते जालसाज

हास्य-व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

असली पुलिस कहती है कि थाने आ जाइए और नकली पुलिस कहती है कि फोन मत काटिए

दुनिया डिजिटल हो रही है तो डिजिटल अरेस्ट का सिलसिला भी चल निकला है। कभी भी किसी अनजाने नंबर से आपके मोबाइल पर अचानक 'कानून' बरस सकता है। पहले पुलिस दरवाजा खटखटाती थी। अब नोटिफिकेशन खटखटाता है। आपका मोबाइल बजता है और दूसरी तरफ कानून बैठा होता है। वह भी एचडी क्वालिटी में नकली बैज के साथ। उसकी आवाज में इतना आत्मविश्वास होता है कि असली पुलिस भी कभी-कभी चकरा जाए। दरअसल डिजिटल गिरफ्तारी डर का स्टार्टअप है। इसका बिजनेस माडल है कि आप डरें और वे कमाएं। अब अपराधी गिरोह भी पूरी तरह 'टेक'सेवी हो चुके हैं। वे पहले आपका नाम लेते हैं, फिर गिरफ्तारी का डर दिखाते हैं, फिर बैंक का और अंत में राष्ट्रहित का हवाला देते हैं। राष्ट्रहित की बात सुनते ही आदमी खुद ही अपना हित छोड़ देता है। डिजिटल गिरफ्तारी का सबसे बड़ा हथियार होता है 'तुरंत'। तुरंत काल उठाइए। तुरंत वीडियो आन कीजिए। तुरंत सहयोग कीजिए और सबसे महत्वपूर्ण है, तुरंत पैसे भेजिए।

हमारा समाज भी अद्भुत है। हम बिजली का बिल देर से भर सकते हैं, टैक्स देना टाल सकते हैं, डाक्टर की सलाह टाल सकते हैं, पर डर को कभी नहीं टालते हैं। डिजिटल गिरफ्तारी ने समाज को नया अनुभव दिया है। घर बैठे अपराधी होने का अहसास। अपने घर को ही डिटेंशन सेंटर समझने का भाव। सुबह चाय पी रहे होते हैं और पता चलता है कि आप अंतरराष्ट्रीय मनीलांड्रिंग में सक्रिय हैं। जिस व्यक्ति का यूपीआइ दिन में दो बार 'लो बैलेंस' दिखाता है, वह अचानक वैश्विक वित्तीय अपराध का केंद्र बन जाता है। यह आत्मसम्मान का भी एक अनोखा क्षण होता है। तकनीक ने अपराधियों को दक्ष बना दिया है। वे गूगल से 'लोगो' डाउनलोड करते हैं, यूट्यूब से पुलिस की आवाज सीखते हैं और वाट्सएप से कानून चलाते हैं। इतना डिजिटलीकरण तो हमारे यहां अभी कई विभागों में भी नहीं हुआ है।

डिजिटल गिरफ्तारी का मनोविज्ञान दिलचस्प है। अपराधी आपको अकेला करता है। फोन मत काटिए। किसी से बात मत कीजिए। यह गोपनीय मामला है। फिर स्क्रीन शेयर होती है और भारतीय नागरिक का सबसे निजी दस्तावेज खुलता है, बैंक बैलेंस। यहीं से अपराधी का उत्साह और पीड़ित का आत्मसम्मान दोनों धीरे-धीरे गिरने लगते हैं। कई बार अपराधी भी निराश हो जाते हैं। उन्होंने सोचा होगा कि आज बड़ा केस फंसा है और स्क्रीन पर बैलेंस आता है 984 रुपये। इस डिजिटल गिरफ्तारी ने एक नया सामाजिक वर्ग बनाया है और वह है संभावित आरोपित नागरिक। इस वर्ग की कुछ विशेषताएं हैं। जैसे फोन उठाते ही डरना, वीडियो काल में बैकग्राउंड देखना और अनजान नंबर को कानून मान लेना। यह युग प्रमाण का नहीं, प्रस्तुति का है। जिसने बैज दिखा दिया, आइडी दिखा दी, वही अधिकारी। जिसने आवाज भारी कर ली, वही विभाग। जिसने अंग्रेजी में चेतावनी दे दी, वही आला हाकिम। सबसे रोचक बात यह होती है कि असली पुलिस कहती है कि थाने आ जाइए और नकली पुलिस कहती है कि फोन मत काटिए। यानी असली व्यवस्था आपको बाहर बुलाती है, नकली आपको मोबाइल में कैद करती है। इस डिजिटल गिरफ्तारी ने डर को भी डिजिटल बना दिया है। इस डर से बचने का सरल मंत्र है कि बैज स्क्रीन पर दिखे तो भरोसा न करें, आवाज भारी हो तो प्रभावित न हों और कोई कहे कि आप डिजिटल अरेस्ट में हैं, तो समझें कि ये कानून के लंबे हाथ नहीं, बल्कि जालसाजों का जाल है। आप प्यार से कहिए कि-प्यारे गलत नंबर लगा दिया है।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

युद्ध क्षेत्र में फंसे भारतीय

(संख्या लाख में)

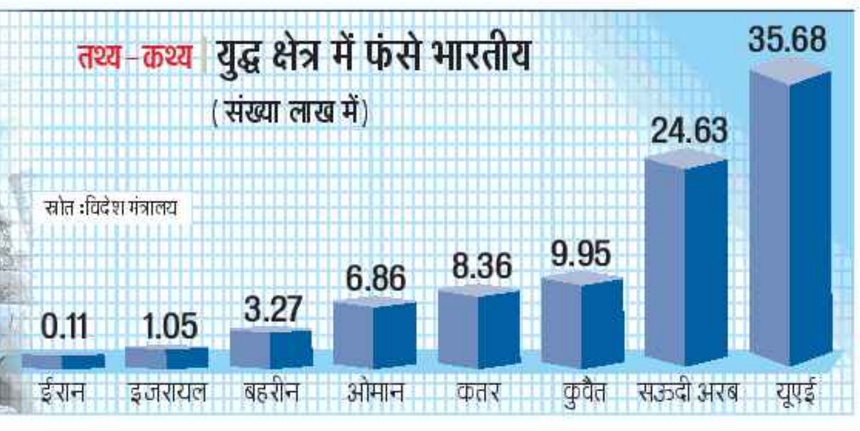

ऊर्जा

शरणागति

शरणागति अपने इष्ट के प्रति निरहंकारी, निस्वार्थ और निशब्द रहकर 'केवल भगवान ही रक्षक हैं'-इस समर्पित भाव से भक्ति में लीन होने की अवस्था है। भगवत्प्राप्ति का यह सबसे सरल और सर्वोत्तम साधन माना गया है, जिसमें आस्थावान भक्त के अडिग विश्वास के प्रति न्याय करने का उत्तरदायित्व स्वयं भगवान लेते हैं। शरणागति में केवल भक्त का विश्वास, प्रेम और समर्पण सर्वोपरि होता है। यह एक गहरी आध्यात्मिक संकल्पना है, जो भक्त को अपना सर्वस्व इष्ट के चरणों में अर्पित करने के लिए प्रेरित करती है।

केवल भगवान के अनुकूल ही सोचना, उनके प्रति प्रतिकूल विचारों से विरत रहना और यह दृढ़ विश्वास रखना कि वे ही एकमात्र रक्षक हैं-इसी निस्सहाय भाव से स्वयं को उन्हें सौंपते हुए निश्चिंत हो जाने का नाम ही शरणागति है। जब भक्त 'अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में, है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में' के संकल्प और दृढ़ विश्वास के साथ आर्त भाव से शरणागत होता है तो परमात्मा को वह पुकार उसकी ओर खींचने का काम करती है। उसे सुनकर तत्क्षण संबल और संरक्षण देने में उनकी तत्परता निर्विवाद रही है।

भगवान से कुछ मांगकर की जाने वाली शरणागति को 'सकाम', बिना कुछ मांगे की जाने वाली को 'निष्काम' और केवल भगवान पर ही पूर्णतः आश्रित शरणागति को 'अनन्य शरणागति' कहा गया है। शरणागत होने से आंतरिक शांति प्राप्त होती है, अहंकार का नाश होता है और प्रभु की कृपा एवं प्रेम का सौभाग्य मिलता है। एक शरणागत भक्त को प्रभु के रूप, गुण, नाम और लीलाओं के चिंतन में रत रहकर निरंतर यही प्रार्थना करनी चाहिए-हे प्रभो! अपने चरणों में रखना, अपनी शरण में रखना और हर पल अपनी लगन में रखना।' यही भाव जीवन में आत्मिक संतुष्टि का भाव भरता है।

एसएन दुबे 'स्नेही'

चूका आकलन

राजरंग

कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने हाल में ईरान के सर्वोच्च नेता अली खामेनेई की मौत के संदर्भ में एक लेख लिखकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। लेख में खामेनेई की मौत पर सरकार की कथित चुप्पी पर सवाल उठाते हुए भारत की वर्तमान विदेश नीति की आलोचना की गई है। हालांकि कांग्रेस नेता इस विमर्श को आगे बढ़ा रहे हैं, लेकिन बड़े स्तर पर यह सवाल भी खड़े हो रहे हैं कि क्या कांग्रेस देश की वर्तमान भावनाओं और रणनीतिक वास्तविकताओं को समझने में चूक कर रही है। किसी भी संप्रभु राष्ट्र की विदेश नीति सदैव राष्ट्रीय हितों के अनुरूप ही निर्धारित होती है और वैश्विक परिस्थितियों के साथ बदलती रहती है। आज के दौर में जब ईरान अपने मुस्लिम पड़ोसियों पर मिसाइलें दाग रहा है और क्षेत्र में अस्थिरता के कारण लाखों भारतीयों की सुरक्षा पर संकट खड़ा हो रहा है, तब यह प्रश्न प्रासंगिक हो जाता है कि क्या खामेनेई के प्रति सहानुभूति राष्ट्रहित से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है। वर्तमान में भारत ने एक 'समान दूरी' की नीति अपना रखी है, जहां न तो अमेरिका और इजरायल का अंधसमर्थन है और न ही ईरान से कोई सीधा विरोध। स्वयं कांग्रेस के भीतर भी एक वर्ग का मानना है कि विदेश नीति जैसे संवेदनशील विषयों पर लेख लिखने से पहले सोनिया गांधी को शशि थरूर जैसे अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञों और युवाओं की नब्ज समझने वाले नेताओं से परामर्श करना चाहिए था। आरोप लग रहे हैं कि आलाकमान उन सलाहकारों पर निर्भर है जिनके पुराने फार्मूले लगातार विफल हो रहे हैं। यह वर्ग यह समझने में असमर्थ है कि देश की एक बड़ी आबादी का मानना है कि यहूदियों के साथ ऐतिहासिक रूप से अन्याय हुआ है और आज भी वे आतंकवाद के उसी खतरे का सामना कर रहे हैं, जैसा खतरा भारत को अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान से रहता है।

ट्रंप का 'लोकतंत्र'

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने अप्रत्याशित और मनमाने फैसलों के कारण भले ही अमेरिका में सुप्रीम कोर्ट और उद्यमियों के निशाने पर रहते हों, लेकिन भारत के संदर्भ में उनका अंदाज पूरी तरह 'लोकतांत्रिक' और दोस्ताना नजर आता है। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव का दौर हो या अन्य वैश्विक मंच, ट्रंप ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति अपना विशेष सम्मान और मित्रता प्रदर्शित करने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी है। उन्होंने सार्वजनिक रूप से कई बार मोदी को अपना प्रिय मित्र बताकर उनकी सराहना की है। स्वाभाविक है कि ट्रंप की ये बातें भारत के विपक्षी दलों को अखरती रही हैं, और रोचक तथ्य यह है कि ट्रंप अब इसका भी पूरा ख्याल रख रहे हैं। पिछले कुछ समय से भारत सरकार को घेरने के लिए विपक्ष जिन मुद्दों की तलाश में रहता है, वे अमेरिका से ही मिल रहे हैं। चाहे 'आपरेशन सिंदूर' का संवेदनशील मामला हो, टैरिफ को लेकर मची रार हो या अब रूस से तेल खरीद पर छूट के दावों का नया विवाद-ट्रंप के बयान लगातार भारतीय विपक्ष को संजीवनी और नए मुद्दे प्रदान कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में सरकार के कूटनीतिक पैमानों पर अमेरिकी राष्ट्रपति कितने खरे उतर रहे हैं, यह चर्चा का विषय हो सकता है, लेकिन भारतीय विपक्ष के लिए वे फिलहाल एक प्रभावी 'ट्रंप कार्ड' जरूर साबित हो रहे हैं।

जवाब की कूटनीति

कूटनीति में पर्दे के पीछे बहुत कुछ ऐसा होता है, जिसका बाहर कोई जिक्र भी नहीं करता, लेकिन ऐसी गतिविधियां संबंधों को परिभाषित करने में बहुत अहम भूमिका निभाती हैं। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बीच नई दिल्ली में आयोजित हुए 'रायसीना डायलाग' के दौरान भी ऐसा हुआ कि कुछ शक्तिशाली देशों की तरफ से अपना एजेंडा चलाने की कोशिश की गई। पहले दिन अमेरिकी सरकार के कुछ वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने इस मंच का इस्तेमाल न सिर्फ अपनी बात रखने के लिए किया, बल्कि उन्होंने दबाव बनाने की रणनीति भी अपनाई। अगले दिन ईरान के उप विदेश मंत्री को पूरा एक सत्र दिया गया। ईरान के मंत्री के सत्र में उमड़ी भीड़ और उनके वक्तव्यों पर बजने वाली ताली की गूंज बहुत दूर तक सुनाई दी। मजेदार बात यह रही कि ताली बजाने वालों में पश्चिम एशिया विवाद में अमेरिका के साथ खड़े देशों के कुछ राजनयिक भी शामिल थे।

पोस्ट

युद्ध की कीमत निर्दोष लोग चुकाते हैं। कुछ नेताओं की सनक और लालच में सदियों से बेकसूर जनता ही मरती आ रही है। ऋचा अनिरुद्ध@richaanirudh

कुछ दिन पहले तक नीतीश कुमार के स्वास्थ्य को लेकर तीखी टिप्पणी करने वाले और उनके मुख्यमंत्री पद पर बने रहने के औचित्य पर प्रश्न उठाने वाले लोग अब पूछ रहे हैं कि वे मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़कर राज्यसभा में क्यों जा रहे हैं? अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

नीतीश कुमार के बिहार की राजनीति से बाहर निकलने पर क्या असर होगा, यह अभी तुरंत समझना मुश्किल है। वैसे भी बिहार में विपक्ष अभी मृतप्राय है। भाजपा ने सत्ता परिवर्तन के लिए सही समय चुना है।

कुमार अंशुमन@anshumanscribe

होली पर एक बच्ची द्वारा फेंका गया पानी गलती से एक मुस्लिम महिला पर गिर गया। हिंदू परिवार ने माफी भी मांगी, पर कट्टरपंथियों ने पीट-पीटकर हिंदू युवक की जान ले ली और दिल्ली पुलिस कह रही कि यह अड़ोसी-पड़ोसी का घरेलू मामला था!

अंकित रावल@ankitrawal5454

जनपथ

दुनिया देखे तेल को और तेल की धार,
जिसकी खातिर दिख रहा मचता हाहाकार।
मचता हाहाकार करो मत अब कंजूसी,
बेखटके सब तेल खरीदो मिलकर रूसी।
मिली ट्रंप से 'छूट' पुतिन अब बड़के बनिया,
बिन 'टैरिफ' के तेल खरीदे उनसे दुनिया!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित
संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 232

पश्चिम एशिया में महासंग्राम

19 किलो के कमर्शियल सिलिंडर की कीमत दिल्ली में 114.5 रुपये बढ़कर 1,883 रुपये हो गई है।

35 उड़ानें आइजीआइ एयरपोर्ट से रद हुई हैं, जिनमें 20 प्रस्थान और 15 आगमन की उड़ानें शामिल हैं।

दैनिक जागरण 10
नई दिल्ली, 8 मार्च, 2026
www.jagran.com

ईरान को अमेरिकी युद्धपोतों की रूस दे रहा खुफिया जानकारी

वाशिंगटन, एपी : अमेरिकी खुफिया जानकारी से परिचित दो अधिकारियों के अनुसार, रूस ने ईरान को ऐसी जानकारी दी है, जिससे तेहरान को क्षेत्र में अमेरिकी युद्धपोतों, विमानों व अन्य संपत्तियों पर हमला करने में मदद मिल सकती है। कहा कि यह पता नहीं चला है कि रूस ईरान को इस जानकारी के इस्तेमाल के बारे में निर्देश दे रहा है या नहीं। हालांकि, व्हाइट हाउस ने इन खबरों को खारिज कर दिया है कि रूस ईरान के साथ जानकारी साझा कर रहा है।

व्हाइट हाउस की प्रेस मंत्री कैरोलिन लेविट ने कहा कि ईरान में चल रहे सैन्य अभियानों पर इसका कोई असर नहीं पड़ रहा है, क्योंकि हम उन्हें पूरी तरह से ध्वस्त कर रहे हैं।'' रक्षा सचिव पीट हेगसेथ ने कहा कि अमेरिका हर चीज पर नजर रख रहा है और उसे अपनी युद्ध योजनाओं में शामिल कर रहा है। उन्होंने कहा, ''अमेरिकी जनता निश्चिंत रह सकती है कि उनके कमांडर इन चीफ को अच्छी तरह पता है कि कौन किससे बात कर रहा है। और जो कुछ भी नहीं होना चाहिए, चाहे वह सार्वजनिक रूप से हो या गुप्त रूप से, उसका कड़ा विरोध किया जा रहा है।'' लेविट ने यह बताने से इन्कार किया कि क्या ट्रंप ने कथित खुफिया जानकारी साझा करने के बारे में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से बात की थी। उन्होंने कहा कि वह इस बारे में राष्ट्रपति को खुद बोलने देंगी।

रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ● एएफपी/फाइल

- अमेरिकी खुफिया जानकारी से परिचित दो अधिकारियों ने किया दावा
- क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने इस पर टिप्पणी से किया इन्कार

वहीं, जब क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव से पूछा गया कि क्या रूस राजनीतिक समर्थन से आगे बढ़कर ईरान को सैन्य सहायता प्रदान करेगा, तो उन्होंने कहा कि तेहरान की ओर से ऐसा कोई अनुरोध नहीं आया है। उनसे जब पूछा गया कि क्या मास्को ने ईरान युद्ध की शुरुआत के बाद से तेहरान को कोई सैन्य या खुफिया सहायता प्रदान की है, तो उन्होंने टिप्पणी करने से परहेज किया।

अमेरिका वाह रहा यूक्रेन की मदद: जेलेंस्की: यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा है कि अमेरिका और पश्चिम एशिया में उसके सहयोगी ईरान के शाहेद ड्रोन का मुकाबला करने में यूक्रेन की विशेषज्ञता चाहते हैं। तेहरान यूक्रेन युद्ध के लिए रूस को शाहेद ड्रोन की आपूर्ति कर रहा है और अब खाड़ी क्षेत्र में जवाबी हमलों में इनका इस्तेमाल कर रहा है। जेलेंस्की ने कहा कि उन्होंने संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन, जार्डन और कुवैत से संभावित सहयोग के बारे में बात की है। अमेरिका में यूक्रेन की राजदूत ओल्गा स्टेफनिशिना ने कहा, ''यूक्रेन शाहेद ड्रोन हमलों से बचाव करना जानता है क्योंकि हमारे शहरों को लगभग हर रात इनका सामना करना पड़ता है। जब हमारे सहयोगियों को जरूरत होती है, तो हम मदद के लिए तैयार रहते हैं।

मिसाइल व ड्रोन हमलों के बीच सुरक्षित विमान यात्रा बनी चुनौती

लंदन, रायटर: पश्चिम एशिया में घमासान के साथ-साथ दुनियाभर में चल रहे सैन्य संघर्षों ने सुरक्षित विमान यात्रा को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। मिसाइल और ड्रोन हमलों के बीच विमान पायलटों को भयानक तनाव के दौर से भी गुजरना पड़ रहा है। बीते ढाई वर्षों में सैन्य संघर्षों में आई तेजी के चलते विमान यात्रा न केवल महंगी हुई है, बल्कि यात्राओं में लगने वाला समय भी बढ़ गया है। पश्चिम एशिया में जगह-जगह फंसे लोगों के लिए अपने देश वापस लौटना भी चुनौतीपूर्ण हो गया। वहीं, मिसाइलों और ड्रोन से हवाई अड्डों पर हमले ने जमीन से लेकर आसमान तक संकट खड़े कर दिए हैं।

विमान पायलटों और सुरक्षा अधिकारियों का कहना है कि यूक्रेन से अफगानिस्तान और इजरायल तक भीषण सैन्य संघर्षों ने पायलटों पर बोझ बढ़ा दिया है। उनके लिए एयर स्पेस बेहद सिकुड़ गया है। पायलटों का कहना है कि वे सेना के पायलट नहीं है। उन्हें हवा में मौजूद खतरों से निपटने का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। मौजूदा संकट की वजह से विमानन क्षेत्र में सुरक्षा का खतरा बढ़ता जा रहा है। इससे पायलटों में डर और चिंता गहराने लगी है। इसे देखते हुए एयरलाइंस कंपनियों ने मदद के लिए पीयर प्रोग्राम भी शुरू किए हैं, लेकिन इससे आंशिक मदद ही मिल रही है।

ड्रोन और मिसाइलों से पायलट परेशान हैं●

- दुनियाभर में चल रहे संघर्षों के बीच तनावपूर्ण स्थिति से गुजर रहे विमान पायलट
- जीपीएस स्पूफिंग और नागरिक ड्रोन उड़ानों से भी विमानों पर खतरा बढ़ा

जीपीएस स्पूफिंग से भी बढ़ा खतरा: विमानन क्षेत्र को जीपीएस स्पूफिंग जैसे खतरों से भी निपटना पड़ रहा है, जिसमें विमानों को उनकी पोजीशन के बारे में दुर्भावनापूर्ण रूप से गुमराह करने का प्रयास किया जाता है। मिसाइल और ड्रोन के हमलों से बचने के लिए विमानों को ज्यादा ऊंचाई पर उड़ाया जा रहा है। मिसाइलों के हमले से बचने के लिए विमानों को 15000 फीट से ऊपर उड़ाया जा रहा है। इस मामले में पश्चिम एशिया के पायलट थोड़ा बहुत जोखिम भी उठा रहे हैं। लेबनान क्षेत्र के पायलटों का कहना है कि ये गारंटी नहीं दे सकता कि हवाई अड्डों पर हमला नहीं होगा।

विमानों के लिए नई चुनौती बन रहे ड्रोन : विमानों को ड्रोन से भी खतरे बढ़ने लगे हैं। आकार में छोटे होने की वजह से ये जल्दी पहचान में नहीं आते और विमानों से टकराने का खतरा बना रहता है। विमानों में ट्रांसपोंडर के जरिये सिग्नल जारी होते रहते हैं, जिससे दूसरे विमानों को एक दूसरे की दूरी और पोजीशन का पता चलता रहता है, लेकिन ड्रोन के मामले में ऐसा नहीं होता। यात्री विमानों के लिए इस्तेमाल होने वाले नियमित राडार पर ड्रोन नजर नहीं आते। अमेरिका में काउंटरड्रोन तकनीक बनाने वाली कंपनी डीड्रोन के मुताबिक अमेरिका में 2025 में 12 लाख ड्रोन उल्लंघन के मामले दर्ज किए गए हैं।

एक नजर में

पश्चिम एशिया में सीबीएसई 12वीं की परीक्षाएं स्थगित

नई दिल्ली: केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने पश्चिम एशिया के कई देशों में कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षाएं स्थगित कर दी हैं। बोर्ड परीक्षा नियंत्रक संयम भारद्वाज ने बताया कि मौजूदा हालात की समीक्षा के बाद नौ मार्च, 10 व 11 मार्च को होने वाली परीक्षाएं फिलहाल टाल दी गई हैं। सीबीएसई के अनुसार, यह फैसला बहरीन, ईरान, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और यूएई में परीक्षा दे रहे विद्यार्थियों के लिए लिया गया है। (जासं)

ईरानी नौसैनिकों के शव वापस भेजेगा श्रीलंका

कोलंबो : श्रीलंका उन ईरानी नौसैनिकों के शव वापस भेजेगा जो उसके दक्षिणी बंदरगाह शहर गाले के पास 'आइरिस डेना' पर मारे गए थे। यह पहला ईरानी जहाज था जिस पर अमेरिका ने तारपीडो से हमला किया था। श्रीलंका ने बुधवार को कहा था कि उसने ईरानी नौसैनिकों के 84 शव बरामद किए हैं। (प्रेट्र)

पाकिस्तान में 55 रुपये महंगा हुआ पेट्रोल

इस्लामाबाद : अमेरिका-ईरान के युद्ध का असर दुनिया पर दिखने लगा है। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के बीच पाकिस्तान में पेट्रो कीमतें आसामान छूने लगी हैं। रातोंरात पेट्रोल व हाई-स्पीड डीजल की कीमतों में 55 पाकिस्तानी रुपये प्रति लीटर की भारी वृद्धि कर दी है, जो अब तक की सबसे बड़ी वृद्धि है। अब पेट्रोल की कीमत बढ़कर 321.17 पाकिस्तानी रुपये प्रति लीटर हो गई है। (प्रेट्र)

यूएन से ईरानी दूत ने अमेरिका-इजरायल के सैन्य अभियान को रोकने की मांग उठाई, ईरानी युद्धपोत पर कहा-

'आइरिस डेना' को डुबाना अमेरिका का युद्ध अपराध

न्यूयार्क, एएनआइ: हिंद महासागर में पिछले दिनों ईरान के निहत्थे युद्धपोत 'आइरिस डेना' को अमेरिकी पनडुब्बी द्वारा टारपीडो मारकर डुबोने की गूंज संयुक्त राष्ट्र तक पहुंच गई है। संयुक्त राष्ट्र में ईरान के राजदूत अमीर सईद इरावनी ने कहा कि युद्धपोत को डुबोकर अमेरिका ने अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन किया है। अमेरिका एक युद्ध अपराधी है। वहीं, ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने अमेरिका पर तीखा हमला बोलते हुए बच्चों और निर्दोष लोगों को निशाना बनाकर किए गए अमेरिकी हमलों की निंदा की।

संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत में अमीर सईद इरावनी ने कहा कि अमेरिकी नौसेना ने ईरान के तट से करीब दो हजार मील दूर अंतरराष्ट्रीय समुद्री क्षेत्र में ईरानी युद्धपोत आइरिस डेना पर हमला किया। यह जहाज भारतीय नौसेना के निमंत्रण पर सद्भावना यात्रा पर था और उस पर लगभग 130 ईरानी नाविक सवार थे। हमले में करीब 100 नाविक मारे गए। उन्होंने कहा कि यह हमला न केवल अंतरराष्ट्रीय कानून का गंभीर उल्लंघन है, बल्कि समुद्री आवागमन की स्वतंत्रता के मूल सिद्धांत पर भी चोट है।

इरावनी ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और महासचिव से तत्काल हस्तक्षेप करने की मांग की। उन्होंने कहा कि अमेरिका और इजरायल ईरान के खिलाफ संयुक्त सैन्य अभियान चला रहे हैं, जिसमें आम नागरिकों और नागरिक ढांचे को निशाना बनाया जा रहा है। सुरक्षा परिषद को इन हमलों की निंदा करनी चाहिए और आक्रामक देशों को तुरंत सैन्य कार्रवाई रोकने के लिए बाध्य करना चाहिए।

उधर, ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने इंटरनेट मीडिया मंच एक्स पर अमेरिका की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि अमेरिकी आक्रामकता ने पूरे क्षेत्र को युद्ध की आग में झोंक दिया है।

संयुक्त राष्ट्र में ईरान के राजदूत अमीर सईद इरावनी● (फाइल फोटो, रायटर)

अमेरिकी अफसरों ने कहा, नुकसान की जांच की जा रही

अमेरिकी रक्षा विभाग ने अभी तक इस हमले की जिम्मेदारी स्पष्ट रूप से स्वीकार नहीं की है। हालांकि अमेरिकी सैन्य अधिकारियों ने कहा है कि नागरिकों को हुए नुकसान की खबरों की जांच की जा रही है। इस बीच क्षेत्र में अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है।

'लावान' को पनाह देने पर ईरान ने भारत का जताया आभार

नई दिल्ली, एएनआइ : अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच तेजी से व्यापक होते संघर्ष के मद्देनजर हिंद महासागर में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के बीच, ईरान ने अपने नौसैनिक युद्धपोत आइआरआइएस लावान को कोच्चि बंदरगाह पर सुरक्षित पनाह एवं तकनीकी सहायता देने और रसद संबंधी व्यवस्था करने के लिए भारत सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया है। यह घटनाक्रम तब सामने आया है जब ईरान का एक अन्य युद्धपोत आइआरआइएस डेना, श्रीलंका के तट के पास हाल ही में एक अमेरिकी पनडुब्बी के टारपीडो हमले में डूब गया। भारत में ईरान के राजदूत मोहम्मद फथली ने विशेष रूप से कोच्चि में ईरानी युद्धपोत के डाकिंग के लिए स्थानीय अधिकारियों और भारत सरकार के "मानवीय दृष्टिकोण" की सराहना की। उन्होंने कहा, "आइआरआइएस लावान तकनीकी और लाजिस्टिक व्यवस्था के लिए कोच्चि में है। हम चालक दल की सहायता के लिए भारत के आभारी हैं। भारतीय अधिकारियों का उत्कृष्ट समन्वय हमारे देशों के बीच दीर्घकालिक और मैत्रीपूर्ण संबंधों को दर्शाता है।

ईरानी युद्धपोत पर भारत-श्रीलंका ने दिया अंतरराष्ट्रीय संधि का हवाला

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: अमेरिका लंबे समय से जिस 'यूनाइटेड नेशंस कंवेशन आन द ला आफ द सी' (यूएनक्लोस) का हवाला देकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की समुद्री गतिविधियों पर सवाल उठाता रहा है, अब उसी अंतरराष्ट्रीय कानून के आधार पर हिंद महासागर में ईरानी नौसेना के युद्धपोत आइरिस डेना को निशाना बनाए जाने की घटना पर सवाल उठ रहे हैं।

नई दिल्ली में आयोजित रायसीना डायलाग के मंच से भारत और श्रीलंका ने समुद्री मामलों में अंतरराष्ट्रीय कानूनों के पालन पर जोर देते हुए संकेत दिया कि हालिया घटनाओं का आकलन भी उसी कानूनी ढांचे के भीतर किया जाना चाहिए। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने साफ कहा, 'भारत यूएनक्लोस और अन्य अंतरराष्ट्रीय कानूनों का समर्थन करता है और किसी को इस बारे में किसी तरह का संदेह नहीं करना चाहिए। इसी मंच से श्रीलंका के विदेश मंत्री विजिथा हेराथ ने कहा, 'आइरिस डेना को लेकर उनके देश ने जो भी किया है, वह पूरी तरह से समुद्री मामले में यूएनक्लोस के प्रविधानों के तहत किया है और वही कदम उठाए जा रहे हैं जो अंतरराष्ट्रीय कानूनों के अनुरूप हैं।' हकीकत में श्रीलंका के विदेश मंत्री हेराथ ने आइरिस डेना से जुड़े हर सवाल का जवाब ही यूएनक्लोज का जिक्र करते हुए दिया। जब उनसे पूछा गया कि क्या उक्त जहाज से जिन नौ सैनिकों को बचाया गया है, उसे उनका देश ईरान को वापस लौटा देगा, तो उनका जवाब था, 'हम यूएनक्लोस के तहत कदम उठाएंगे।'

युद्ध के दौर में हैं, मजबूत होकर उभरेंगे: यूएई

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: सऊदी अरब ने विशालकाय शायबाह तेल क्षेत्र पर ईरानी ड्रोन हमले को विफल करने का दावा किया है। यूएई ने कहा कि ईरान के 125 ड्रोन और छह बैलिस्टिक मिसाइलों को हवा में ही मार गिराया गया है। यूएई के राष्ट्रपति मोहम्मद बिन जायेद अल नाहयान ने पहली बार देश के नाम संबोधन में कहा कि हम युद्ध के दौर में हैं, इसके बाद मजबूत होकर उभरेंगे। न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार, ब्रिटेन ने तनाव बढ़ता देख विमानवाहक पोत एचएमएस प्रिंस आफ वेल्स को तैयार रहने का आदेश दिया है। तुर्किये भी एफ-16 विमानों को साइप्रस भेजने पर विचार कर रहा है।

सरकारी कंपनियों को एलपीजी उत्पादन बढ़ाने के दिए निर्देश

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: केंद्र ने शुक्रवार को आपात शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए देश की तेल रिफाइनरियों को एलपीजी उत्पादन बढ़ाने का निर्देश दिया है, ताकि संभावित वैश्विक आपूर्ति व्यवधान की स्थिति में घरेलू बाजार में पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। साथ ही एलपीजी वितरकों का कहना है कि उन्हें मौखिक तौर पर गैस सिलिंडरों की आपूर्ति और वितरण पर करीबी नजर रखने को कहा गया है। अधिकारियों ने एहतियात के तौर पर सिलेंडरों की संभावित ब्लैकमार्केटिंग रोकने के लिए सतर्कता बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। वितरकों के मुताबिक, घरेलू एलपीजी सिलिंडर की बुकिंग का अंतराल बढ़ाकर 21 दिन करने को कहा गया है, जबकि अभी तक यह 15 दिन था। इसके अलावा कमर्शियल सिलिंडरों की आपूर्ति और वितरण पर भी कड़ाई बरतने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि बढ़ती कीमतों और संभावित आपूर्ति बाधा के बीच किसी तरह की कालाबाजारी या जमाखोरी न हो।

सरकारी क्षेत्र की तेल मार्केटिंग कंपनियों (ओएमसी) के अधिकारियों का कहना है कि एलपीजी सिलेंडरों की कीमतों में बढ़ोतरी पश्चिम एशिया में अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर हमले के बाद पैदा हुए सैन्य टकराव के कारण वैश्विक ऊर्जा कीमतों में आई तेज बढ़ोतरी के चलते की गई है। इस संघर्ष के कारण ईरान और ओमान के बीच स्थित स्ट्रेट आफ होर्मुज से तेल और गैस ले जाने वाले टैंकरों की आवाजाही लगभग ठप हो गई है।

आपूर्ति और वितरण पर करीबी नजर रखने को कहा गया, बुकिंग का अंतराल बढ़ाकर 21 दिन करने के निर्देश दिए गए

अमेरिकी कच्चा तेल पिछले एक हफ्ते में 35 प्रतिशत से अधिक बढ़कर करीब 90.90 डालर प्रति बैरल पर पहुंच गया है, जबकि ब्रेंट क्रूड लगभग 28% उछलकर 92.69 डालर प्रति बैरल के आसपास बंद हुआ। एशियाई बाजार में एलएनजी की स्पाट कीमत भी दोगुनी से भी ज्यादा बढ़कर करीब 25.40 डालर प्रति एमएमबीटीयू (गैस मापने का मापक) हो गई है, जो तीन साल का उच्चतम स्तर है।

रिपोर्टों के मुताबिक, होर्मुज मार्ग के अवरुद्ध होने से तकरीबन 3,000 कार्गो जहाज, टैंकर वगैरह बिभिन्न बंदरगाहों पर फंसे हुए हैं, जिसमें 3,00 तेल व गैस के टैंकर हैं। भारत के कुल प्राकृतिक गैस आयात का करीब 40% हिस्सा भी इसी रास्ते से गुजरता है। एलपीजी के मामले में इस जलमार्ग का महत्व और ज्यादा है। भारत ने 2024-25 में लगभग 3.13 करोड़ टन एलपीजी की खपत की, जिसमें से केवल 1.28 करोड़ टन घरेलू उत्पादन था और बाकी आयात करना पड़ा।

ईरान युद्ध के कारण दिल्ली और मुंबई एयरपोर्ट पर 100 उड़ानें रद

नई दिल्ली, प्रेट्र : पश्चिम एशिया में युद्ध के कारण उड़ानों के संचालन पर असर पड़ा है। शनिवार को दिल्ली और मुंबई एयरपोर्ट पर कम से कम 100 अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रद कर दी गईं। अधिकारियों के मुताबिक, मुंबई एयरपोर्ट पर रवाना होने वालीं 35 उड़ानें और आने वाली 36 उड़ानें रद कर दी गईं। वहीं जागरण संवाददाता के अनुसार, दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आइजीआइ) एयरपोर्ट प्रबंधन व एयरलाइंस से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, कुल 35 उड़ानें रद हुई हैं, जिनमें 20 प्रस्थान और 15 आगमन की उड़ानें शामिल हैं।

पश्चिम की ओर जाने वाली उड़ानों में औसतन तीन से चार घंटे की देरी देखी जा रही है। अग्रणी एयरलाइन इंडिगो और एअर इंडिया फंसे हुए यात्रियों को निकालने के लिए सीमित स्तर पर परिचालन कर रही हैं। एयरस्पेस बंद होने के कारण आइजीआइ एयरपोर्ट से यूरोप, ब्रिटेन व अमेरिका जाने वाली उड़ानों को लंबे और वैकल्पिक रास्तों (जैसे जेद्दा या उत्तरी रूट) से भेजा जा रहा है।

हमले के लिए तैयार...

ईरान पर हमला के लिए अमेरिका ने शनिवार को ब्रिटेन के मिलिट्री एयरबेस पर अपना बी-1 बाम्बर विमान उतारा● एएफपी

खाड़ी में फंसे यात्रियों के लिए क्रूज कंपनी ने शुरू किया राहत अभियान

दुबई, न्यूयार्क टाइम्स : पश्चिम एशिया में बढ़ते युद्ध और होर्मुज जलडमरूमध्य के लगभग बंद हो जाने से खाड़ी क्षेत्र में हजारों अंतरराष्ट्रीय यात्री फंस गए हैं। हालात ऐसे बने कि कम से कम छह बड़े क्रूज जहाजों पर करीब 15 हजार यात्री कई दिनों से खाड़ी देशों में अटके हुए हैं। सरकारी निकासी प्रक्रिया धीमी पड़ने के बीच स्विट्जरलैंड स्थित दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी क्रूज कंपनी एमएससी ने आगे बढ़कर अपने यात्रियों को सुरक्षित घर पहुंचाने की पहल शुरू कर दी है।

कंपनी ने दुबई में फंसे अपने जहाज एमएससी यूरिबिया के यात्रियों को निकालने के लिए सात चार्टर्ड फ्लाइट्स की व्यवस्था की है और कई कमर्शियल विमानों में सीटों के ब्लाक खरीदे हैं। इसके जरिए 1500 से अधिक यात्रियों को दुबई से उनके देशों तक भेजा जा चुका है।

एमएससी के अनुसार अधिकांश यात्री यूरोप भेजे जा रहे हैं। एक चार्टर्ड उड़ान में 280 ब्रिटिश और आयरिश यात्री लंदन पहुंच चुके हैं, जबकि कुछ अमेरिकी यात्री दुबई से डैलस के लिए रवाना हुए। दुबई में सेलेस्टियल डिस्कवरी व अरोया मनारा जहाज खड़े हैं, सेलेस्टियल जर्नी व जर्मनी का टीयूआइ मीन शिफ-5 कतर की राजधानी दोहा में रुके हैं। टीयूआइ मीन अबू धाबी में खड़ा है।

वहीं 6,327 यात्रियों की क्षमता वाला एमएससी यूरिबिया 27 फरवरी को दुबई पहुंचा था। इसके ठीक अगले दिन ईरान ने संयुक्त अरब अमीरात पर हमला बोल दिया। दुबई प्रशासन ने मोबाइल अलर्ट जारी कर लोगों को सुरक्षित स्थानों में रहने की चेतावनी दी।

होर्मुज जलडमरूमध्य के पास बंदर अब्बास बंदरगाह के पास एक जहाज में हुए धमाके के बाद उठते धुएं के गुबार का सैटेलाइट चित्र● एएफपी/फाइल

युद्ध के बाद से अब तक 52 हजार भारतीय स्वदेश लौटे

नई दिल्ली, प्रेट्र : ईरान युद्ध के बाद पश्चिम एशियाई क्षेत्र में हवाई क्षेत्र के आंशिक खुलने के बाद से 52 हजार से अधिक भारतीय स्वदेश लौट चुके हैं। शनिवार रात जारी एक बयान में भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि वह पश्चिम एशिया की स्थिति की निरंतर निगरानी कर रहा है और वहां फंसे अपने नागरिकों को निकालने का प्रयास कर रहा है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि क्षेत्र में भारतीय मिशन विस्तृत सलाहें जारी कर रहे हैं।

इंटरनेट मीडिया पर एआइ से बनाए जा रहे महासंग्राम के भ्रामक वीडियो

दुबई, एपी : अगर इन दिनों आप पश्चिम एशिया के युद्ध से जुड़े विस्फोट, आग और तबाही के वीडियो इंटरनेट मीडिया पर देख रहे हैं तो उन पर तुरंत भरोसा करने से पहले ठहरिए। संभव है कि उनमें से कई दृश्य असली न हों। ईरान पर अमेरिका और इजरायल की बमबारी के बाद शुरू हुए संघर्ष के साथ ही सूचना युद्ध भी तेज हो गया है। इंटरनेट मीडिया पर बड़ी संख्या में ऐसे वीडियो और तस्वीरें प्रसारित की जा रही हैं, जिनमें से कई कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) की मदद से तैयार किए गए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार इनका उद्देश्य युद्ध की वास्तविक तस्वीर को प्रभावित करना और एक पक्ष की सैन्य सफलता को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना है।

अपनी उपलब्धियों को प्रभावशाली प्रस्तुत करने की होड़: हाल ही में इंटरनेट मीडिया पर एक वीडियो तेजी से वायरल हुआ, जिसमें लोगों की भीड़ एक ऊंची इमारत के शीर्ष से उठती आग, धुएं और मलबे को देखती दिखाई देती है। इस वीडियो के साथ दावा किया गया कि बहरीन की एक गगनचुंबी इमारत पर ईरान ने मिसाइल हमला किया है। हालांकि जांच में स्पष्ट हुआ कि यह वीडियो वास्तविक नहीं था, बल्कि एआइ तकनीक से तैयार किया गया था।

वीडियो में कई ऐसे संकेत भी पाए गए जो इसके नकली होने की ओर इशारा करते हैं। जैसे, क्लिप के बाईं ओर खड़ी दो कारें आपस में अस्वाभाविक रूप से जुड़ी हुई दिखाई देती हैं, जबकि नीचे दाईं ओर खड़े एक व्यक्ति की कोहनी बैग के आर-पार जाती हुई नजर आती है, जो सामान्य परिस्थितियों में संभव नहीं है। विशेषज्ञों के अनुसार एआइ से तैयार वीडियो में इस तरह की दृश्यात्मक त्रुटियां देखी जाती हैं।

दुष्प्रचार के जरिये युद्ध की कहानी गढ़ने की कोशिश: पश्चिम एशिया में छिड़े इस संघर्ष के साथ ही इंटरनेट मीडिया पर दुष्प्रचार का सिलसिला भी तेज हो गया है। बड़ी संख्या में ऐसे वीडियो और तस्वीरें प्रसारित की जा रही हैं जिनमें घटनाओं को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है या पूरी तरह गढ़ा गया है। विशेषज्ञों के अनुसार इस तरह के प्रचार का उद्देश्य युद्ध की धारणा को प्रभावित करना है, ताकि यह दिखाया जा सके कि किस पक्ष को बढ़त मिल रही है और वास्तविक नुकसान कितना हुआ है।

रूस समर्थित नेटवर्क भी सक्रिय: रिपोर्ट के अनुसार रूस के ओवरलोड अभियान ने भी इस युद्ध से जुड़े भ्रामक वीडियो प्रसारित किए हैं। यह नेटवर्क खुद को खुफिया एजेंसियों या समाचार संस्थानों जैसा दिखाकर लोगों के बीच डर और असुरक्षा की भावना पैदा करने की कोशिश करता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि हाल के अन्य संघर्षों जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध और इजरायल-हमास संघर्ष में भी भ्रामक वीडियो सामने आए थे, लेकिन ईरान के मामले में एक बड़ी समस्या यह है कि वहां इंटरनेट बंदी व कड़ी सेंसरशिप के कारण आम लोगों की जानकारी दुनिया तक नहीं पहुंच पा रही।

क्लिक की होड़ में बढ़ रहा फर्जी कंटेंट: राज्य समर्थित अभियानों के अलावा कई सामान्य इंटरनेट मीडिया उपयोगकर्ता भी क्लिक और लोकप्रियता पाने के लिए गलत जानकारी फैला रहे हैं। इनमें पुराने युद्धों के वीडियो को नए बताकर साझा करना, वीडियो गेम के दृश्य को असली हमले के रूप में पेश करना और एआइ से बनाए गए वीडियो पोस्ट करना शामिल है। एआइ ने गलत सूचना फैलाने को पहले की तुलना में कहीं आसान बना दिया है। संकट की स्थितियों में सत्य और असत्य के बीच अंतर करना और भी मुश्किल हो गया है।

- इंटरनेट मीडिया पर युद्ध से जुड़ी फैल रही कई तस्वीरें और वीडियो जांच में नकली पाए जा रहे
- राज्य समर्थित अकाउंट व प्रोपेगैंडा नेटवर्क बढ़ा रहे दुष्प्रचार, इंटरनेट बंदी के कारण पहुंच हो रही कठिन

इंटरनेट मीडिया कंपनियों की कार्रवाई

इंटरनेट मीडिया मंच एक्स के उत्पाद प्रमुख निकिता बियर ने कहा है कि यदि कोई उपयोगकर्ता सशस्त्र संघर्ष से जुड़े एआइ-निर्मित कंटेंट को बिना स्पष्ट खुलासे के साझा करता है तो उसे प्लेटफार्म के राजस्व-साझाकरण कार्यक्रम से निलंबित कर दिया जाएगा। पहली गलती पर 90 दिन का निलंबन और दोबारा ऐसा करने पर स्थायी प्रतिबंध लगाया जाएगा। अटलांटिक काउंसिल के डिजिटल फोरेंसिक रिसर्च लैब के रणनीति निदेशक एमर्सन ब्रूकिंग का कहना है कि इंटरनेट मीडिया अब युद्ध का एक नया मोर्चा बन चुका है।

कमजोर पड़ी ईरानी नौसेना, होर्मुज स्ट्रेट में चुनौतियां बरकरार

न्यूयार्क टाइम्स से

वाशिंगटन : सेटेलाइट डाटा और वीडियो के विश्लेषण से पता चला है कि अमेरिकी और इजरायली हमलों के पहले हफ्ते में ही ईरानी नौसेना को भारी नुकसान हुआ है। दो नौसैनिक अड्डों पर ही ईरान ने कम से कम सात युद्धपोत और महत्वपूर्ण नौसैनिक ढांचा गवां दिया है। होर्मुज स्ट्रेट में एक भूमिगत नौसैनिक अड्डे के प्रवेश द्वार भी हमले का शिकार हुआ। ईरान को हुए इस नुकसान के बावजूद अमेरिकी व इजरायली सेनाओं के लिए होर्मुज स्ट्रेट में तेहरान को बेअसर करने की चुनौतियां बनी हुई हैं। अमेरिका व इजरायल के अभी तक के हमलों में ईरान की नियमित नौसेना 'इस्लामिक रिपब्लिक आफ ईरान नेवी' को अधिक निशाना बनाया गया है, जो पारंपरिक युद्धपोतों का संचालन करती है। ईरान के पास दूसरी नौसेना भी है, जिसे रिवोल्यूशनरी गार्ड संचालित करते हैं। रिवोल्यूशनरी गार्ड की नौसेना के बेड़े में इस हफ्ते नष्ट हो चुके पारंपरिक युद्धपोतों के अलावा बड़ी संख्या में स्पीड बोट व बिना चालक दल वाले जहाज जैसे हल्के पोत शामिल हैं। रिवोल्यूशनरी गार्ड की नौसेना के पास होर्मुज स्ट्रेट व फारस की खाड़ी की सुरक्षा की जिम्मेदारी है। होर्मुज स्ट्रेट को फिर से पूरी तरह से आवागमन के लिए खोलने के लिए अमेरिका को दूसरे खतरों के साथ-साथ इस नौसेना को और कमजोर करना होगा।